खण्ड-307, अंक-10
सोमवार, 3 आषाढ़, शक संवत् 1896
(24 जून, 1974 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 307 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1974

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार, 24 जून, 1974

विधान सभा की बैठक, सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में, अध्यक्ष, श्री वासुदेव सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य—357

अंगने लाल, श्री
अजीजूर्रहमान, श्री
अजीत प्रताह सिंह, श्री
अजीत सिंह, श्री
अठई राम, श्री
अनवार जमील, श्री उर्फ जिमी मियां (एडवोकेट)
अनिरुद्ध राय, श्री
अबुल फैज शाह, श्री
अब्दुल बाकी, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल रहमान खां नश्तर, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
अवधश कुमार, श्री
अवेद्य नाथ, श्री
आगा जैदी, श्री
आबिद अली, श्री
आशा राम यादव, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
इन्द्रमोहनी, श्रीमती
ईश्वरी सिंह, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ऊदल, श्री
ऊदल सिंह, श्री
ए० सी० प्राइस, श्री
ओम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री (जिला जौनपुर)
ओम प्रकाश, श्री (जिला मिर्जापुर)
ओम प्रकाश, श्री (जिला शाहजहांपुर)
कन्हैया लाल सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काजी जलील अब्बासी, श्री
का० मु० मुहीउद्दीन, श्री
कालो चरन, श्री
काशीनाथ मेहरोत्रा, श्री
काशी नाथ मिश्र, श्री
काशी प्रसाद, श्री
किशन लाल, श्री
केवर बहादुर मिश्र, श्री
कुलतार सिंह, सरदार
कृपा शंकर, श्री
कृष्ण दत्त, श्री (उर्फ बलराज)
कृष्णबीर सिंह, श्री
केदार नाथ अग्रवाल, श्री
केशरी लाल, श्री
कैलाश पति, श्रीमती
कैलाश सिंह, श्री
क्रांति कुमार, श्री
खचेड़ू सिंह मोहरिया, श्री
खूब चन्द, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा देवी विशारद, श्रीमती
गंगा स्वरूप, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गया सिंह, श्री

गायत्री देवी, श्रीमती
गिरिजा किशोर मिश्र, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गुलाब मेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोपी नाथ कामेश्वर पुरी, श्री
गोरे लाल शाक्य, श्री
गोविन्द प्रसाद गौरोला, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री (जिला अल्मोड़ा)
गौरी शंकर, श्री (एडवोकेट)
चन्दन सिंह, कामरेड
चन्द्र नारायण सिंह, श्री
चन्द्र भान आजाद, श्री
चन्द्र शेखर, श्री
चन्द्र शखर सिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरण सिंह, चौधरी
चरण सिंह, डाक्टर
छज्जू सिंह, श्री
छेदी लाल चौधरी, श्री
जंग बहादुर, श्री (अतरौलिया जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर, श्री (मेहनगर, जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर, श्री (जिला बाराबंकी)
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदीश, श्री
जगदीश अवस्थी, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
जटाधर बाजपेयी, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जफर आजमी, श्री
जमुना प्रसाद बोस, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराज गौतम, श्री
जागेश्वर, श्री
श्याम लाल अहिरवार, श्री
जिलमिट, श्री
तीरथ राम कौहली, श्री
तेज बहादुर, श्री
तेज सिंह, श्री
त्रिवेणी सहाय, श्री
त्रिवेनी, श्री
दयाचन्द सिंह, श्री
दया राम भास्कर श्री
दलसिंह यादव, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दीना नाथ सेवक, श्री
दीपनारायण वन महन्थ, श्री
दुर्योधन, श्री
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
धरम राम, श्री
धर्म चन्द्र मिश्र, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री (जिला अलीगढ़)
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धर्म सिंह, श्री
धीरेन्द्र सहाय, श्री
ध्रुव नारायण सिंह, श्री
नजीर अहमद, श्री
नजू राम, श्री
नत्थू सिंह, श्री
नन्द राम, श्री
नन्हू लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथू राम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण दास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नियाज हसन खां, श्री
पुरुषोत्तम, श्री (जिला मिर्जापुर)
पुरुषोत्तम लाल, श्री (उर्फ राजा जी)
पूरन चन्द, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारे लाल, श्री (जिला अलीगढ़)
प्यारे लाल, श्री (जिला एटा)
प्यारे लाल, श्री (जिला मेरठ)
प्रकाश नारायण गुप्ता, डाक्टर
प्रताप नारायण, श्री
प्रभाकर नाथ द्विवदी, श्री
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभु नारायण, श्री
प्रभु दयाल, श्री
प्रियदर्शी जटला, श्री
प्रेम दत्त, श्री
फजलूररहमान, श्री
फरजन्द अली, श्री
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री
बच्चा पाठक, श्री

वनवारी राम यादव, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बलवीर सिंह श्री
बलवान सिंह श्री
बल्देव, ,श्री
बांके लाल, श्री
बादाम सिंह, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू सिंह, श्री
बालकृष्ण सनवाल श्री
बृजपाल सिंह, श्री
बेचन राम, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ यादव, श्री
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण , श्री
भगवती प्रसाद, श्री
भगवती सिंह विशारद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद शुक्ल, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भीखा लाल, श्री
भीषम, श्री
भृगुनाथ, श्री
भूपसिंह केन, श्री
भोला दत्त सकलानी, श्री
मंगरे सिंह, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मनीराम, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फशम्भू खां)
मन्ना लाल, श्री
मलखान सिंह, श्री (जिला जालौन)
मलखान सिंह सैनी, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
मलिक मोहम्मद जमाँ अहमद खां, श्री
महावीर प्रसाद, श्री
महाबीर सिंह, श्री
महेन्द्र सिंह, श्री
महेश सिंह, श्री
माखनें लाल मिश्र, श्री
माता प्रसाद, श्री
माधव प्रसाद त्रिपाठी, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मानबहादुर सिंह, श्री
मुंशी लाल, श्री
मुन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मुमताज मोहम्मद खां, श्री
मुलतान सिंह, श्री
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री
मुहम्मद मसूद, श्री
मुहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री
मुहम्मद हयात, श्री
मूल चन्द, श्री
मेघनाथ सिंह, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
मोहन सिंह, श्री
मोहम्मद असलम, श्री
मोहसिना किदवाई, श्रीमती
यशपाल सिंह, श्री
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ लल्लन जी)
रघुनाथ, श्री
रघुनाथ सिंह, श्री
रघुवीर, श्री
रघवीर सिंह, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला गोंडा)
रघुराज सिंह, श्री (जिला देवरिया)
रणजीत सिंह, जूदेव, श्री
रणधीर सिंह, श्री
रफीउल्ला, श्री
रमा, कुमारी,
रमाकान्त द्विवेदी, श्री
रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री
राघवेंद्र सिंह, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राजपाल, श्री
राजबहादुर चन्द्र, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राज मंगल पांडेय, श्री
राजेन्द्र कुमार गर्ग, श्री
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राजेन्द्र शाह, श्री
राजेन्द्र सिंह, श्री

राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राधा चरण ,श्री
राम अधार, श्री
राम औतार सिंह भदौरिया, श्री
रामगरीब, कैप्टेन
रामचन्द्र बख्श सिंह, श्री
राम चरन शाह, श्री
राम जनम राय, श्री
रामजी, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
रामजीलाल सेन, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव, श्री
रामदेव यादव, श्री
राम नाथ, बाबा
राम नारायण पाठक, श्री
राम निहोर, श्री
राम पति, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
राम पाल सिंह, श्री
रामपाल सिंह यादव, चौधरी
राम पूजन पटेल, श्री
राम प्रकाश यादव, श्री
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री
राम बचन, श्री
राममूर्ति ,श्री
रामरती, श्रीमती एडवोकेट (जिला वाराणसी)
रामरती देवी,श्रीमती (जिला फैजाबाद)
राम रेखा यादव, श्री,
राम लखन, श्री (जिला इटावा)
राम लखन, श्री (जिला बस्ती)
राम शिरोमणि दुबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
राम समुझ तिवारी, श्री
राम सुन्दर पांडेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
राम सेवक यादव, श्री
राम स्वरूप भारतीय, श्री
राम हर्ष चौधरी, श्री
रामायण राय, श्री
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री
रुद्र प्रसाद, श्री
रूप राम, श्री
रेवती शरण मौर्य, श्री

लक्ष्मण सिंह, श्री
लक्ष्मी नारायन, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लटूरी सिंह, श्री
लालन शर्मा, श्री
लालू राम, श्री
लोकपति, श्री
विजय कुमार, श्री
विजयपाल सिंह, श्री
विद्याधर, श्री
विश्राम, श्री
वीर बहादुर सिंह, श्री
वीर सिंह सेंगर, श्री
वीरेन्द्र कुमार, चौधरी
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शत ुघ्न प्रकाश, श्री
शफीउलरहमान बर्क, श्री
शान्ति प्रपन्न शर्मा, श्री
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिव कुमार पाण्डेय, श्री
शिव कुमारी दुबे, श्रीमती
शिव कैलाश, श्री
शिवचरन लाल, श्री
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर
शिव प्रसाद, श्री (जिला आजमगढ़)
शिव लाल, श्री
शिव सम्पति, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्याम किशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम मिश्रा, श्री
श्याम लाल रावत, श्री
श्यामा देवी, श्रीमती
श्रीनारायण प्रसाद, श्री (उर्फ भुलईनाई)
श्रीपाल सिंह, कुंवरी
श्रीश चन्द्र, श्री
सच्चिदानन्द, श्री
सत्तार अहमद, श्री
सत्यपाल मलिक, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश मालवीय, श्री
सत्यवीर, सिंह श्री

सन्तसिंह युसुफ, श्री
सन्तोष कुमारी पाठक, श्रीमती
सरस्वडी टम्टा, श्रीमती
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री
सलाहउद्दीन, श्री (उर्फ नब्बन)
सीताराम निषाद, श्री
सुक्खन सिंह, श्री
सुखदा मिश्रा, श्रीमती
सुतीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल, श्री
सुरेन्द्र प्रताप नारायन, श्री
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री
सुलतान सिंह, श्री
सूबेदार, श्री
सैयद मुर्तजा अली खां, नवाब
सोहन लाल,श्री (जिला बदायूं)
सोहन लाल, श्री (जिला रामपुर)
सोहन लाल घुसिया, श्री
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री
हरी प्रताप सिंह, श्री
हरिकेवल, श्री
हरिराम, श्री
हारीश कुमार गंगवार, श्री
हुकम सिंह, श्री
हुब राज सिंह,
हेमराज, श्री
हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री

नोट—लघु उद्योग मन्त्री श्री इस्तफा हुसैन भी सदन में उपस्थित थे ।

प्रश्नोतर

सोमवार, 24 जून, 1974

अल्पसूचित तारांकित प्रश्न

विधान मण्डल तथा संसद सदस्यों की उपलब्धियों में समानता

**1—मोहम्मद रफी खां (जिला शाहजहांपुर) (अनुपस्थित)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या प्रदेश के विधान मंडल सदस्यों को वर्तमान समय म समस्त और उतनी उपलब्धियां प्राप्त हैं जो कि राज्य सभा और लोक सभा के सदस्यों को दी जा रही ह ? यदि नहीं तो क्या सरकार इस संवैधानिक विभेद दूर करन के संबन्ध में तुरन्त उचित कार्यवाही करेगी ? यदि नहीं तो क्यों ?

वित्त मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

इस संबन्ध में कोई संवैधानिक विभेद नहीं है अतएव प्रश्न नहीं उठता ।

छात्रों को सस्ते दर पर कागज व पुस्तकों के देने की व्यवस्था

**2—श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला सीतापुर) तथा श्री गया प्रसाद मेहरोत्रा (जिला बस्ती)—

क्या शिक्षा मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि कागज के मूल्यों में हो रही बेताहशा बृद्धि को ध्यान में रखकर सरकार छात्रों के लिये सस्ती दर पर पुस्तिकायें तथा पाठ्य पुस्तकों की आपूर्ति की व्यवस्था पर बिचार कर रही है ? यदि हां तो व्यवस्था क्या होगी ?

शिक्षा मंत्री (श्री राम जी लाल सहायक)—

जी हां । छात्रों के लिये सस्ती दर पर अभ्यास पुस्तिकायें तथा पाठ्य पुस्तकों की व्यवस्था की जा रही है ।

[श्री रामजी लाल सहायक]

कागज की व्यवस्था करने के लिये एक "राज्य स्तरीय समिति" के गठन पर बिचार हो रहा है। यह समिति पुस्तक बिक्रेता हेतु मुद्रक अभ्यास पुस्तिकायें तैयार करने वालों आदि को केन्द्रीय औद्योगिक विकास मंत्रालय से आवंटित कागज के वितरण तथा तत्संबन्धी अन्य व्यवस्था करेगी ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

इस वर्ष छात्रों के लिये पाठ्य पुस्तकों तथा पुस्तिकाओं के लिये कितने कागज की आवश्यकता होगी और क्या जून तक सरकार उसकी व्यवस्था कर सकेगी क्योंकि जुलाई के प्रथम सप्ताह में स्कूल खूलने जा रहे हैं ?

श्री रामजीलाल सहायक—

राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकों के मुद्रणार्थ 4 हजार टन अभ्यास पुस्तिकाओं के लिए 20 हजार टन तथा परीक्षा अभ्यास पुस्तिकाओं के लिए दो हजार टन कागज की मांग की गयी है केन्द्रीय सरकार से ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

इस कार्य के लिए कितने कागज की आवश्यकता है और क्या इसकी व्यवस्था 30 जन तक हो जायगी ?

श्री रामजीलाल सहायक—

26 हजार टन कागज की आवश्यकता है और हमें पूरी आशा है कि उस समय तक हम आवश्यकता को पूरा कर लेंगे ।

श्री मोहन लाल कपूर (जिला मेरठ)—

सन् 76 से जो हाई स्कूल तथा इन्टरमीडिएट के कोर्सेज बदले जा रहे हैं और 74 से प्रारम्भ हो जायेंगे क्या उन पाठ्य पुस्तकों की सिलेबस के अनुसार छापने के आदेश दे दिए हैं या पुरानी पाठ्य पुस्तकों के आधार पर ही ये पुस्तकें छपने जा रही है ?

श्री रामजीलाल सहायक—

अभी तो वह मसला स्थगित है ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

जो समिति गठित होने जा रही है यह कब तक गठित हो जायगी और इसके सदस्य कौन-कौन हैं ।

श्री रामजीलाल सहायक—

इसके सदस्य मुद्रक, विक्रेता तथा प्रकाशक होंगे और एक सप्ताह के भीतर यह गठित हो जायगी ।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)—

समिति के सदस्य विक्रेता तथा मुद्रक होंगे तो इसका आधार क्या होगा ?

श्री रामजीलाल सहायक—

आधार तो यही होगा कि उसके सदस्य मुद्रक तथा प्रकाशक हैं ।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)–

जब स्कूल खुलने में थोड़ा समय रह गया है तो इस बीच में किस तरह से यह समिति इन्तजाम करेगी कि सस्ती पुस्तकें बच्चों को मिल जांय ?

श्री रामजीलाल सहायक––

बहुत सी पुस्तकों को तो प्रकाशक छाप चुके हैं और जो कुछ नहीं छपी हैं उनके छापने की व्यवस्था जल्दी से जल्दी करा दी जायगी ।

चौधरी चरण सिंह––

मेरी जानकारी यह थी कि जो सस्ती दर रखी गयी है पुस्तकों के लिए क्या यह समिति उनको उपलब्ध करा सकेगी ?

श्री रामजीलाल सहायक––

जो पुस्तकें छपी हैं वे पुराने रेट के पेपर पर छपी ह, इसलिए उसी रेट पर रहेंगी ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)––

जो समिति गठित करने जा रही है सरकार इसमें छात्रों, कंज्यूमर के प्रतिनिधि तथा अभिभावक भी प्रतिनिधि के रूप में रहेंगे या नहीं ? और जो सुझाव दिया गया है उसमें मनोनीत करने के प्रश्न पर विचार करेंगे या नहीं ?

श्री रामजीलाल सहायक––

ऐसा कोई विचार नहीं है ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी––

मान्यवर, जैसा कि मन्त्री जी ने कहा कि विद्यार्थियों को पुस्तकें सस्ती दर पर उपलब्ध होंगी । तो कृपया यह बताने का कष्ट करें कि वे कौन से आधार पर हैं और यह निर्णय कैसे किया जायगा कि पुस्तकें सस्ती दर पर दी जायं ? इस वक्त की कीमत के आधार पर अथवा कागज मिलने के आधार पर ।

श्री रामजीलाल सहायक––

मान्यवर, मान लीजिय एक पुस्तक 100 पैसे में मिलती है तो 65 पैसे कागज तथा उसकी छपाई पर तथा 35 पैसे रायल्टी व पुस्तक विक्रेता का लाभ तथा प्रकाशन आदि पर व्यय के हिसाब से उसका निर्धारण होता है ।

श्री भीखा लाल (जिला उन्नाव)––

जैसा कि मन्त्री जी ने बताया कि उन्होंने केन्द्र से कागज मांगा है जो नहीं मिला है । उन्होंने यह भी बताया कि इस काम के नियन्त्रण के लिए एक कमेटी भी बनाने का विचार है जिसका गठन अभी तक नहीं हुआ है । मैं उनसे यह जानना चाहता हूं कि आज जून की 24 तारीख हो गई है और स्कूलों के खुलने में केवल 1 सप्ताह का समय ही रह गया है । मन्त्री जी इस शिक्षा सत्र के शुरू होने से पहले किस प्रकार से पुस्तकों की सप्लाई करने की सोच रहे हैं ?

श्री रामजीलाल सहायक––

मान्यवर कागज मिला है और वह प्रकाशकों को दे दिया गया है । 750 टन एक मिला है, 381 टन एक मिला है और 3 हजार टन की स्वीकृत और आई है ।

श्री रामसेवक यादव (जिला बाराबंकी)—

मान्यवर, मन्त्री जी ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि समिति एक सप्ताह के अन्दर गठित हो जायगी तो यह जानना चाहता हूं कि क्या समिति के गठन का विचार यह प्रश्न पूछने के बाद आया या पहले से था ? यदि पहले से था तो उसमें विलम्ब क्यों हुआ जिससे आज नुक्सान हो रहा है ?

श्री रामजी लाल सहायक—

मान्यवर, समिति के गठन का विचार पहले से था। उसम देरी की बात नहीं है। प्रकाशकों और मुद्रकों से नाम मांगे गये थे जिनमें देरी हुई।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, जहां तक मुझे जानकारी है, कक्षा 8 तक की पुस्तकों का प्रकाशन सरकार के माध्यम से होता है और सरकार को कागज मिला भी है । तो क्या कक्षा 8 तक की पुस्तकों का प्रकाशन का कार्य सामाप्त हो गया है ?

श्री राम जी लाल सहायक—

अभी पूरा नहीं हुआ है ।

श्री मोहन लाल कपूर—

अध्यक्ष महोदय, इन्होंने सारे प्रदेश में एक कैओस क्रियेट कर दी है । इन्होंने पहले कहा कि हम नये दाम पर पुस्तकें छाप रहे है और अब कहते है कि पुराने रेट पर छापेंगे । तो मान्यवर स्थिति बहुत खराब हो गयी है । प्रदेश में किताबें नहीं मिल रहीं है और नही य छाप रहे है। जो किताबें छापनी चाहिये थी उन्हें नहीं छाप रहे हैं और जिनको नहीं छापना चाहिये था उन्हें छाप रही है । इससे सारे विद्यार्थियों में असन्तोष व्याप्त है...(व्यवधान)

(उत्तर के लिये मंत्री जी को नहीं बुलाया गया)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, यह विषय बड़ा गम्भीर है अतः आप कृपया नियम 49 पर चर्चा करन की इस पर अनुमति दें ।

श्री अध्यक्ष—

आप लिखकर दे दीजिये ।

तारांकित प्रश्न

*1—2—श्री बाबू लाल वर्मा—

[पुनरावृत्ति के कारण निरस्त] ।

श्री दीदार सिंह, जिला कानपुर को दिये ऋण की वसूलों में बिलम्ब

*3—चौधरी रामपाल सिंह यादव (जिला कानपुर)—

क्या उद्योग मंत्री कृपया बतायेंगे कि कानपुर जिले के झींझक कस्बे के सरदार दीदार सिंह ने उद्योग विभाग से सन् 1958 में कुटीर उद्योग के लिये ऋण लिया था ? यदि हां, तो उक्त ऋण की धनराशि क्या थी और उसको किस्तों में कब से किस प्रकार वसूल किया जाना था और क्या उसके अनुसार उनसे वसूली की गई ? यदि नहीं, तो समय पर बसूली न किये जाने के सम्बन्ध में सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की गई ?

लघु उद्योग मंत्री (श्री इस्तफा हुसैन)--

जी हां ।

उक्त ऋण की धनराशि 4000 रु0 थी । इस ऋण को दिनांक 1-6-59 से 400 रु0 प्रति किश्त की दर से दस छमाही किश्तों में 3 प्रतिशत वार्षिक व्याज सहित वसूल किया जाना था । इसके अनुसार वसूली की कार्यवाही समय से नही की गई थी ।

उपयोगिता एवं वसूली के दो अधीक्षकों की सेवायें समाप्त कर दी गई ।

चौधरी राम पाल सिंह यादव--

क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जिन दो अधीक्षकों की सेवायें समाप्त कर दी गई है उनके नाम क्या है और अन्य किन -किन लोगों के विरुद्ध इस समय कार्यवाही चल रही है ।

श्री इस्तफा हुसैन--

चूंकि वसूली की जिम्मेदारी इन दो अधीक्षकों के ऊपर ही थी, इस वास्ते उनके खिलाफ कार्यवाई की गई, बाकी लोगों के खिलाफ कार्यवाही करने की कोई आवश्यकता नहीं थी । इनके नाम सर्वश्री विजय वीर सिंह व एम0 जेड0 अर्शद हैं ।

उत्तर प्रदेश में नयी चीनी मिलों की स्थापना की योजना

*4--श्री हिम्मत सिंह (जिला बुलन्दशहर) (अनुपस्थित)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उत्तर प्रदेश में 30 नई चीनी मिलें सहकारी क्षेत्र में लगाने की योजना है ? यदि हां, तो वह क्या योजना है और कब से प्रारम्भ होगी ?

श्री नारायण दत्त तिवारी--

राज्य में 25 नई चीनी मिल स्थापित करने के लिये भारत सरकार से लाइसेंस अब तक प्राप्त हो चुके हैं । इनमें से 21 चीनी मिलें सहकारी क्षेत्र में तथा 4 चीनी मिलें उत्तर प्रदेश की चीनी निगम द्वारा स्थापित की जायेंगी । एक चीनी मिल के लिये प्रार्थना पत्र भारत सरकार के विचाराधीन है । इन सब 26 चीनी मिलों को पांचवी पंचवर्षीय योजना काल में स्थापित करने की योजना है । यह योजना प्रारम्भ हो चुकी है ।

(मूल प्रश्नकर्ता श्री हिम्मत सिंह के अनुपस्थित रहने पर ।)

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)--

यह प्रश्न मैंने भी दिया था, पर मेरा नाम नहीं है इसमें ।

श्री अध्यक्ष--

देख लूंगा । होगा तो आपका नाम भी जोड़ दिया जायगा । इसके पहले कहे होते तो मैं ऐलान कर देता ।

श्री त्रिवेणी सहाय--

इस पर फिर मुझे प्रश्न पूछ लेने दें ।

श्री अध्यक्ष--

इस पर नहीं । यह तो व्यक्तिगत प्रश्न था, जाने कैसे आ गया । तो एक पूरक प्रश्न हो गया । अब पूछने की इजाजत नहीं है । सवाल आने के पहले आपने यदि यह संकेत किया होता तो आपका नाम भी जोड़ दिया जाता ।

श्री त्रिवेणी सहाय—

यह बहुत ही इम्पार्टेन्ट है इसमें हम लोगों की बहुत रुचि है। श्रीमन्, मैं प्रश्न संख्या 4 के बारे में कह रहा हूं।

श्री अध्यक्ष—

इस चौथे प्रश्न में एक मात्र श्री हिम्मत सिंह का नाम है। आपका अलग से कोई सवाल होगा।

विकास खण्ड झींझक, जिला कानपुर के बी० डी० ओ० का सीमेंट के जाली परमिट देने के आरोप में स्थानान्तरण

*5—चौधरी राम पाल सिंह यादव—

क्या खाद्य एवं पूर्ति मंत्री कृपया बतायेंगे कि कानपुर जिले के विकास खंड झींझक के बी० डी० ओ० ने सीमेंट के हजारो बोरों के बोगस परमिट बना दिये जिनकी कि अप्रैल, 1974 को परगनाधिकारी, डुरापुर ने उक्त जाली सीमेंट के परमिटों के संबंध में जांच पड़ताल की और बोगस पाया और इसकी लिखित सूचना उन्होंने पुलिस और जिला अधिकारियों को दी है? यदि हां, तो उक्त जाली परमिट बना कर देने वाले विकास खंड, झींझक के बी० डी० ओ० के विरुद्ध अब तक क्या कार्यवाही की गई?

खाद्य तथा रसद मंत्री (डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी)—

परगनाधिकारी, डेरापुर ने 26 मार्च, 1974 के विकास खंड झींझक के सीमेंट स्टाकिस्ट की जांच की है जिसमें 27 परमिट संदिग्ध पाये। दो व्यक्तियों ने जिनके नाम परमिट काटे गये थे यह कहा कि न तो उन्होंने सीमेंट प्राप्ति हेतु कोई आवेदन-पत्र दिया था और न उन्हें सीमेंट मिला है। अतः इसकी प्रारम्भिक लिखित सूचना परगनाधिकारी, डेरापुर द्वारा पुलिस में दर्ज करा दी गई है और मामले की जांच पुलिस द्वारा की जा रही है। बी० डी० ओ० झींझक का स्थानान्तरण कर दिया गया है और उनके विरुद्ध विभागीय कार्यवाही चालू है।

चौधरी रामपाल सिंह यादव—

परगनाधिकारी, डेरापुर द्वारा जो पुलिस में सूचना दर्ज कराई गई है, वह क्या है?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

420 के अन्तर्गत रखा गया है। कलेक्टर, कानपुर से सबेरे बातचीत हुई, पूरी रिपोर्ट नहीं दी है। यह जांच पुलिस के पास है, उन्होंने यह बताया कि वह 420 के अन्तर्गत है, क्योंकि इसमें धोखे से परमिट काटा गया है।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

यह तो जांच परगना अधिकारी कर रहे हैं, क्या इसके संबंध में कोई अन्तरिम रिपोर्ट सरकार के पास भेजी है और जांच कब तक पूरी होगी?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

रिपोर्ट अभी मेरे पास नहीं पहुंची है, लेकिन जिलाधीश ने यह कहा कि उन्होंने ए० डी० एम० (राशनिंग) के द्वारा वह लेकर चले गये है, लेकिन अभी तक आए नहीं। उम्मीद है कि रिपोर्ट आ जाएगी लेकिन उसको अभी तक मैंने देखा नहीं है।

श्री कल्याण सिंह (जिला अलीगढ़)—

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जब बी0 डी0 ओ0 के विरुद्ध गंभीर आरोप हैं और सक्षम अधिकारी ने आरोप लगाये हैं, 420 के, रिपोर्ट दर्ज हो गई है, तो केवल हस्तांतरण करके क्यों संतोष हो गया निलम्बित न किये जाने के क्या कारण हैं ?

श्री अध्यक्ष—

अब कार्यवाही कर रहे हैं विभागीय ।

श्री कल्याण सिंह—

उसमें केवल हस्तान्तरण की बात कही गयी है, इतने गंभीर आरोपों के होते हुए भी, एस0 डी0 एम0 ने आरोप लगाये हैं, रिपोर्ट दर्ज हो गयी है, अभी तक निलम्बित न किये जाने के क्या कारण हैं ? सीधा सा सवाल है ।

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

माननीय अध्यक्ष जी, मैं समझती हूं कि उस अधिकारी को निलम्बित होना चाहिये था, अगर अभी तक नहीं हुए हैं, तो उन्हें निलम्बित कर दिया जायगा ।

मिर्जापुर के सस्ते गल्ले की दुकानों पर चीनी के वितरण की व्यवस्था

*6—श्री सूबेदार (जिला मिर्जापुर) तथा श्री शिव संपत्ति (जिला मिर्जापुर)—

क्या खाद्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि तहसील राबर्टसगंज जिला मिर्जापुर के अन्तर्गत कितनी शहरी एवं देहाती सस्ता गल्ला की दूकानें किन-किन स्थानों में चालू हैं तथा 1 दिसम्बर, 1973 से 15 मार्च, 1974 तक उन्हें सरकार ने कितनी चीनी एवं गल्ला दी ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

वांछित सूचना एक तालिका में दी गई है जिसकी प्रति सदन की मेज तर रख दी गई है ।

(देखिये नत्थी क' आगे पृष्ठ 1134–1135 पर ।)

श्री शिव संपत्ति—

माननीय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जो चीनी देहातों में दी गयी है उसका वितरण ठीक से हो रहा है या नहीं उसकी कोई सूचना या जानकारी है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

चीनी का वितरण देहात में बहुत अच्छी तरह से, संतोषजनक, नहीं होता है । यह प्रदेश के कोने-कोने से सूचना हमारे पास आती है ।

श्री शिव संपत्ति—

क्या माननीय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जोंगेल और कौन में चीनी नहीं बंटी है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

इसकी सूचना नहीं है । माननीय सदस्य सूचना दे रहे हैं ।

श्री शिव संपत्ति —

क्या माननीय मंत्री जी इस बात की जांच करायेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

लिखकर आप जब देंगे तो वह देखेंगे । यह जवाब दिया ।

पश्चिमी बंगाल सरकार को धान के बीज भेजने हेतु व्यापारियों को परमिट दिया जाना

*7—श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

क्या सरकार बताने की कृपा करेंगी कि माह जनवरी, 1974 से अप्रैल, 1974 तक बीज के लिये कितने निजी व्यापारियों को धान प्रदेश से बाहर निर्यात करने हेतु परमिट दिये गये तथा कितने क्विंटल धान इस प्रकार प्रदेश के बाहर गया ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

उक्त अवधि में पश्चिमी बंगाल सरकार के अनुरोध पर उनके द्वारा नामित एक निजी फर्म को ही केवल 700 टन धान बीज पश्चिमी बंगाल निर्यात करने की अनुज्ञा दी गयी। उक्त धान-बीज के पारेषिती (कन्साइनी) पश्चिमी बंगाल सरकार के कृषि निदेशक थे।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, अपने यहां नैशनल सीड्स कारपोरेशन है। जो बाहर बीज भेजा जाता है उससे सीड सर्टीफाई कराना पड़ता है। यह जो बीज बाहर भेजा गया क्या सीड्स कारपोरेशन से इसका सर्टिफिकेट मिल गया था कि यह सीड के लायक है, साधारण धान नहीं है तब अनुमति दी गई थी भेजे जाने की ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

माननीय सदस्य ने जो कहा है वह सही है कि नैशनल सीड्स कारपोरेशन द्वारा सर्टिफाइड सीड जो है बाहर भेजा जाता है। लेकिन उसके अतिरिक्त भी विशेष प्रकार के सीड की अगर आवश्यकता होती है तो उसके लिये सरकार से परमिट भी दिया जाता है और दूसरे प्रकार का सीड, जिसको, नैशनल सीड्स कारपोरेशन के अतिरिक्त, हम ट्रुथफुली लेबेलडसीड कहते हैं, वह भी अभी तक बाहर जाया करता था। इससे कुछ बीच में लोग गड़बड़ी कर दिया करते थे। हमारी नोटिस में जब यह बात आयी, हमने भारत सरकार से कहा कि इस प्रकार ट्रुथफुली लेबेल्ड सीड जो होते हैं उनका बाहर जाना, जिन पर खुली छूट थी, वह समाप्त होनी चाहिये। और वह 20 जून से, भारत सरकार ने हमारे अनुरोध पर इजाजत दे दी। अब उसकी खुली छूट समाप्त कर दी गयी है। इस प्रकार जो इससे खराबी थी या जो गलतियां होती थीं, उसकी रोकथाम अब हम कर सकेंगे, ऐसी हमारी आशा है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मुझे निश्चित सूचना है कि यह बीज नहीं था बल्कि तस्करो के रूप में यह काम पहले से चलता था इस व्यक्ति द्वारा और इसी व्यक्ति द्वारा 7 सौ टन बेचा गया। मैं जानना चाहूंगा कि किस आधार पर इस पार्टिकुलर फर्म को इजाजात दी गई, सात सौ टन बाहर भेजने की और वह पार्टिकुलर फर्म कौन है, और कहां की है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

बंगाल गवर्नमेंट के असिस्टेन्ट सेक्रेटरी श्री पी० सी० कौल ने उत्तर प्रदेश के फूड कमिश्नर को पत्र लिखा था जो इस प्रकार है कि—

"I am enclosing herewith copies of letter No. 296-E dated February 9, 1974 from the Director of Agriculture, West Bengal and No. TSC/4—1-74, dated January 5, 1974 from the Tarai Development Corporation on the above subject.

2. The State Agriculture Department, as you are aware, are very anxious to make the paddy production programme in West Bengal a success. This will, however, depend on the availability of high quality

seeds. The seeds at present in use are of doubtful parity and quality. The farmers are in requirement of seeds for the aus cultivation.

3. Since the Tarai Development Corporation is agreeable to supply paddy seeds to Messrs. 'MONI BHAI', I would request you kindly to permit Messrs. 'MONI to purchase and import into West Bengal 30 M. T. of paddy seeds. (IR–8 Jaya, IR–24 and Ratua–The Firm will bring the seeds into West Bengal after proper processing and treating the same with fungicides. The seeds should be properly packed and truthfully labelled according to the provisions of the Seed Act..... ....

4. A very early reply will be appreciated."

यह उन्होंने भेजा था । इसके बाद हमारे यहां के अधिकारियों ने जांच की और देखा गया कि बेस्ट बंगाल की गवर्नमेंट चाहती है तो उनको परमिट दिया गया । फिर भी हमने कंडीशन लगा दी कि डिलीवरी गवर्नमेंट लेविल पर होगी इसके बाद कम्पनी को दिया जायेगा । वह ज्यादा मांग रहे थे लेकिन हमने इजाजत नहीं दी ?

श्री रामसेवक यादव––

श्रीमन्, मैं यह जानना चाहूंगा कि किस अधिकारी द्वारा और किस बात की जांच कराई गई ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी––

जब यह हमारे सामने आया कि यह जाना चाहिये या नहीं । गवर्नमेंट की तरफ से उनको इजाजत है या नहीं । कोई प्राइवेट तो मांग रहा है । और चूंकि इसमें गल्ती हो सकती थी । लेकिन देखा कि वेस्ट बंगाल गवर्नमेंट की तरफ से रिक्वेस्ट आई है फिर भी हमने रोक लगा दी कि डिलीवरी उनके विभाग को दी जायेगी और तब फार्म को देंगे । गवर्नमेन्ट ने किसी प्राइवेट फर्म से डीलिंग नहीं की ।

श्री रामसेवक यादव––

अध्यक्ष महोदय, उन्होंने साफ कहा है कि मैंने जांच कराई तो किस से कराई और क्या इस बात की कराई कि यह फर्म है या नहीं ?

श्री अध्यक्ष––

इसका उत्तर दे चुकी हूं ?

श्री राम सेवक यादव––

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगी कि जांच किस अधिकारी द्वारा कराई गई ?

श्री अध्यक्ष––

इसका अभी जवाब दे दिया है ।

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी––

माननीय अध्यक्ष जी, यह इसलिये मैं कह रही हूं कि हमने अपने सचिव से यह कहा कि पहले इसकी पूरी तरह से जांच कर लें और समझ लें कि यह मांग गवर्नमेंट की तरफ से आयी है या नहीं । उसमें हमने जिले भी किया जिससे अच्छी तरह से जानकारी हो जाये । मंत्री,

[डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी]

वेस्ट बंगाल एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट की तरफ से भी आश्वासन आया । तब हम पूरी तरह से आश्वासत हो गये । उन्होंने हमें लिखकर भेजा

"Please refer to my telegram No. 485 of 16th January, 1974. As you are aware Government of West Bengal recommended private dealers Messrs. Farmaid Nistarani Seed Stores, M. Saha and Co. and Universal Chemical Industries to purchase and import into West Bengal 500–700 Mts. 100 Mts. 2000 Mts. and 500 Mts. of quality paddy seeds respectively. Kindly permit said dealers to immedately import seeds to West Bengal Otherwise Boro Production Programme will hamper. Matter Most urgent. — Minister Agriculture Government of West Bengal."

तो मेरे कहने का मतलब है कि बारबार वहां से लिखकर आया । वेस्ट बंगाल के चीफ मिनिस्टर ने भी रिक्वेस्ट किया था । हम लोग पहले नहीं दे रहे थे । जब हाई लेबल पर मांग आयी तो इजाजत दे दी ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

मान्यवर क्या माननीय मंत्री महोदया बताने का कष्ट करेंगी कि यह जो 700 टन निर्यात करने की अनुज्ञा दी गयी तो क्या यह हमारे उत्तर प्रदेश की आवश्यकता से अधिक है और यह भी बताने का कष्ट करें कि हमारी आवश्यकता क्या है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

हमारी आवश्यकता से अधिक है । भारत सरकार ने हमसे कहा था कि 3 लाख टन चावल इकट्ठा करने को लेकिन हमने 5 लाख टन इकट्ठा किया । अभी तक 4.33 लाख टन कर सके है 1–2 टन का फर्क हो सकता है । इसके अतिरिक्त हमारे पास सीड है और एडीशनल तरीके से वेस्ट बंगाल को यह भेजा है ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद (जिला बदायूं)---

क्या माननीय मंत्री महोदया बताने का कष्ट करेगी कि जो अधिकारी नियुक्त किये गये उन्होंने सरकार को क्या रिपोर्ट दी ?

श्री अध्यक्ष---

कहां दी ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

मान्यवर, अधिकारी नियुक्त करने का सवाल नहीं उठता है । गवर्नमेंट की तरफ से रिक्वेस्ट आयी थी । हमने उसे पूरी तरह से समझा । गवर्नमेंट के मिनिस्टर की तरफ से भी मांग आयी तब हमने इजाजत दे दी ।

श्री प्रभू नारायण सिंह (जिला वाराणसी)---

क्या माननीय मंत्री जी बतायेगी कि सरकार के सामने जब यह प्रश्न आया था कुछ सामान दूसरे प्रदेशों में एसकैन्डल हो चुका था तो ऐसी स्थिति में क्या उस फर्म की जानकारी सरकार ने की जिस फर्म के माध्यम से वैस्ट बंगाल में इस चीज को भेजने की बात की गयी थी ?

श्री अध्यक्ष---

फर्म को दिया है ?

श्री प्रभू नारायण—

फर्म के माध्यम से भेजा है । वह फर्म कौन है ?

तथा किन लोगो की है ? क्या है पोजीशन ?

डाक्टर राजन्द्र कुमारी बाजपेयी—

फर्म की तरफ से मांगा गया तब हमने कहा कि जब तक वेस्ट बंगाल गवर्नमेंट की तरफ से मांग नहीं आयेगी तब तक नहीं देंगे और जब उनकी रिक्वेस्ट आयी तब हमने दिया और यह लगा दिया कि यह एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट को जायेगा तब उसकी डेलीवरी दी जायेगी ।

श्री भीखा लाल—

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगी कि 20 हजार टन क्वालिटी लेबिल सीड के नाम पर कहां पर बीज कहां पर सर्टिफाई करा कर दूसरे दूसरे स्थानों पर भेजा गया था और यह जो सीड भेजा गया अनियमित तरीके से किन फर्मों के जरिये से भेजा गया था ?

श्री अध्यक्ष—

यह तो दूसरा प्रश्न हो गया ।

चौधरी चरण सिंह—

कौन सी वैरायटी का बीज भेजा गया या कौन सी किस्म का बीज भेजा गया था । धान की यों तो 400 किस्में यू0पी0 में होती है । आम तौर पर सीड एक जगह से दूसरी जगह भेजा नहीं जाता है । गेंहूं भेजा जाता है धान का बीज जो होता है वह आमतौर से हर 20–25 मील पर बदल जाता है, इसकी वैरायटी बदल जाती है । तो कौन सी यह वैरायटी है जो बंगाल भेजा गया था और किससे इसको सर्टिफाई कराया गया था और यह सीड के योग्य था कि नहीं ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

मान्यवर, बंगाल के एग्रीकल्चर मिनिस्टर ने मंगाया था । 3 किस्म के धान के बीज थे । सीड कारपोरेशन आफ इंडिया की तरफ से यह बीज भेजा गया था। ह्रुथफुल लेबिल सीड के नाम पर उसमें लोग गड़बड़ी करते थे । जब हमारी नोटिस में यह बात आई तो हमने उसको बन्द कराया और उसमें रुकावट की बात की गई । अभी तक बाहर बीज भेजने के लिये उत्तर प्रदेश के बाहर कोई रुकावट नहीं थी । जो पैडी, धान से सम्बन्धित जो खाद्यान्न हैं उस पर रुकावट थी लेकिन सीड के ऊपर जोकि या तो वह ह्रुथफुल लेबिल है या कारपोरेशन के द्वारा सर्टिफाई होते है, उन पर कोई रुकावट अभी तक नहीं थी ।

श्री राम सेवक यादव—

मान्यवर, इसमें पहला तो वैरायटी का सवाल है और दूसरा यह सवाल है कि वह बीज जो था बीज लायक था कि नहीं था । इस बीज को किस अधिकारी द्वारा सर्टिफाई किया गया था ।

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

यह ह्रुथफुल लेबिल जो होता है, इसको जो भी व्यक्ति भेजता है, वही उसका जिम्मेंदार होता है । इसमें वहां एक अधिकारी हमारे विभाग के होते है, वह उसको देख लेते हैं । वह अधिकारी उस लेबिल से जान लेते है कि यह आर्डिनरी धान या चावल से अलग है । बाकी जो व्यक्ति भेजता है उसके लिये जिम्मेदार होता है ।

राबर्ट्स गंज जिला मिर्जापुर में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों की चीनी का ब्लैक होना

*8 –श्री सूबेदार (अनुपस्थित)––

क्या खाद्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि राबर्ट्सगंज (मिर्जापुर) के अन्तर्गत पूरे क्षेत्र में जनवरी, 1974 से मार्च, 1974 तक सरकारी सस्ते गल्ले एवं चीनी की दुकानों में ब्लैक तथा अवैध कारनामों के मामले पकड़े गये और उस पर अब तक क्या कार्यवाही की गई ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी––

जी हां ।

एक दुकान निरस्त कर दी गई तथा तीन निलम्बित की गई । इन चारों के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज कराई गई ।

प्रतापगढ़, रायबरेली, सुल्तानपुर जिले को चीनी, मिट्टी का तेल तथा डालडा का आवंटन तथा जिलाधिकारियों द्वारा मांग की मात्रा

*9––कुंवर श्रीपाल सिंह (जिला सुल्तानपुर)––

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि अप्रैल, मई, 1974 के लिये सुल्तानर जिले को प्रतिमास कितनी चीनी, मिट्टी का तेल तथा डालडा दिया गया तथा जिलाधिकारी की मांग कितने की थी?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी––

प्रश्नगत अवधि में जिला सुल्तानपुर को आवंटित एवं जिला अधिकारी द्वारा मांगी गई चीनी, मिट्टी का तेल तथा वनस्पति की सूचना निम्न प्रकार है ।

वस्तु का नाम	जिला अधिकारी की मांग		आवंटन	
	अप्रैल, 1974	मई, 1974	अप्रैल, 74	मई, 74
चीनी	377.3 टन	377.3 टन	299 टन	262 टन
मिट्टी का तेल ..	677 कि0 ली0	677 कि0 ली0	175 कि0 ली0	310 कि0 ली
वनस्पति	83 टन	83 टन	64 टन	64 टन

*10––कुंवर श्रीपाल सिंह––

क्या सरकार यह भी बातयेगी कि उपरोक्त प्रश्न में कहें गये समय में प्रतापगढ़ तथा रायबरेली जिलों में जिलाधिकारी को कितनी मांग थी और कितना दिया गया ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी––

प्रतापगढ़ तथा रायबरेली के सम्बन्ध में सूचना निम्न प्रकार है:––

प्रतापगढ़

वस्तु का नाम	जिला अधिकारी की मांग		आवंटन	
	अप्रैल, 1974	मई, 1974	अप्रैल, 74	मई, 1974
चीनी ..	कोई मासिक मांग नही भेजी गई । केवल मई, 1974 के लिये 150 टन अतिरिक्त कोटा मांगा था ।		259.1	227.2 टन
मिट्टी का तेल	कोई मांग नहीं भेजी गई ।		175 कि0 ली0	285 कि0 ली0
वनस्पति	कोई मांग नहीं भेजी गई ।		77 टन	77 टन

रायबरेली

वस्तु का नाम	जिला अधिकारी की मांग		आवंटन	
	अप्रैल, 1974		मई, 1974	
चीनी	490 टन	490 टन	321 टन	275 टन
मिट्टी का तेल	600 कि0ली0	600 कि0ली0	275 कि0ली0	335 कि0ली0
वनस्पति	कोई मांग नही भेजी गई ।		60 टन	60 टन

कुंवर श्रीपाल सिंह---

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जितनी मांग जिलाधीश ने की थी, उतना न देने का क्या कारण है ? ये वस्तुयें किस आधार पर जिलों को दी जाती हैं ? उन्होंने कम से कम मांग की लेकिन उससे भी कम करके उन्हें दिया गया और कुछ जिलों में जहां मांग की भी नहीं गयी लेकिन उन्हें उससे अधिक दे दिया गया । तो किस आधार पर ये वस्तुयें आबंटित की जाती है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

यूनिट के आधार पर आवंटन किया जाता है । लेकिन अगर भारत सरकार द्वारा कटौती कर दी गयी तो सब जिलों में कटौती कर दी जाती है।

कुंवर श्रीपाल सिंह---

कुछ जिलों में मांग के बिना ही दिया गया और कुछ को उनकी मांग होने पर भी बहुत कम दिया गया तो वस्तुओं के देने का जो आधार था, वह क्या है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

जो आंकड़े, वे हैं वे यह बताते हैं अप्रैल और मई में जिला सुल्तानपुर में 60.11 टन, प्रतापगढ़ में 60.3 टन और रायबरेली में 56.8 टन डालडा उपलब्ध कराया गया है । कम से कम रायबरेली में कम ही दिया गया है, ज्यादा नहीं है ।

कुंवर श्रीपाल सिंह---

मैं केवल आवंटन का आधार जानना चाहता हूं ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

जहां तक मिट्टी के तेल का सम्बन्ध है रायबरेली में 600 कि0ली0 की मांग थी प्रत्येक माह जिसमें से 275 कि0ली0 अप्रैल में और 335 कि0ली0 मई में दिया गया । सुल्तानपुर में 677 कि0ली0 की प्रति माह मांग थी और वहां पर 175 कि0ली0 अप्रैल, में और 310 कि0ली0 मई में दिया गया ।

कुंवर श्रीपाल सिंह---

इनके आवंटन का क्या कोई आधार रहा है या नहीं ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

आधार तो यूनिट होता है, कोई और आधार नहीं होता है ।

श्री शिव कुमार पांडेय (जिला सुल्तानपुर)---

क्या खाद्य मंत्री जी बताने की कृपा करेंगी कि जिलाधीश सुल्तानपुर ने कई बार उन्हें लिखा कि सीतापुर की जो डालडा की फर्म है, उसने उन्हें डालडा देने से इन्कार कर दिया है और जो आदमी सुल्तानपुर के डालडा लेने गये, उनको जबानी कहा गया कि तुम ज्यादा पैसा दो लेकिन इस प्रकार का लिखित कुछ नहीं दिया और फिर जान-बूझ कर नहीं दिया ?

श्री अध्यक्ष--

यह तो नया सवाल है ।

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

सुलतानपुर जिले से 83 टन प्रति माह (अप्रैल व मई) वनस्पति की मांग थी और वहां पर 64 टन प्रति माह दिया गया ।

श्री शिव कुमार पांडेय--

श्रीमन्, मेरा निवेदन है कि सीतापुर के डाल्डा बनाने वाले कारखाने वालों ने डाल्डा देने से इन्कार कर दिया और हमारे यहां के जिलाधीश ने खाद्य मंत्री को लिखा कि वे हमें डाल्डा नहीं दे रहे हैं तो सरकार द्वारा उस पर क्या कार्यवाही की गयी ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

कुंवर श्रीपाल सिंह--

अगर आप यूनिट के आधार को मानते हैं तो मैं खाद्य मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि रायबरेली और सुल्तानपुर के यूनिट की क्या व्याख्या है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

1971 की जन-गणना के अनुसार शहरी और ग्रामीण जनसंख्या के आधार पर चीनी का आवंटन किया जाता है । जनसंख्या के आधार पर इन जिलों का साधारण मासिक कोटा निर्धारित किया गया, जो निम्नलिखित है :

	शहरी आबादी
सुल्तानपुर	32,330
प्रतापगढ़	27,909
रायबरेली	51,403

सुल्तानपुर में 32 टन, प्रतापगढ़ में 28 टन और रायबरेली में 51 टन मासिक कोटा आता है । इसके बाद ग्रामीण आबादी का अलग से है । इसी प्रकार से कई व्यक्तियों पर आधार परिवार के हिसाब से देहाती क्षेत्रों मे और प्रति व्यक्ति आधार शहरी क्षेत्रों में है ।

कुंवर श्रीपाल सिंह--

एक व्यक्ति का यूनिट है या परिवार का यूनिट है, उसको नहीं बतला रहे हैं ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

देहात में तो प्रत्येक परिवार पर देते हैं और शहर में प्रति व्यक्ति के यूनिट पर होता है ।

बाराबंकी में मिट्टी के तेल के टैंकरों को जनता में सीधी बिक्री हेतु भेजना

*11--श्री रामसेवक यादव--

क्या खाद्य एवं पूर्ति मंत्री कृपया बतायेंगे कि दिसम्बर, 1973 से फरवरी 1974 के बीच बाराबंकी जनपद में सीधे जनता में मिट्टी के तेल की बिक्री के लिये कुछ टैंकर राज्य सरकार की ओर से भेजे गये ? यदि हां, तो कितने और किन-किन एजेन्सियों के माध्यम से टैंकरों द्वारा कहां-कहां तेल बेचा गया ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

दिसम्बर, 1973 से फरवरी, 1974 के बीच बाराबंकी जनपद में जनता में सीधे बिक्री (फ्री सेल) के लिये चौबीस टैंकर मिट्टी के तेल इंडियन आयल कारपोरेशन की ओर से उनके दो पेट्रोल पम्पों पर भेजे गये । इनमें से एक टैंकर रसौली व सफदर गंज भेजा गया ।

श्री राम सेवक यादव--

जो 24 टैंकर भेजे गये जिसमें से 2 टैंकर का जिक्र किया गया है कि दो पेट्रोल पम्पों पर भेजे गये तो 22 जो सीधे बेचने के लिए जनता को गये, उनका क्या विवरण है कि किस तरह से बटवारा हुआ और जो 2 टकर पेट्रोल पम्प को बेचे गये तो किन-किन को बेचे गये और एक जो मसौली और सफदरगंज को जो वितरण किया गया टैंकर वह किसके माध्यम से वितरण किया गया ।

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

मेसर्स स्वास्तिका ट्रेडर्स बाराबंकी को दिसम्बर, 73 में 58,800 लिटर, जनवरी, 74 में 46,800 तथा फरवरी में 44,400 लिटर मिट्टी का तेल मिला । जिसमें से बालकृष्ण पोद्दार बाराबंकी को दिसम्बर में 44,600 लिटर, जनवरी, 74 में 3,1200 तथा फरवरी में 44,000 लिटर मिट्टी का तेल मिला । इन 3 टैंकरों के द्वारा 3 महीने में 2,69,800 लिटर मिट्टी का तेल दोनों पेट्रोल पम्पों पर फ्री सेल के लिए दिया गया और उन्हीं में से 11,200 लिटर मेसर्स बालकृष्ण पोद्दार की तरफ से बेचा गया और दो स्थानों--मसौली और सफदरगंज पर भेजा गया, 3,403 लिटर और बाकी फ्री सेल के लिये भेजा गया ।

श्री राम सेवक यादव--

ये जो बालकृष्ण पोद्दार हैं जिनके जरिये सफदरगंज और मसौली में तेल का वितरण किया गया, ये थोक विक्रेता है या फुटकर विक्रेता हैं ? और 22 टैंकर का जो वितरण हुआ है वह थोंक के जरिये हुआ है या फुटकर के जरिये हुआ है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

पोद्दार जी हैं ये थोक हैं और चूंकि भारत सरकार से तेल का कोटा अधिक मिला था तो सारे प्रदेश में यह आदेश जारी किये थे कि 5 लिटर तेल तक प्रति व्यक्ति फ्री सेल में बेचा जा सकता है और उसके अन्तर्गत देहात में टैंकरों के द्वारा भी पहुंचाया गया और नगरों में जहां पर पेट्रोल पम्प हैं वहां 5 लीटर तक फ्री सेल रखी गयी । होल सेलर्स जो हैं वह रिटेलर्स को भी देते हैं और होलसेलर का जो प्रश्न किया गया तो वे होलसेलर ही हैं ।

श्री रामसेवक यादव--

सवाल यह है कि पूरे जिले में 24 टैंकर गये उनको होलसेलर के जरिये या रिटेलर के जरिये वितरित किया गया और जब ये पोद्दार साहब होलसेलर थे और दो ही जगह पर ये गये हैं और बाकी तेल बच गया तो दो ही जगह होलसेलर को क्यों भेजा और बाकी तेल को जनता में क्यों नहीं वितरित किया गया, दो ही जगह क्यों वितरित किया गया ? क्या कोई अधिकारी उनके साथ गये थे वितरण कराने के लिए ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

दो ही जगह नहीं, 24 जगह भेजा गया और उन 24 में से दो इन स्थानों पर भेजा गया । इसके माने यह होते हैं कि अन्य स्थानों पर भी पूरे जिले में तेल का वितरण किया गया ।

श्री राम सेवक यादव--

मेरा साफ प्रश्न है, मैं माने नहीं लगाना चाहता हूं । मैं यह जानकारी चाहता हूं कि जिस तरह से मसौली और सफदरगंज में थोक विक्रेता के जरिये महज दो ही स्थानों पर तेल बंटवाया गया उसी तरह से क्या पूरे जिले में जो 22 टैंकर भेजे गये वह क्या और थोक विक्रेताओं के जरिये तेल बंटा और दो ही जगह थोक विक्रेता के जरिये क्यों बांटा गया और जगहों में क्यों नहीं बांटा गया? क्या यह सत्य तो नहीं है कि उस समय की रसद मंत्री चुनाव लड़ रही थीं और उन्होंने डी० एस० ओ० के जरिये इस तेल को बंटवाया ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

यह सत्य नहीं है कि केवल इन्हीं दो स्थानों पर तेल का वितरण हुआ । केवल एक ही कम्पनी के द्वारा नहीं हुआ । अन्य लोगों के द्वारा वितरण किया गया ।

श्री राम सेवक यादव--

क्या यह सच है कि जहां सफदरगंज और मसौली में थोक विक्रेता के जरिये तेल बंटा वहां से उस समय की माननीया रसद मंत्री चुनाव लड़ रही थीं और जो तेल बचा लिया गया वह दूसरी जगह नहीं बांटा गया ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

माननीय सदस्य भी बाराबंकी से एलेक्शन लड़ रहे थे । उनके क्षेत्र में भी बांटा गया होगा।

श्री राम सेवक यादव--

यह मेरा जवाब नहीं है ।

श्री अध्यक्ष--

आप पूछिये कि दूसरी जगह बांटा गया या नहीं ।

श्री राम सेवक यादव--

इन्होंने खुद कबूल किया कि कुछ तेल बच गया ।

श्री अध्यक्ष--

और जगहों का आप सवाल पूछिये ।

श्री रामसेवक यादव--

जो तेल बच गया वह बांटा क्यों नहीं गया और क्या यह सत्य है कि वहीं से रसद मंत्री चुनाव लड़ रही थीं ।

श्रीमती मोहसिना किदवाई (जिला बाराबंकी)--

चूंकि राम सेवक जी ने मेरा विवरण दे दिया है इसलिये मैं भी एक सवाल पूंछ लूं कि क्या रसद मंत्री जी को मालूम है कि जो टैंकर सफदरगंज और मसौली गये क्या उनके पास ऐसी शिकायत है कि वह घेर लिये गये, लोगों ने तेल बिकने नहीं दिया और वह टैंकर वापस आ गये ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

हो सकता है कि जो माननीय सदस्या कह रही है वह सच हो ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी --

क्या यह सच है कि जो टैंकर आया वह गलत आदमियों को दिया गया इसलिये घेराव हुआ ?

(उत्तर के लिये मंत्री जी को पुकारा नहीं गया ।)

पन्नी जी शुगर मिल, जिला बुलन्दशहर पर कृषकों के गन्ने के बकाया मूल्य का भुगतान

*12--श्री हिम्मत सिंह (अनुपस्थित)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला बुलन्दशहर में पन्नीजी शुगर मिल पर कृषकों का गन्ने का मार्च, 1974 तक कितना धन बाकी है और अब तक उसका भुगतान न किये जाने का क्या कारण है ?

श्री नारायण दत्त तिवारी--

पन्नीजी चीनी मिल पर 31 मार्च, 1974 तक कृषकों के गन्ने के मूल्य की बाकया धनराशि 67.64 लाख रुपये थी जिसका विवरण निम्न प्रकार है :--

	(लाख रुपयों में)
1973-74 वर्ष	57.50
पूर्व वर्षों का	10.14
योग	67.64

पूर्व वर्षों की देय धनराशि 10.14 लाख रु० में से मार्च 1974 के बाद दिनांक 31 मई, 1974 तक 6.52 लाख ० का भुगतान कर दिया गया है और अब इसमें कुल 3.62 लाख रु० बकाया रह गया है । इस चीनी मिल की मशीनरी और प्लांट बहुत पुराने होने के कारण व इस वर्ष गन्ने की फसल कीटों से प्रभावित होने व बिलकुल शरदकालीन वर्ष न होने के कारण चीनी की रिकवरी पिछले वर्षों की अपेक्षा 1.24 प्रतिशत कम रही जिसकी वजह से प्रति बोरा चीनी बनाने के लिये अधिक गन्ने की आवश्यकता होने के फलस्वरूप गन्ने मूल्य का अधिक बकाया हो गया।

गोरखपुर के लेखा परीक्षा अधिकारी, सहकारी समितियां एवं पंचायत के विरुद्ध आरोपों की जांच

*13--श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जनपद गोखरपुर के वर्तमान लेखा परीक्षा अधिकारी सहकारी समितियां एवं पंचायतों के विरुद्ध आरोपों की जांच के परिणाम सरकार के विचराधीन है ? यदि हां तो शिकायतें क्या है: और अब तक जांच परिणाम क आधार पर क्या कार्यवाही की गई है ?

श्री नारायण दत्त तिवारी--

जी नहीं । लेकिन स्थिति यह है कि जिला लेखा परीक्षा अधिकारी, गोरखपुर के विरुद्ध एक गुमनाम शिकायती-पत्र दिनांक 24-10-73 को क्षेत्रीय लेखा परीक्षा अधिकारी सहकारी समितियां एवं पंचायतें, गोरखपुर के कार्यालय में प्राप्त हुआ था जिस पर उन्होंने अपने स्तर पर आवश्यक कार्यवाही कर ली थी और सम्बन्धित कर्मचारियों को तथा जिला लेखा परीक्षा अधिकारी को उनके द्वारा चेतावनी दे दी गई है ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

माननीय मंत्री जी ने कहा कि उनको चेतावनी दे दी गयी । तो चेतावनी किसी गलती के लिये ही दी गयी होगी । तो वह गलतियां क्या थीं और उनकी फाइंडिंग क्या थी ?

श्री नारायण दत्त तिवारी--

यह गुमनाम शिकायत थी । साधारणतया गुमनाम शिकायतों पर कार्यवाही नहीं होती लेकिन उन्होंने फिर भी उसमें कुछ तथ्य देख कर कार्यवाही की और उसकी जांच करायी । जो शिकायतें थीं वह बहुत व्यक्तिगत किस्म की हैं ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

हमें केवल वही शिकायतें बता दें जो सच पायी गयीं ।

श्री नारायणदत्त तिवारी--

एक तो श्री अभिमन्यु लाल आडिटर द्वारा 15 आडिट नोट बहुत विलम्ब से दिये गये और उसमें कुछ जो फर्जी कार्यवाही की अभी उसकी जांच हो रही है । श्री दुर्गा प्रसाद द्वारा फर्जी आडिट की शिकायत जिस पर जांच हो रही है । डिस्ट्रिक्ट आडिट आफिसर ने एलाटमेंट क्षेत्रीय लेखा परीक्षा अधिकारी के निर्देश पर किया । बहुत विलम्ब से एलाटमेंट बदले । कुछ विशेष आडिटरों को शहर के ही एलाटमेंट दिये गये । यू0 पी0 बैंक एम्प्लाईज सेलरी अर्नर्स सोसायटी के आडिट में जितना समय निर्धारित था उससे चार दिन अधिक लगाये । दुर्गा प्रसाद जिनकी फर्जी आडिट की शिकायत हुई, मैंने यह आदेश दिया है कि जो चेतावनी दी गयी है वह पर्याप्त नहीं है, उनको मुअत्तिल किया जाय ।

जिलापूर्ति कार्यालय, इलाहाबाद में अनुसूचित जाति के कर्मचारियों का प्रतिशत

*14--श्री सत्य प्रकाश मालवीय--

क्या खाद्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जनपद इलाहाबाद के जिलापूर्ति कार्यालय में दिनांक 1 सितम्बर, 1973 व 28 फरवरी, 1974 के बीच कितने नये कर्मचारियों की भर्ती की गई और उनमें अनुसूचित जाति के लोगों का प्रतिशत कितना है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

इस अवधि में 9 नये कर्मचारियों की भर्ती की गयी जिसमें से 3 व्यक्ति अनुसूचित जाति के हैं इस प्रकार इनका प्रतिशत 33.3 है ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय--

अनुसूचित जाति के लोगों के संबंध में शासनादेश क्या है ?

श्री अध्यक्ष--

मैं इसकी इजाजत नहीं देता हूं ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

सरकारी आदेश यह है कि 50 प्रतिशत शैड्यूलकास्ट के लोगों को लिया जायेगा, तो इस केस में इस आदेश को लागू क्यों नहीं किया गया ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

7 लिपिक लिये गये हैं, जिनमें 2 अनुसूचित जाति के है, 2 चपरासी लिये गये उनमें भी एक अनुसूचित जाति का है । अब प्रतिशत माननीय सदस्य खुद देख लें ।

श्री सत्यप्रकाश मालवीय--

जो कर्मचारी भर्ती किये गये उनके नाम क्या हैं ?

श्री अध्यक्ष--

मैं इसकी इजाजात नहीं देता हूं ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय--

मेरा व्यवस्था का प्रश्न है.....

श्री अध्यक्ष---

प्रश्नों के बाद आप उसे उठायें, 2-3 मिनट रह गये हैं प्रश्नों के समय में, उसमें कुछ प्रश्न और हो जाने दें ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय---

मेरा प्रश्न बहुत आवश्यक है । मैं यह जानना चाहता हूं कि जो लोग नियुक्त हुये हैं उनके नाम पते क्या हैं ?

श्री अध्यक्ष---

नाम जानने के लिये आप अतरांकित प्रश्न कर सकते हैं ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय---

श्रीमन्, मंत्री जी जबाव देने के लिये खड़ी हुईं । इसका उत्तर कृपया दिलवा दें ।

श्री अध्यक्ष---

मंत्री जी किसी प्रश्न का उत्तर तभी देंगे जब मैं उनको इजाजत दूं । जो प्रश्न आप कर रहे हैं वह आवश्यक नहीं है । उसके लिये आप अतारांकित प्रश्न पूछ सकते हैं ।

नारीमेन जाइनेंस कम्पनी, गंगसरा, शाहजहांपुर के डीजल/पेट्रोल पम्प का निरीक्षण

*15---श्री ओम प्रकाश (जिला शाहजहांपुर), श्री सीताराम निषाद, (जिला फैजाबाद), श्री गिरजा शंकर पाठक (जिला वाराणसी) तथा श्री दीनानाथ सेवक (जिला रायदरेली)---

क्या खाद्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जिला शाहजहांपुर के अन्तर्गत गंगसरा के डीजल विक्रेता नारीमैन फाइनेंस कम्पनी की चेकिंग तहसीलदार पुवांयां द्वारा माह अप्रैल, 1974 में की गई थी ? यदि हां, तो चेकिंग का क्या परिणाम निकला और उस संबंध में में अब तक क्या कार्यवाही की गई है ? यदि नहीं तो क्यों ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

जी हां । सर्वश्री नारीमेन फाइनेंस कारपोरेशन के गंगसरा स्थित डीजल पेट्रोल पम्प का निरीक्षण दिनांक 21 अप्रैल, 1974 को तहसीलदार पुवायां द्वारा किया गया । स्टाक कम पाये जाने के अपराध में थाना पुवाया के कानून कार्यवाही हेतु रिपोर्ट दर्ज करा दी गई है । पुलिस मामले में अग्रिम कार्यवाही कर रही है ।

श्री सीताराम निषाद---

क्या मंत्री महोदया बतलाने का कष्ट करेंगी कि स्टाक कितना कम पाया गया था ।

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी---

मान्यवर जब निरीक्षण किया गया तो यह पाया गया कि सूचना पट पर जो दर्ज था वह आंकड़े 87 लीटर के थे परन्तु जब टैंक की जांच की गयी तो 28 लीटर डीजल कम पाया गया था ।

श्री राम सेवक यादव---

मंत्री महोदया मैं जानना चाहूंगा कि जब डीजल कम पाया गया तो उसकी रिपोर्ट थाने में भी की गयी । मैं यह भी जानना चाहता हूं कि मुजरिम करार पाये गये उन लोगों को गिरफ्तार किया गया या जेल भेजा गया कि नहीं ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

ऐसी सूचना तो मेरे सामने है नहीं । लेकिन जैसा आपने कहा, मेरे सामने जब यह सवाल आया तो जो आवश्यक कार्यवाही इस विषय पर करनी चाहिये वह मैं करने जा रही हूं ।

श्री राम सेवक यादव--

मान्यवर, जो भी कार्यवाही की गयी हो उसको ही बता दें ।

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य अगर ध्यान से प्रश्न का उत्तर सुनें तो इसमें मेरे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। मैंने तो स्वयं ही कहा कि अप्रैल के महीने में इसकी रिपोर्ट दर्ज करायी गयी । मामले की जांच थाने में है । यह कार्यवाही की गयी है । प्रश्न के सिलसिले में यह भी बात कह रही हूं कि जो प्रशासकीय कार्यवाही होनी चाहिये वह भी करन जा रही हूं ।

श्री राम सेवक यादव--

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जो पूछा तो उसकी पूरी जानकारी मिलनी चाहिये कि कोई पकड़ा गया है या नहीं ?

श्री अध्यक्ष--

आप क्या प्रश्न कर रहे हैं ?

श्री रामसेवक यादव--

मैं यह जानना चाहता हूं कि जब डीजल कम पाया गया तो उसकी रिपोर्ट दर्ज करायी गयी थी । जिस व्यक्ति के खिलाफ, यह एफ० आई० आर० दर्ज करायी गयी थी उसको जेल भजा गया या नहीं, इसको जानकारी दें ?

डाक्टर राजेंद्र कुमारी बाजपेयी--

माननीय अध्यक्ष महोदय, जितनी कार्यवाही की गयी [illegible] प्रश्न के उत्तर में दे दी । जब माननीय सदस्य ने यह पूछा न कि कोई अरेस्ट किया गया है या नहीं तो यह सूचना मेरे पास नहीं है । और जो भी कार्यवाही करनी चाहिये मैं उसको करूंगी ।

श्री मोहम्मद असरार अहमद--

माननीय मंत्री जी जो यह एफ० आई० आर० है वह क्या है, उसको पढ़कर सुना दें ?

श्री अध्यक्ष--

थाने में जो रिपोर्ट दर्ज करायी गयी है वह क्या है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

श्रीमन्, हमारे सामने एफ० आई० आर० रिपोर्ट है नहीं ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

अध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूं कि जब एफ० आई० आर० है नहीं तो माननीय मंत्री जी ने जो बयान किया है वह कोई बात नहीं हुयी, इसके माने कुछ नहीं हैं । इसको हम कैसे मान लें कि एफ० आई० आर० दर्ज करायी गयी है। मंत्री महोदया ने गलत कहा है ।

श्री राम सेवक यादव--

मान्यवर, जब एफ0 आई0 आर0 उनके पास नहीं तो वह मोटी-मोटी बातें बता दें, इसकी कोई जानकारी है या नहीं ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी--

मान्यवर, अध्यक्ष महोदय इसमें तो साफ लिखा हुआ है कि सर्वश्री नारीमेन फाइनेंन्स कारपोरेशन जिसने डीजल बेचा था उसका निरीक्षण होने पर उसके खिलाफ स्टाक कम पाने पर पुलिस में रिपोट दर्ज करा दी गई थी ।

श्री रघुबीर (जिला गाजीपुर)--

मान्यवर यहां व्यवस्था का प्रश्न है । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से खाद्य मंत्री जी ने जो माननीय सदस्यों के प्रत्येक प्रश्न की जो गलत बयानी की है उस पर व्यवस्था चाहता हूं । इन्होंने गलत बयानी करके हाउस को गुमराह किया है । इस तरह हाउस कैसे चलेगा अध्यक्ष महोदय हाउस की गरिमा को बचाना आपका कर्त्तव्य है। इस पर आप व्यवस्था दें ।

श्री अध्यक्ष--

गलत बयानी के लिये कार्यवाही का एक उपक्रम है लेकिन जब गलत बयानी हो । गलत बयानी के अन्तर्गत जो कार्यवाही है उसकी एक अलग प्रक्रिया है । हमारे सामने गलत बयानी नहीं है ।

मान्यवर आपके समक्ष नहीं है तो हमारे समक्ष गलत बयानी हुई है।

श्री अध्यक्ष--

मंत्री जी ने कहां गलत बयानी की है ?

श्री रघुबीर--

हमारे विरोध पक्ष के नेता का जो प्रश्न है कि एफ0 आई0 आर0 क्या है उसको पढ़ें, किस दफा में है और बिक्रेता को गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया ?

श्री अध्यक्ष--

उनके पास इसकी जानकारी नहीं है ।

गोरखपुर, देवरिया, बस्ती में गन्ने की फसल में पायरिले के कीड़ों का प्रकोप तथा शासन द्वारा उसे दूर करने के उपाय

*16--श्री फिरंगी प्रसाद विशारद (जिला गोरखपुर)--

क्या सरकार को ज्ञात है कि पुनः इस वर्ष गन्ने की नई फसलों पर पायरिले के कीड़ों का प्रकोप तेजी से गोरखपुर, देवरिया या बस्ती जनपद में हो रहा है ? यदि हां, तो दूर करने हेतु शासन द्वारा तत्काल क्या कार्यवाही की जा रही है ?

श्री नारायणदत्त तिवारी--

जी हां । इस वर्ष जनपद, गोरखपुर, देवरिया एवं बस्ती में पायरिला कीट दृष्टिगोचर हुआ किन्तु समयानुकूल नियंत्रण विधियों का प्रयोग कर स्थिति यथासंभव नियंत्रित की जा रही है ।

नोट--तारांकित प्रश्न संख्या 15 के पश्चात् प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया ।

वाराणसी कमिश्नरी में दियासलाई, दुग्ध पाउडर तथा साबुन की कमी के सम्बन्ध में सरकार द्वारा की गयी कायवाही

*17—श्री ऊदल—

क्या खाद्य मंत्री को जानकारी है कि वाराणसी कमिश्नरी तथा खास कर वाराणसी में दियासलाई, दुग्ध पाउडर तथा हर प्रकार के साबुन की बाजार में बहुत कमी है जिससे दियासलाई 30 पैसे, साबुन तथा दुग्ध पाउडर दुगुने दाम में बिक रहे हैं? यदि हां तो इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गयी है? क्या इस संबन्ध में प्रश्नकर्त्ता का तारीख 7 मई, 1974 का पत्र उन्हें प्राप्त हुआ है?

डा0 राजेन्द्र कुमारी बाजपेई—

जी हां। वारणसी कमिश्नरी के कतिपय जिलों में दियासलाई, दुग्ध पाउडर तथा साबुन के उपलब्धता में कमी हुई है। कुछ बिक्रेताओं ने अभाव का लाभ उठा कर अधिक मूल्य लेने का प्रयत्न किया। इसे रोकने के सम्बन्ध में निम्नांकित कार्यवाही की की गई :—

1—कतिपय जिलों में थोक बिक्रेताओं पर प्रभाव डाला गया कि उपर्युक्त वस्तुयें अधिक से अधिक मंगावें।

2—कई जिलों में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों के माध्यम से अभाव वाली वस्तुयें जनता को सुलभ कराई जा रही हैं।

3—कई जिलों में उपर्युक्त वस्तुओं की जमाखोरी करने वालों तथा बिक्री में अनियमितता करने वाले व्यापारियों के यहां छापे मारे तथा उनके विरुद्ध मुकदमें चलाये गये।

4—कई जिलों मे निर्माताओं से अनुरोध किया गया कि वे उपर्युक्त वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ावें।

माननींग सदस्य का 7 मई, 1974 का पत्र इस सम्बन्ध में प्राप्त हुआ जिस पर जिला अधिकारियों को निदश भेजे जा रहें हैं कि उत्तर प्रदेश आवश्यक वस्तु। मूल्य प्रदर्शन और संभरण तथा वितरण पर नियंत्रण। आदेश, 1971 में अनुसूचित आवश्यक वस्तुओं को उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिये थोक एवं फुटकर व्यापरियों के बिरुद्ध विशेष अभियान के रूप में कार्यवाही करें।

उत्तर प्रदेश सरकार की कुल आय और राज्य कर्मचारियों पर किया गया व्यय

*18—श्री गोरे लाल शाक्य (जिला इटावा)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उत्तर प्रदेश सरकार को 1973–74 को कुल आय कितनी थी और उसमें वे राज्य के कर्मचारियों (सम्पूर्ण शासन व्यवस्था) पर कितना व्यय हुआ?

श्री नारायण दत्त तिवारी—

1973–74 के बजट अनुमानों के अनुसार प्रदेश को राजस्व प्राप्तियां 671.12 करोड़ रुपये अनुमानित थी और राज्य कर्मचारियों के वेतन, भत्ते, आदि पर होने वाले व्यय का अनुमान 160–55 करोड़ रुपये था। इसके अतिरिक्त 1973–74 के बजट में 82–48 करोड़ रुपये का एक मुश्त प्राविधान कर्मचारियों को आंतरिम सहायता तथा वेतन आयोग की शिफारिशों के कार्यान्वयन के लिये किया गया था। इस एक मुश्त प्राविधान में स्थानीय निकायों तथा सहायता प्राप्त शिक्षा एवं प्राविधिक शिक्षा संस्थाओं के कर्मचारियों से सम्बन्धित अतिरिक्त व्यय भी सम्मिलित था।

सक्सेरिया शूगर फैक्टरी, जिला सीतापुर द्वारा किसानों का सारा गन्ना न लिया जाना

*19—श्री गया प्रसाद मेहरोत्रा—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि बिसवां कोआपरेटिव डेवलपमेन्ट यूनियन, जिला सीतापुर द्वारा संचालित सक्सेरिया शुगर फैक्ट्रीरी के इलाके में 10 मई, 1974 तक कितना गन्ना किसानों का खड़ा है जो मिल में सप्लाई होने से रह गया है ?

श्री नारायणदत्त तिवारी—

यह मिल बिसवां कोआपरेटिव डेवलपमेन्ट यूनियन द्वारा संचालित नहीं है। यह निजी क्षेत्र का मिल है। दिनांक 10-5-74 को लगभग 1.75 लाख क्विंटल क्षेत्र के किसानों का गन्ना पूर्ति हेतु उपलब्ध था। चीनी मिल अपने क्षेत्र का सारा गन्ना 15.13 लाख क्विंटल पेरकर दिनांक 9-6-74 को बन्द हो गयी।

किसानों केन डेवलपमेंट यूनियन द्वारा किसानों के गन्ने की सप्लाई और गन्ने के मूल्य का बकाया

*20—श्री गया प्रसाद मेहरोत्रा—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इस सीजन वर्ष 1973-74 में किसानों द्वारा गन्ना जो बिसवां केन डेवलपमेन्ट यूनियन द्वारा सप्लाई किया गया उसकी कीमत का भुगतान किसानों को कर दिया गया है ? यदि नहीं, तो कितना रुपया बाकी है ?

श्री नारायण दत्त तिवारी—

वर्तमान सीजन 1973-74 में बिसवां गन्ना समिति द्वारा 194 लाख रुपये मूल्य के गन्ने की पूर्ति की गई जिसमें से 161 लाख रु0 का भुगतान हो चुका है और अब केवल 33 लाख रु0 भुगतान हेतु अवशेष रह गया है जिसके शीघ्र भुगतान होने की आशा है।

अल्प बचत योजना के अन्तर्गत पूर्ण संतृप्त विकास खंडों की संख्या तथा प्रोत्साहन के लिये किये गये उपाय

*21—श्री ओम प्रकाश सिंह (जिला मिर्जापुर)—

क्या वित्त मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि अल्प बचत योजना के अन्तर्गत कौन-कौन से विकास खंड संतृप्त है क्या सरकार अल्प बचत को विकास खंडों में प्रोत्साहित करने के लिये ऐसी विकास योजनाओं पर विशेष धनराशि खर्च करने का विचार कर रही है ?

श्री नारायणदत्त तिवारी—

अल्प-बचत योजना के अन्तर्गत प्रदेश के गढ़वाल जनपद में 12 विकास खंड पूर्ण संतृप्त किये जा चुके हैं, जिनके नाम पौड़ी, कजली खाल, कोट, पावौ, बिर्सू, पोखड़ा, द्वारी, खाल रिणी खाल, बीरों खाल, ऐकेश्वर, दुगड्डा तथा जयहरी खाल है। मिर्जापुर जनपद में केवल सीखर विकास खंड पूर्ण संतृप्त किया गया है।

अल्प-बचत योजना को विकास खंडों में प्रोत्साहित करने के लिये विभिन्न इकाइयों को नकद पुरस्कार देने की योजना चालू की गई है। इस योजना के अन्तर्गत प्रदेश के प्रथम तीन विकास खंडों को क्रमशः रुपया 25,000/रु0, 20,000 रु0 तथा 15,000रु0 के नकद पुरस्कार दिये जाते हैं। प्रत्येक जिले के सबसे अच्छे विकास खंड को 10,000 रु0 और प्रत्येक जिले को सबसे अच्छी तीन ग्राम सभाओं को क्रमशः 5,000 रु0, 3,000 रु0 तथा 10,000 रु0

[श्री नारायण दत्त तिवारी]

के नकद पुरस्कार दिये जाते हैं। अच्छे कार्यकर्ताओं को जैसे तहसीलदार खंड विकास अधिकारी, गैर सरकारी व्यक्ति नायब तहसीलदार, सहायक विकास अधिकारी तथा समान पदाधिकारी, पंचायत सेवक ग्राम सेवक, लेखपाल तथा उनके समान स्तर के अन्य कार्यकर्ताओं को नकद पुरस्कार भी दिये जाते हैं ।

अतारांकित प्रश्न

खाद्य विभाग में भ्रष्टाचार के आरोपों में कर्मचारियों का निलम्बन

1—श्री ओम प्रकाश सिंह—

क्या खाद्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रदेश में भ्रष्टाचार के आरोप में खाद्य विभाग के कितने कर्मचारियों व अधिकारियों के विरुद्ध वर्ष 1972–73 व 1973–74 में निलम्बन, निष्काशन की कार्यवाही की गई ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

वर्ष 1972–73 में 29 कर्मचारियों व एक अधिकारी के विरुद्ध निलम्बन तथा तीन कर्मचारियों व एक अधिकारी के विरुद्ध निष्कासन और वर्ष 1973–74 में 60 कर्मचारियों व आठ अधिकारियों के विरुद्ध निलम्बन तथा 53 कर्मचारियों के विरुद्ध निष्कासन की कार्यवाही की गयी ।

गेहूं की वसूली का निर्धारित लक्ष्य एवं उसकी पूर्ति

2—श्री ओम प्रकाश सिंह—

क्या खाद्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि वर्ष 1973–74 में गेहूं वसूली का निर्धारित लक्ष्य कितना था और कितना वसूल हुआ। क्या खाद्य मंत्री कृपया यह भी बतायेंगे कि वर्ष 1974–75 में गेहूं की वसूली का निर्धारित लक्ष्य कितना है ?

डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी—

वर्षा 1973–74 में गेहूं खरीदारी का प्रारम्भिक लक्ष्य 18.61 लाख टन निर्धारित किया गया था जिसके विरुद्ध कुल 8.01 लाख टन गेहूं की खरीद हुई। वर्ष 1974–75 के लिये 7,44,250 टन गेहूं की वसूली का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

3—श्री शिवानन्द नौटियाल—

[4 थे सोमवार के लिये स्थगित ।]

प्रश्नों के सम्बन्ध में व्यवस्था का प्रश्न

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

माननीय, मैं प्रश्नों के ऊपर एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं। मेरा पहला निवेदन यह है कि प्रश्नों के लिये एक घंटा बहुत ही अमूल्य समय रखा जाता है। प्रश्नों के बीच में कभी-कभी आप पुकारते किसी सदस्य को हैं और उस बीच दूसरे सदस्य खड़े हो जाते हैं और बोलने लगते हैं। उस समय आप दबाव में आकर किसी जगह जो सदस्य मजबूत किस्म के हैं उनको प्रश्न पूछने की आप इजाजत क्यों दे देते हैं ? उन प्रश्नों का उत्तर भी संबंधित मंत्री देने लगते हैं। दूसरा प्रश्न यह है कि कभी-कभी प्रश्नों के बीच में बोलने वाले सदस्य को दूसरे सदस्य डिस्टर्ब करते हैं जिससे चौथाई प्रश्नों का अमूल्य समय बिला वजह व्यर्थ में चला जाता है। श्रीमन्, मैं चाहता हूं कि प्रश्नों के संबंध में जो ये दो प्रश्न हैं वे बड़े महत्वपूर्ण हैं। आप कृपया इन पर विचार करें और निर्णय दें।

श्री अध्यक्ष--

माननीय ऊदल जी ने बहुत उपयुक्त तथा समीचीन सारतः एक उचित बात उठाई है और इस मामले में सदन के दोनों पक्षों का निरन्तर बढ़ा हुआ सहयोग ही गारन्टी हो सकता है। तो मैं माननीय सदस्यों से कहूंगा कि अभी जैसे आगे का एक प्रश्न था जो कि महत्वपूर्ण प्रश्न था या नहीं इसका निश्चय जब प्रति पक्ष है तो करेगा। प्रश्नों के बीच म यदि कोई सदस्य समय लेते हैं तो उससे किसी न किसी सदस्य को नुकसान होता है। मान लीजिए 5 सवाल रोज करें तो उसी में घंटा बीत सकता है। मैं चाहता हूं कि अधिक से अधिक सदस्यों को मौका मिल जाय और इसीलिये मैं कोशिश करता हूं कि सूची में जितने प्रश्न हैं उनको ज्यादा से ज्यादा पूरा कर लें। इसको पूरा करने में आपका सहयोग अपेक्षित है।

श्री हरीश कुमार गंगवार (जिला बरेली)—

मान्यवर, जब मैंने शुक्रवार को इसी चीज का निवेदन किया था तो आप क्रुद्ध हो गये थे।

श्री अध्यक्ष—

आपने प्रश्नों के बीच में यह बात कही थी जब कि श्री ऊदल ने प्रश्नों के बाद।

श्री हरीश कुमार गंगवार—

इसका मतलब यह है कि मैं न बोला करूं।

श्री अध्यक्ष—

आप बोलें या न बोलें यह माननीय सदस्य का दृष्टिकोण है।

उत्तर प्रदेश शीरा नियंत्रण (संशोधन) विधेयक, 1974

सचिव, विधान सभा—

मान्यवर, मैं आपकी आज्ञा से उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली, 1958 के नियम 149 के अन्तर्गत सूचित कराता हूं कि उत्तर प्रदेश शीरा नियंत्रण (संशोधन) विधेयक, 1974 जिसे विधान सभा ने दिनांक 12 जून, 1974 को पारित किया था, उत्तर प्रदेश विधान परिषद् से बिना किसी संशोधन के दिनांक 21 जून, 1974 को वापस प्राप्त हो गया है।

खाद्य मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना

श्री अध्यक्ष—

विशेषाधिकर की अवहेलना के संबंध में दिनांक 21 जून को श्री मोहन लाल कपूर द्वारा जो सूचना आई है, उस म पढ़कर सुना रहा हूं। "19-6-1974 को आदरणीय सदन में खाद्य मंत्री श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी ने कहा था कि "मरठ में राशन की दूकानों स तुरन्त गल्ला बिकने क आदेश द दिये गये हैं" परन्तु मेरी सुनिश्चित जानकारी है कि अभी तक कोई आदेश नहीं दिये गये हैं। माननीय सदस्य का यह कहना है कि माननीय मंत्री न आदरणीय सदन में जानबूझकर जनता को गुमराह करने के लिये गलत बयानी की है, इससे सदन की अवमानता हुई है। मने 19-6-74 की कायवाही को देखा विधान सभा में खाद्य मंत्री जी द्वारा जो शब्द कहे गये थे वह इस प्रकार है "कल ही मन इसका आदेश द दिया है कि मेरठ म इस पखवाड़े से फिर सस्ते गल्ल की दूकानें चालू कर दी जायं जिससे जनता को इसमें कोई परेशानी न हो। "इसका मतलब यह है कि उन्होंन 18 जून, 1974 को इस प्रकार के आदेश दे दि थ। इसम माननीय मंत्री जी ने कोई गलत बयानी नहीं की है इसलिय विशेषाधिकार की अवहेलना का कोई प्रश्न नहीं उठता। इसलि आग्रह किया जाता है।

श्री मोहम्मद असरार अहमद (जिला बदायूं)—

टेलीफोन तो था उस पर आदेश दिये जा सकते थे ।

श्री अध्यक्ष—

लेकिन इससे विशेषाधिकार का हनन कहां होता है । कि उन्होंने गलत बयान दिया ।

श्री मोहम्मद असरार अहमद—

लेकिन तब तक तो यह आदेश पहुंचे नहीं थे ।

श्री अध्यक्ष—

इसका मतलब यह है कि माननीय मंत्री तब तक कोई बयान न दें जब तक कि उनके आदेश जिसके लिये वह संबोधित हैं वह वहां तक न पहुंच जायं ?

श्री मोहम्मद असरार अहमद—

मंत्री जी ने पिछली डेट में आदेश दे दिये हों तो ?

श्री अध्यक्ष—

आप भी तो मंत्री रह चुके हैं ।

श्री मोहन लाल कपूर (जिला मेरठ)—

मान्यवर, प्रश्न मेरा है मुझे बोलने का अवसर दें । प्रश्न यह है कि माननीय खाद्य मंत्री जी 14 तारीख को पहुंची थे और आपने यह कहा कि जब मैं वहां पहुंची तो आदेश दे आयी । परन्तु मेरी जानकारी है कि कोई गेहूं 10 और 20 तारीख को वहां नहीं बंटा । इन्होंने जो बात कही वह गलत है ।

श्री अध्यक्ष—

यह नहीं कहा कि वहां आदेश दिया ।

श्री मोहन लाल कपूर—

14 तारीख को वहां पहुंचीं और आदेश देकर नहीं आयीं ।

श्री अध्यक्ष—

मैं उनका पूरा बयान पढ़ देता हूं । "डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी आपकी आज्ञा से मैं स्थिति स्पष्ट कर देना चाहती हूं । अभी मैं मेरठ दौरे पर गई थी । वहां अधिकारियों से भी बातचीत हुई, कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं की मीटिंग में गयी और जनता के लोगों से भी मिली थी । लोगों ने बताया कि मेरठ में गेहूं सस्ते गल्ले की दुकानों पर मिलता था उन दुकानों पर फिर से चालू करवा दें, हमको दिक्कत हो रही है । कल ही मैंने इसका आदेश दे दिया है कि मेरठ में इस पखवाड़े से फिर सस्ते गल्ले की दुकानें चालू कर दी जायं जिससे जनता को कोई परेशानी नहो ।" यह बयान है ।

श्री मोहन लाल कपूर—

यह उपदेश अभी तक नहीं पहुंचा और गेहूं नहीं बट रहा है ।

श्री अध्यक्ष—

अखबारों में तो निकला है कि बंट रहा है ।

श्री अजीत सिंह सेठी (जिला मेरठ)—

गेंहूं तो बंट रहा है। 20–21 में बंटा।

अध्यक्ष—

आप इसमें न पड़ें।

चीनी मिलों से सम्बन्धित वक्तव्य का स्थगन

श्री अध्यक्ष—

जो कार्यसूची का आइटम 10 है उसके बारे में घोषणा करनी है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में चीनी मिलों से संबंधित उत्पन्न समस्याओं के विषय में दिनांक 24 जून, 1974 को मेरे अर्थात नारायण दत्त तिवारी, उद्योग मंत्री द्वारा विधान सभा में एक वक्तव्य देना निश्चित हुआ है। उन्होंने लिखा है कि "चूंकि उक्त दिवस को मैं बजट के संबंध में अत्यधिक व्यस्त रहूंगा अतएव उक्त वक्तव्य कृपया किसी अन्य दिनांक के लिये नियत करने का कष्ट करें।" आज उनको जवाब भी देना है इसलिये इस वक्तव्य को कल यानी 25 तारीख के लिये रखे देता हूं।

बांदा जिले में पीने के पानी के संकट के सम्बन्ध में वक्तव्य

श्रम मंत्री (श्री राज मंगल पाण्डेय)—

बांदा जिले की पाठा पेयजल योजना दो भागों में वर्ष 1965 तथा 1967 में स्वीकृत की गई थी जिसमे मानिकपुर तथा कर्वी विकास खंड के कुल 250 गांवों को पानी दिया जाना प्रस्तावित था। कर्वी में पैसुनी नदी पर तथा सिमरदहा में ओहन नाले पर 11,000 किलो लीटर क्षमता के पंपिंग स्टेशन लगाये गये हैं। क्षेत्र में 570 कि0 मी0 लम्बी पाइप लाइन बिछी है और 988 टैंक टाइप स्टैन्ड पोस्ट लगाये गये हैं। कर्वी, चित्रकूट, सिमरदहा, सरैया तथा मानिकपुर में ट्रीटमेंट प्लान्ट बूस्टिंग स्टेशन, इन्टेकवेल इत्यादि लगे हैं जहां 400 के0 वी0 ए0 विद्युत शक्ति की आवश्यकता है। योजना 24 घंटे बिजली सप्लाई पर आधारित है। विद्युत शक्ति की कमी के कारण योजना के अन्तर्गत सभी ग्रामों को अभी पानी नहीं दिया जा सका है। वोल्टेज में लो रहने के कारण भी पम्पिग प्लान्ट निरन्तर चालू नहीं रखे जा सकते। अतएव, 250 ग्रामों में से 103 ग्रामों को ही 2 से 4 घंटे तक जल संपूर्ति की जा रही है और कर्वी में 8 घंटे पानी दिया जा रहा है।

2—27–4–74 तक कर्वी में केवल 8 घंटे विद्युत शक्ति उपलब्ध हो पायी थी। इसके पश्चात् 1–5–74 तक विद्युत शक्ति 10–12 घंटे तक प्राप्त हुई। 2–5–74 से 15–5–74 तक 24 घंटे तक बिजली उपलब्ध हुई। किन्तु 16–5–74 के बाद पुनः 10–16 घंटे तक ही बिजली मिल रही है। 17–18 मई तथा 14 जून, 1974 को विद्युत शक्ति नहीं मिल पाई। अन्य पम्पिग स्टेशनों पर विद्युत शक्ति केवल 8–10 घंटे के लिये ही मिल रही है। इन सब कारणों से पानी स्टोर करने वाले रिजरवायर तथा पाइप लाइनें पानी से पूरी नहीं भरी जा सकती। उल्लेखनीय है कि 570 कि0 मी0 पाइप लाइन तथा रिजरवायर भरने के लिये कम से कम 14 घंटे की आवश्यकता पड़ती है। विद्युत शक्ति पम्पिग स्टेशनों को निरन्तर मिलती रहे, इसके लिये राज्य विद्युत परिषद् के सब-स्टेशनों से पम्पिग स्टेशनों तक स्वतंत्र केबिल लगाकर निरन्तर बिजली देने का प्रस्ताव विचाराधीन है। क्योंकि ग्रामीण फीडरों से जिससे इस समय पम्पिग स्टेशनों को बिजली मिलती है, विद्युत शक्ति की कमी के कारण निरन्तर बिजली प्राप्त होना सम्भव नहीं है।

3—विद्युत शक्ति की कमी के अतिरिक्त जो दूसरी कठिनाई है वह स्थानीय लोगों द्वारा पाइप लाइन को तोड़ देना तथा तालाब इत्यादि भरने के लिये बाल्व का निकाल देना है।

[श्री राजमंगल पांडेय]

इसके कारण पानी का बढ़ाव उस बिन्दु के आगे रुक जाता है। कुछ व्यक्तियों के विरुद्ध पुलिस के द्वारा कार्यवाही भी की जा चुकी है किन्तु स्थिति में पर्याप्त सुधार नहीं हो पाया है।

4—570 कि0मी0 पाइप लाइन में से केवल 114 कि0मी0 पाइप लाईन की टेस्टिंग की जानी बाकी है जिसके लिये बिजली मिलते ही कार्य समाप्त कर लिया जायगा।

श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा (जिला बांदा)—

मान्यवर, अभी माननीय मंत्री जी ने जो स्टेटमेंट पढ़ा, वह बिलकुल गलत है। पाठागांव पेयजल योजना में जो पाइप लाइनें डाली गयी है, वे बिल्कुल सस्ती हैं जो पानी जाने से फट जाती हैं। वहां पर कई गांव मैंने जाकर देखे हैं। वहां न तो पाइप लाइने बनी हैं और जो भी टैंक बनाये गये है, वह क्रेक करते है और टूट गये हैं। 9 जनवरी, 1974 को इन्दिरा गांधी ने इसका उद्घाटन किया था। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि उस समय कितने गांवों को पानी जा रहा था ?

श्री अध्यक्ष—

आप अपने प्रश्न को स्पष्ट नहीं कर पाये।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

मान्यवर, हमारे माननीय सदस्य खुद स्थिति को देख आये हैं। यह सरकार के लिये बड़े कलंक की बात है कि इतने वर्षों के बाद भी पेयजल की व्यवस्था के लिये कुछ नहीं कर पाये हैं। लोग पानी के लिये तरस रहे हैं। गर्मी के कारण लोग त्राहि त्राहि कर रहे हैं। सरकार के पास प्रस्ताव विचाराधीन है। मैं जानना चाहता हूं कि सरकार कौन-कौन सी व्यवस्था करने जा रही है, जिससे पानी की व्यवस्था हो जाय ?

श्री राज मंगल पांडेय—

मान्यवर, मैंने सभी दिक्कतों के बारे में अभी अपने स्टेटमेंट मे बता चुका हूं। ये जो लाइनें हैं, ये फीडर लाइनों से कनेक्टेड हैं। हम इनडिपेन्डेडेन्ट लाईन वहां तक ले जा रहे हैं ताकि अधिक से अधिक समय बिजली दे सकें और पानी की व्यवस्था कर सकें।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

कब यह व्यवस्था होगी? क्या बरसात बाद होगी ?

श्री राज मंगल पांडेय—

मैंने अभी निवेदन किया कि वहां इलेक्ट्रिसिटी फलक्चुयेट करती है। कभी ज्यादा कभी कम मिलती है। 570 कि0मी0 पाइप लाइन तथा रिजरवायर में पानी भरने के लिये कम से कम 14 घंटे की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिये अलग से प्रस्ताव इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के पास विचाराधीन है। हम आशा करते है कि जल्द से जल्द वहां पानी की व्यवस्था हो जायगी।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, प्रश्न यह था कि पाठा पेय जल योजना में पाइप लाइन आज नहीं बिछाई गयी हैं। माननीय सदस्य खुद जाकर देख आये हैं।

श्री राज मंगल पांडेय—

मान्यवर, 570 कि0मी0 पाइप लाइनें बिछा दी गयी हैं। 114 कि0 मी0 पाइप लाइनों की अभी टेस्टिंग नहीं हुई है। वहां 14 घंटे लगातार बिजली नहीं मिल पाती है।

इसके अतिरिक्त वहां स्थानीय लोग पाइप लाइनों को काट भी देते हैं। उनके खिलाफ पुलिस में भी कार्यवाही की गयी है।

श्री जमुना प्रसाद बोस (जिला बांदा)--

जो उत्तर दिया गया उससे बढ़ कर असत्य कोई और हो नहीं सकता। पाठा क्षेत्र में बतलाया गया कि 103 गांवों में पानी दिया गया जब कि मेरा कहना है कि 103 तो क्या 3 गांवों में भी पानी नहीं दिया गया। उत्तर में कहा गया कि वहां पर 2-4-74 से 15-4-74 तक यानी 13 दिन 24 घंटे बिजली दी गयी लेकिन किसी भी एक गांव में एक मिनट के लिये पानी नहीं मिला ?

श्री राज मंगल पांडेय--

मैंने बतला दिया कि जहां पर बिजली की सप्लाई रेगुलर है जैसे कर्वी में वहां के पावर स्टेशन से 65 गांव कनेक्टेड हैं उनमें से 64 गांवों को पानी दिया गया, 1 गांव को नहीं दे सके। जहां पर बिजली के फ्लेक्चुएशन की वजह से या दो तीन घंटे बिजली मिल पाती है बहां पर हम इंडिपेंडेंट लाइन देने का प्रयत्न कर रहे हैं ताकि वहां पानी दिया जा सके।

श्री जमुना प्रसाद बोस--

मेरा यह आरोप है कि एक गांव को भी पानी नहीं मिला क्या यह सत्य है ?

श्री अध्यक्ष--

आप लिख कर दे दीजिये।

श्री राम समुझ तिवारी (जिला बस्ती)--

यह योजना तैयार की गयी है 24 घंटे बिजली की सप्लाई के लिये तो फिर इसकी व्यवस्था अभी तक क्यों नहीं हो सकी ?

श्री राज मंगल पांडेय--

यह बात सही है कि 24 घंटे इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई के आधार पर इसका निर्माण हुआ था।

श्री राम समुझ तिवारी--

जब कभी अधिकारियों को पता है कि देश व प्रदेश में 24 घंटे बिजली की सप्लाई नहीं हो रही है तो सरकार ऐसी योजना बनाने वाले अधिकारी के खिलाफ क्या कार्यवाही करेगी ?

(उत्तर के लिये मंत्री जी को नहीं बुलाया गया।)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

जब 103 गांवों में से एक गांव को भी पीने का पानी नहीं मिल रहा है तो सरकार का कर्त्तव्य है कि उसकी व्यवस्था करे तो सरकार इसके लिये क्या व्यवस्था तात्कालिक करने जा रही है ?

श्री राज मंगल पांडेय--

जब कठिनाइयां आती हैं और जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं है तो उसमें सबको थोड़ा धैर्य तथा साहस रखना चाहिये और उसका फल फिर जल्दी मिलेगा।

श्री राम सेवक यादव (जिला बाराबंकी)—

यह योजना 24 घंटे बिजली सप्लाई करने के लिये तैयार की गयी थी ताकि सभी लोगों को पीने का पानी मिल सके अब उस आधार पर अगर बांदा जिले में पीने के पानी की व्यवस्था नहीं हो सकी तो सरकार क्या वहां पर तात्कालिक पीने के पानी की व्यवस्था करने के लिये टैंकर की व्यवस्था करने पर विचार कर रही है ?

श्री राज मंगल पांडेय—

ऐसी सेचुएशन नहीं है कि टैंकर से पानी देने की नौबत आये लेकिन अगर ऐसी समस्या आयेगी तो शासन अवश्य कुछ न कुछ करेगा ।

श्री मोती लाल देहलवी (जिला कानपुर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या माननीय मंत्री महोदय को यह सूचना है कि 103 गांवों को पानी नहीं मिल रहा है ? प्रश्नकर्ता माननीय सदस्य का यह कहना है कि किसी भी गांव को पानी नहीं मिल रहा है । वे वहीं के रहने वाले हैं, खुद देखते हैं और मंत्री जी को अधिकारियों द्वारा सूचना दी जाती है । तो क्या प्रश्नकर्ता की बात को सही मानकर इस बात की जांच करायेंगे कि अधिकारियों ने उन्हें गलत सूचना दी है ?

श्री राज मंगल पांडेय—

मान्यवर, अभी तो माननीय सदस्य ने एक सूचना दी है और पहले पहल इसी सदन में दी है । इसके पहले उन्होंने कोई सूचना मुझे नहीं दी कि इन गांवों को पानी नहीं मिल रहा है । यदि वे मुझे लिखकर दें तो मैं निश्चित तौर से जानकारी करा लूंगा ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है । सदन में बहुत से माननीय सदस्य प्रश्न पूछते हैं और मंत्रीगण आश्वासन दे देते हैं । इस सम्बन्ध में आश्वासन समिति एक सिफारिश कर भी चुकी है कि मंत्रीगण जो आश्वासन सदन में दे देते हैं और माननीय सदस्य जो प्रश्न पूछते हैं उसी को लिखित सूचना मान लिया जाय । इसके बाद लिखित रूप में देने का कोई प्रश्न नहीं होना चाहिये । इस पर आप पुनः व्यवस्था दें ।

श्री मोतीलाल देहलवी—

जो माननीय सदस्य ने कहा कि इससे बढ़कर और झूठ क्या हो सकता है, लिखित से कम नहीं है ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

लिखकर देने की जरूरत नहीं होनी चाहिये, यह व्यवस्था आप दे चुके हैं ।

श्री अध्यक्ष—

जो आपने कहा वह ठीक है । जब कोई प्रश्न ब्योरे का होता है तो उसमें लिखित जानकारी की मांग होनी चाहिये क्योंकि तफसील का होता है ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, माननीय सदस्य ने कहा कि 103 गांवों को पानी नहीं मिल रहा है और मंत्री जी कहते है कि किस गांव को नहीं मिल रहा है, कितने दिनों से नहीं मिल रहा है, कितना पानी नहीं मिल रहा है । यह आप तफसील से माननीय सदस्य से लिखित पूछना चाहते हैं । हम कहते हैं कि आपके पास अधिकारी हैं, एक्सपर्ट्स हैं, आपको बताना चाहिये । उन्होंने

जब यह पूछा कि 103 गांवों को पानी नहीं मिल रहा है तो आप कुछ तो बतायें कि 10/15 गांवों को पानी मिल रहा है । हमसे क्यों पूछते हैं ।

श्री अध्यक्ष--

जो प्रश्न आपने उठाया है, वह ठीक है । लेकिन यदि माननीय सदस्य लिखित सूचना दें तो वह उनके हित में ही है तब ब्योरे और तफसील से सवाल हो जाता है और ब्योरे से मंत्री जी अवगत हो जाते हैं ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

इसमें ब्योरे में जाने की जरूरत ही नहीं है ।

श्री अध्यक्ष--

ब्योरे की जरूरत इसलिये है कि कोई माननीय सदस्य कहता है कि उस जगह पानी नहीं मिला, या अमुक जगह पर पम्प टूट गया है तो वह ब्योरे का सवाल हो जाता है जैसा कि माननीय देवकुमार जी ने कहा है . . . (व्यवधान)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

ब्योरे में जाने की जरुरत इसलिये नहीं है कि यह प्रश्न बिलकुल स्पष्ट है कि 103 गांवों को पानी नहीं मिल रहा है । इसकी वे जांच करायें . . . (व्यवधान) . . . मान्यवर, आप हमारे हितों की रक्षा करें और उनकी तरफ से जवाब न दें ।

श्री अध्यक्ष--

ब्योरे की जरूरत इसलिये है कि मान लीजिये मंत्री जी ने कहा कि पानी मिल रहा है और आप कहते हैं कि नहीं मिल रहा है । तब तफसील में जाना ही पड़ता है ।

श्री मोहम्मद असरार अहमद (जिला बदायूं)--

पुराने-पुराने मंत्री यहां पर बैठे हुये हैं । उनकी जगह पर आप जवाब न दें । इस प्रकार से तो ये जवाब नहीं दे पायेंगे और सारे जवाब आपको ही देने पड़ेंगे । (व्यवधान)

श्री राज मंगल पांडेय--

एक गांव में भी पानी नहीं मिला, जैसा कि माननीय सदस्य कह रहे हैं, वह मेरे स्टेटमेंट से सही नहीं साबित होता । उसमें लिखा है कि कुछ गांवों के लोगों ने पाइप लाईन काटकर पानी निकाल लिया । उनके ऊपर पुलिस में मुकदमें भी कायम किये गये हैं । यह खुद ही इस बात का धोतक है कि पानी लाइन गई और उससे कुछ लोगों ने पानी लिया . . . (व्यवधान) अब यह कहना है कि एक गांव में भी पानी नहीं लिया गया या नहीं पहुंचा, यह ठीक नहीं है क्या आप इसको कह सकते हैं कि ये मुकदमें सही नहीं हैं ?

श्री जमुना प्रसाद बोस--

मैंने पूरे पाठा क्षेत्र में घूम-घूम कर देखा है . .

श्री अध्यक्ष--

ठीक है, अब आप जो दूसरे सवाल करना चाहते हैं, उसको तो सवाल करने का मौका दें ।

श्री रघवीर (जिला गाजीपुर)--

मान्यवर, अभी अभी मूल प्रश्न के उत्तर में मंत्री जी ने यह बताया कि कुछ ऐसी दूरी हैं, जहां अभी पाईप लाइन नहीं लगे है, तो जब पाइप नहीं लगे हैं, तो जो तोड़कर पानी निकाल लिया गया, यह कैसे सम्भव हैं और पानी कैसे पहुंचा ?

श्री राजमंगल पांडेय--

शायद माननीय सदस्य ने स्टेटमेंट को सुना नहीं। उसमें साफ है कि 570 किलोमीटर लाईन बिछा दी गई हैं और उसमें से केवल 115 किलोमीटर की टेस्टिंग नहीं हुई है। बिछाना और टेस्टिंग अलग-अलग चीज हैं। शायद वह दोनों को एक कर रहे हैं, इसलिये उनको भ्रम है।

श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा--

मैंने अपने पाठा क्षेत्र में गांव-गांव में जाकर देखा है। वहां के अधिकारी बहाना बना रहे हैं कि पाईप लाईन ग्रामीणों द्वारा तोड़ दी जाती है। सतीशचन्द्र गुप्ता इंजीनियर और केदार ने जनता और सरकार के साथ बड़ा धोखा किया है, उन लोगों ने 50 लाख रुपये का गबन किया है। वे और अधिकारी झूठ कह रहे हैं कि पानी काट लिया जाता है, लाईन तोड दी जाती है। मेन लाइन को टंकी से जोडा तक नहीं गया है। क्योंकि 12 घंटे जो बिजली मिलती है, उससे काफी गांवों में बिजली मिल सकती है। मैं मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि क्या वह विजीलेंस विभाग द्वारा इसकी जांच कराने की कृपा करेंगे ?

श्री राजमंगल पांडेय--

सी0आई0डी0 तो उस चीज की जांच करती है, जहां पर अपराध या अपराधी का पता न हो। यहां तो लाईन बिछी हुई है, उसमें कहां सी0आई0डी0 की बात है।

श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा--

उसमें 50 लाख रुपये का गवन है और पानी किसी भी गांव में नहीं जा रहा है। मैंने स्वयं देखा है, लोग सड़ा पानी पीने को विवश हैं। गुप्ता जी कहते हैं कि प्रश्न कर लीजिये मुझे कोई डर नहीं है। यह फैक्ट है। मैं उस क्षेत्र का रहने वाला हूं।

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न यह है उनका यह कहना है कि कहीं कहीं आपके कर्मचारियों की असावधानता और उनकी अकर्मण्यता के कारण खराबी हुई है। तो ऐसी कोई व्यवस्था आप करेंगे कि उसको देखेंगे ?

श्री राजमंगल पांडेय--

मान्यवर, मैंने पहले कहा कि माननीय सदस्य लिख कर दे दें कि किन किन गांवों में क्या परिस्थिति है क्योंकि 103 गावों का सवाल है। और यह प्रश्न आज आया है। इसके पहले सदन 6 जून से बैठा है, नहीं आया। इस किस्म की चीजें कि एक गांव में भी पानी नहीं आया है, लोग पानी के बिना त्राहि-त्राहि कर रहे हैं, ऐसी विषम परिस्थिति है, यह इस स्टेटमेंट पर जाहिर हुआ, इसकी इमर्जेन्सी जो आज बतलायी जा रही है, वह पहले नहीं थी, जो आज कहा जा रहा है कि एक गांव को भी पानी नहीं दिया गया। इसकी जांच करा लेंगे, क्योंकि हमारे अधिकारी लापरवाह हों कि एक गांव को भी पानी न दें, इसकी हम जांच करा लेंगे।

श्री अध्यक्ष--

आज नियम 56 की पांच सूचनायें प्राप्त हुई हैं...

श्री राम समुझ तिवारी--

एक सवाल।

श्री अध्यक्ष--

आपको मौका दिया। एक एक प्रश्न करने का मौका दिया।

श्री राम समुझ तिवारी---

एग्जिक्विटिव इंजीनियर जो जिम्मेदार हैं तुरन्त सस्पेंड होना चाहिये ।

श्री अध्यक्ष---

आप लिख कर दे दें कौन दोषी है ।

कार्य-स्थगन प्रस्तावों की सूचनाएं

श्री अध्यक्ष---

आज नियम 56 की पांच सूचनायें प्राप्त हुई हैं ।

एक तो 20 जून, 1974 से विधायक निवास के सभी फ्लैटों में पानी का बड़ा अभाव है, नहाने-धोने, भोजन इत्यादि के लिये । दो दिन की नोटिस दे कर यहां बन्द था । सब का पानी बन्द था । ूरे शहर का पानी बन्द था ।

एक सदस्य---

यह रोज की परेशानी है फ्लैटों में पानी नहीं आता ।

श्री रामायण राय (जिला देवरिया)---

यह सही है ।

श्री अध्यक्ष---

रात्रि में और भी पानी का अभाव और भारी संकट का सामना करना पड़ता है । पानी के अभाव के कारण भोजनालयों में भी भोजन नहीं मिल पाता, कई बार भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता । पानी की कठिनाई अभी चल रही है । इसके बारें में मंत्री जी ध्यान दें ।

राज्य सम्पत्ति मंत्री (सम्बन्धित मंत्री सदन में उपस्थित नहीं थे ।)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)---

इस सरकार का पानी उतर गया है ।

श्री शफीकुल रहमान बर्क (जिला मुरादाबाद)---

वह तो मैदान छोड़कर भाग गये ।

(राज्य सम्पत्ति मंत्री आ गये ।)

श्री अध्यक्ष---

माननीय विधायकों के निवास-स्थान पर आवश्यक जल सम्पूर्ति का प्रश्न है । इस पर माननीय मंत्री जी ध्यान देंगे ।

श्री शफीकुल रहमान बर्क---

आपने वकालत करके इनकी आदत बिगाड़ दी है । यह सदन में तो किसी बात का जवाब दे देते हैं । अगर इनके रेजिडेंस पर मिलने जाइये तो सीधे मुंह बात भी नहीं करते ।

श्री अध्यक्ष---

कौन सी वकालत देखते हैं ? यह आक्षेप है । मैं आपकी भी वकालत करता हूं । यह माननीय सदस्य गम्भीरतापूर्वक कहें तो उनका दल इस पर विचार करे, और उनका नेता इस पर विचार करे, जितनी र मुझको लगती है आने में उससे जल्दी मैं यहां से चला भी जा सकता हूं । लेकिन इस की गम्भीरता को याद रखिये । गम्भीरता से काम करना चाहिये । जो

[श्री अध्यक्ष]

एक प्रश्न कर रहे हैं उस पर मंत्री का ध्यान आकृष्ट किया गया । मैं यहां पर मंत्री की वकालत करने नहीं आता हूं । वह व्यक्ति गुमराह है, वह माननीय सदस्य मति भ्रष्ट है जो ऐसा आरोप लगाने की सोचता है । मैं यहां बीच में बैठा हूं ।

श्री शफीकुल रहमान बर्क---

अध्यक्ष महोदय, इसका मतलब तो यह है कि किसी बात का जवाब ही न दिया जाय क्योंकि आपको नागवार खातिर होता है ।

श्री मोतीलाल देहलवी (जिला कानपुर)---

आपने यह कह दिया कि वह सदस्य पथ-भ्रष्ट है जो स तरह से आरोप लगाता है ।

श्री हरीश कुमार गंगवार (जिला बरेली)---

श्रीमन्, मैं यह कहना चाहता हूं कि यदि अध्यक्ष पथ-भ्रष्ट हो जाये तो हम क्या करें । जो आप कह रहे हैं वह सब गलत है । कोई माननीय सदस्य भ्रष्ट नहीं है । आप भ्रष्ट है ।

श्री अध्यक्ष---

जब मैं भ्रष्ट करता हूं तो आप क्योंकर होते है । मेरी बात सही है । (हंसी)...

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी---

मान्यवर, मेरी आप से विनम्र प्रार्थना है । आप जानते हैं कि इस समय सरकार कैसी है और कैसा सरकार का व्यवहार है विरोधी पक्ष के साथ और-विरोधी पक्ष कैसे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है । जब माननीय सदस्य यहां आते हैं तो वह आप से कह सकते हैं । आपके द्वारा ही सारे देश और जनता से कह सकते हैं कि उनके साथ कैसा व्यवहार हो रहा है । लेकिन जब आप बीच में ऐसी बात कहते हैं तो हमारी समझ में आता है कि हमारे अधिकारों की रक्षा नहीं हो रही है । जब ऐसी बात आ जाती है तो माननीय सदस्य आक्रोश में कहते हैं । हमारे अधिकारों की रक्षा होनी चाहिये । वह जवाब कैसे देते हैं कि उनके जवाब से हमें सन्तोष नहीं हो पाता है । ऐसी स्थिति में यदि 2/4 शब्द निकल जायें तो आपको सोच लेना चाहिये कि उनको ठेस लगी है ।

श्री अध्यक्ष---

इस पर तो मैं बार बार यह व्यवस्था दे चुका हूं कि विरोधीपक्ष का मुंह स्वतंत्र है । वह कभी कभी उच्छृखला भी हो जाते हैं तो मैं बुरा नहीं मानता हूं । लेकिन आप जागरूकता से तथा अपने अध्ययन से सरकार को झुका सकते हैं । जो नये माननीय सदस्य है वे बहुत अच्छे हैं । उनके भाषण भी हुये हैं । लेकिन अगर वे अध्ययन करके आयेंगे और अपनी जानकारी की बुनियाद पर सवाल करेंगे तो सरकार झुकेगी । लेकिन अगर एक खड़ा हुआ और मंत्री जी जवाब नही दे पाते हैं, दूसरा सवाल करने लगे, तीसरा करने लगे और चौथा करने लगे तो मैं आप से निवेदन करूंगा कि यह ठीक नहीं है । माननीय सदस्य देवेन्द्र कुमार जी इतना बोले कि मैं नहीं समझ सका कि वे क्या बोल रहे है । उनको अनुशासित रखिये ।

आप समझते हैं कि हर चीज जो आप कह रहे हैं वह मैं समझ रहा हूं । आपको यह भ्रम है कि जो आप बोल रहे हैं वेद वाक्य है और अवश्य सुना जाना चाहिये । मुझे यहां बैठकर जितना अंश सुन पड़ेगा उतने ही अंश की मैं कार्यवाही करूंगा । यहां आप बैठते हैं और बहुत से सवाल आप करते हैं जो आप न करें तो अच्छा है क्योंकि आगे के महत्वपूर्ण सवाल रह जाते हैं ।

श्री वेद प्रकाश अग्रवाल (जिला फैजाबाद)—

उनका नाम श्री देवेन्द्र कुमार नहीं है बल्कि श्री लक्ष्मीनारायण वर्मा है ।

श्री अध्यक्ष—

अच्छा तो भूल हो गई । वह हो सकता है । जहां-जहां मैं श्री देवेन्द्र कुमार कह चुका हूं वहां श्री लक्ष्मीनारायण वर्मा समझा जाये । कुछ शब्द ऐसे हो सकते हैं जो क्रोध में कहे गये लगते हों । बहुत से आदमी समझते हैं कि मैं क्रोध करता हूं । लेकिन मैं कहता हूं कि मैंने आज तक कभी क्रोध नहीं किया है । मेरे मुंह से किसी के लिये, जब से मैं पैदा हुआ हूं अपशब्द नहीं निकले । इसलिये मैं समझता हूं कि मैं अक्रोधी हूं । इसलिये आप कुछ बेचैन हैं । मेरी भी कुछ यह जानकारी है कि विरोधी पक्ष कुछ बेचैन है । इसके लिये आपस में सोंचे कि क्या ढंग हो सकता है ।

प्रश्न ऊदल जी ने किया । ठीक है उन्होंने कहा । यही बात मैंने भी कही । वह उसी सवाल के बीच में खड़े हुये । मैंने कहा कि हमें और सवाल भी लेने हैं । पूरा करना है । एक माननीय सदस्य खड़े हुये हैं उन्हें अल्प सूचित प्रश्न में दिलचस्पी है । यह बहुत जरूरी सवाल था । जो माननीय सदस्य सवाल देते हैं वह बहुत मुश्किल से स्वीकार होता है और सरकार जवाब देती है । उसके बीच में अगर आप कहते हैं तो आपका नुकसान है । सलिये मैं कहता हूं कि प्रश्न के बाद सवाल उठायें । यह दूसरा पानी के बारे में है । इस पर मैं माननीय राज्य सम्पत्ति मंत्री का ध्यान आकृष्ट कर रहा हूं कि माननीय मंत्री इस सम्बन्ध में जानकारी हासिल करें और व्यवस्था करें ।

श्रम मंत्री (श्री राजमंगल पांण्डेय)—

मान्यवर, आज पानी की दिक्कत है इसकी जानकारी मुझे इसी सदन में मिल रही है । ऐसे ही 20 या 21 तारीख को 3–4 घंटे के लिये बन्द हो गया था और पानी नहीं मिल रहा था मशीन खराब हो गयी थी उसे ठीक कर लिया गया है ।

श्री अध्यक्ष—

लेकिन सदस्यों को आज भी कठिनाई है ।

श्री राजमंगल पांडेय—

पानी फ्लैटों म आता रहा । यह जरूर है 3–4 घंटे पानी की दिक्कत थी । बिजली की सप्लाई बन्द हो गयी थी ।

श्री अध्यक्ष—

पानी की व्यवस्था के लिये आप देख लें ।

श्री मलखान सिंह सैनी (जिला मुजफ्फरनगर)—

माननीय मंत्री जी ने कहा कि 3–4 घंटे पानी बन्द रहा । मान्यवर, पानी सुबह 9 बजे से रात के 10 बज तक नहीं आया । मैं तो महसूस करने लगा हूं कि जब किसी प्रश्न को टालना होता है तो श्री राज मंगल पांडेय उत्तर देते हैं ताकि प्रश्न को टाला जा सके ।

श्री रामायण राय—

माननीय सदस्यों को उनके निवास-स्थान पर जो सुविधायें उपलब्ध हैं, आपने मंत्री जी से कहा कि वे इसको देख लें । मेरा कहना यह था कि मंत्री जी ने कहा कि उन्हें जानकारी आज हुई है और एक दिन और हुआ है । यह एक असुविधा है इसलिये मेरा कहना है कि इस सदन के कुछ लोगों को बुलाकर पूछ लिया जाये तब सरकार से कहा जाये उसे दूर कराने के लिये तो मुनासिब होगा क्योंकि कठिनाई बहुत ज्यादा हो गयी है ।

[श्री रामायण राय]

जुलाई से लेकर आज तक कई बार पानी की ओर भी दिक्कतें हैं । मान्यवर, तो मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं कि जून से लेकर जब से यह सदन जारी हुआ है पानी की दिक्कत बराबर आये दिन हुआ करती है ।

श्री अध्यक्ष---

इस मामले की जिम्मेदारी सरकार की है ।

मुख्य मंत्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)---

अध्यक्ष जी, मेरा यह सुझाव है कि इस सदन में और इस सदन के सदस्यों की यह विधान परिषद् के सदस्यों की एक कमेटी हुआ करती थी जो इन सब कामों में हमेशा अपनी नजर रखती थी । मुझे ऐसा याद पड़ता है जब मैं पहले यहां था ऐसी एक कमेटी थी जो कि इन सब चीजों को देखती थीं । मेरा अनुरोध है कि एक परामर्श कमेटी इन दोनों सदनों की बना दें । उस कमेटी में उन्हीं मा० सदस्यों को रखा जाय जो सरकारी आवास में रहते हैं और जो बाहरी आवासों में रहती हों उनको उस कमेटी में न रखा जाय । वह कमेटी हफ्तेवार या जितने दिन मिलना चाहें उनके बारे में आपसे बात करते रहें । उस कमेटी में मंत्री भी शामिल रहेंगे । मुझे आशा है कि यह जो कठिनाई हमारी होती है उस कठिनाई की चर्चा आये दिन सदन में हुआ करती है, इसका असर बाहर के लोगों पर पड़ता है । इस कमेटी के द्वारा हमारे मा० सदस्यों की जो यह कठिनाई है वह खत्म हो जायगी ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी---

मान्यवर, एक बात विचारणीय है कि मा० सदस्य कहते हैं कि हमको 13 घंटे पानी नहीं मिला और मंत्री जी कहते हैं कि 3 घंटे पानी नहीं मिला । तो वह कौन से अधिकारी हैं जो मा० मंत्री जी को सही जानकारी न कराकर यह गलत जानकारी कराता है जिसके आधार पर आपने 13 घंटे के बजाय 3 घंटे की सूचना दी ।

श्री अध्यक्ष---

यह तो सुझाव है आपका ।

श्री राजमंगल पाण्डेय---

मान्यवर, इसमें मैंने पहले ही आपसे कह दिया कि उस दिन जो 20 तारीख को 3-4 घंटे पानी न मिल सका उसमें केमिकल दिक्कत की वजह से यह जो दारुलशफा में टंकी वगैरह है उसमें कभी-कभी पानी खत्म हो जाता है क्योंकि दारुलशफा में मा० सदस्यों के अतिथि जब ज्यादा आ जाते हैं और वह पानी अधिक गिराते हैं तो वह टंकी जो लगाई गई है खाली हो जाती है और फिर पानी चढ़ाने में दिक्कत हो जाती है तो इसलिए कभी-कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है इसलिए पानी की कमी हो जाती है ।

श्री मालखन सिंह सैनी---

मान्यवर, जब प्रश्न टालने के लिए होता है तो उसका उत्तर देने के लिए उसको पाण्डेय जी को दे दिया जाता है । मान्यवर, पाण्डेय जी का यह कहना है कि 3 या 4 घंटे पानी नहीं मिला तो उनको जिस अधिकारी ने यह गलत सूचना दी है अगर यह सूचना गलत है तो क्या उस अधिकारी के खिलाफ मा० मंत्री जी कार्यवाही करने की कृपा करेंगे ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा---

अध्यक्ष जी, मेरा एक निवेदन है कि जो दारूलशफा में अतिथि लोग आते हैं एम०एल०ए ज० के पास तो वह कहां जांय । उनके अतिथि तो आयेंगे ही । तो उसके निराकरण के लिए

हमको उन टंकियो बढ़ाना है । मेरी प्रार्थना है कि एक कमेटी बना दी जाय । वह कमेटी इस बात को देखेगी कि वाटर की कैपीसिटी पूरी है कि नहीं । उसको बढ़ाना है या कम करना है । इस सब बातों की जानकारी वह कमेटी करेगी । उसी कमेटी को देखने की जिम्मेदारी यह भी रहेगी कि कौन अधिकारी काम करता है ठीक से या कौन अधिकारी ठीक से काम नहीं करता है ।

श्री हरीश कुमार गंगवार--

क्या मा० मुख्य मंत्री जी इस बात को देखते हुए कि जिस प्रकार से प्रश्नोत्तर यहां पर हो रहे हैं और श्री राज मंगल पाण्डेय जी की ओर से उत्तर आ रहे हैं क्या ऐसी कोई व्यवस्था करेंगे कि उत्तर देने का जो कार्य है वह श्री राज मंडल पाण्डेय को न देकर किसी और को दे दें ।

(हंसी)

नेता विरोधी दल द्वारा सदस्यों के सदन के अन्दर तथा बाहर के अधिकारों तथा कर्तव्यों के सम्बन्ध में एक पुस्तिका छापने का सुझाव

*चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)--

श्रीमन्, मैं 2 सुझाव देना चाहता हूं । बहुत थोड़ा समय लूंगा । एक तो यह है कि एक छोटी सी पुस्तक आपकी ओर से प्रकाशित कराकर या आप उसे खरीद कर माननीय सदस्यों में तक्सीम करा दें । उसमें इस प्रकार के इन्स्ट्रक्शन्स हों कि जब वे यहां से उठ कर जायं आपको नमन करके जायं और जिस वक्त आप बोल रहे हों, खड़े होकर या बैठकर तो बीच में किसी माननीय सदस्य को इन्टरप्ट करने का अधिकार न हों । आप भी जिस पर आपकी निगाह पड़ जाती है उसे बोलने देते हैं लेकिन हमारे यहां यह गलती हो रही है । मेम्बर खड़ा हुआ और उसने जोर से आपको सम्बोधित करना शुरू कर दिया और जिसकी आवाज ऊंची हुयी, उसको आपने सुना तो फिर सदन में कम्पटीशन होता है कि किसकी आवाज ऊंची हो । आप इसको स्ट्रिक्टली एनफोर्स करें और माननीय सदस्य जो बोलना चाहें वे अपने-अपने स्थान पर खड़े हों और सबके साथ न्याय करें और जोर से आवाज करने वाला ही एडवान्टेज में न रहे । माननीय पुरुषोत्तम दास टंडन जी जब स्पीकर थे तो इस नियम का पालन बड़ी स्ट्रिक्टली होता रहा था । यद्यपि वे बहुत बुजुर्ग और कमजोर थे लेकिन उनकी आवाज बड़ी मजबूत और वे बड़े जोर से "सावधान" और 'आर्डर-आर्डर' कहते थे । उसके सुनते ही सदन में शांति छा जाती थी । मुझे स्मरण पड़ता है कि 1937 में जब चुनकर मैं आया तो अंग्रेजी की एक छोटी सी पुस्तिका थी, उसका नाम मुझे याद नहीं है, वह शायद यहां की लाइब्रेरी में थी, उसके बारे में मालूम करा लिया जाय और उसी प्रकार की एक पुस्तक छापवाकर बंटवा दी जाय । इससे आपको भी सहूलियत होगी और हम सब को भी सहूलियत होगी ।

दूसरे किसी भी माननीय सदस्य को आपकी ओर पीठ करके खड़ा नहीं होना चाहिये और न ही उन्हें फ्लोर को क्रास करना चाहिये । अगर किसी को दूसरी ओर जाना ही है तो उसे पीछे से जाना चाहिये । जैसे मान लीजिए कि मुझे माननीय त्रिपाठी जी से बात करनी है तो बजाय सामने से जाने के मुझे पीछे से जाना चाहिये । तो इस प्रकार की छोटी-छोटी बातें है, जिनका समावेश उस पुस्तिका में आप करा दें ।

दूसरा सुझाव मेरा यह है कि एक छोटी सी पुस्तिका आप इसी तैयार करा लें जिसमें आप यह स्पष्ट करा दें कि माननीय सदस्यों के अधिकार, या स्पेशल प्रिविलेज कौन-कौन हैं, कौन-कौन से मामले वे उठा सकते हैं और सदन में उनके क्या-क्या अधिकार हैं और सदस्यों के एक दूसरे के प्रति क्या उत्तरदायित्व हैं । उनके क्या विशेषाधिकार भी हैं, जैसे सदन में आते हुए सिविल वारन्ट द्वारा उनको गिरफ्तार नहीं किया जायगा । मुझे दुःख है कि मैंने मेज आफ पार्लियामेंट्री

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[चौधरी चरण सिंह]

प्रक्टिस नाम की जो पुस्तक है, उसे अनेक बार पढ़ा लेकिन आद्योपान्त आज तक नहीं पढ़ पाया हूं। समुद्र है, तो इतना कौन पढ़ेगा ? तो इसका मन्थन करके आप श्री एस० पी० सिंह की मदद लेकर, एक छोटी सी पुस्तक छपवा कर तकसीम करा दें। अगर ऐसा आप करा दें तो काम करने में बहुत ही सहूलियत हो जाय।

मुख्य मंत्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)--

माननीय नेता विरोधी दल ने जो सुझाव दिया है उसका मैं स्वागत करता हूं और उनको धन्यवाद देता हूं कि ऐल्डर स्टेट्समैन की भांति उन्होंने उसको हाउस गाइड करने का काम किया है। मेरी प्रार्थना है कि उन्होंने जो कहा है उसपर कार्यान्वयन करने पर आप अवश्य विचार कर लें। इस प्रकार की पुस्तकें बन जाना बहुत अच्छा होगा और इससे सारा सदन भी लाभान्वित होगा।

श्री अध्यक्ष--

जो सुझाव रखेंगे है वे बहुत अच्छे हैं एक छोटी पुस्तक तैयार हो जाय जिससे स्पष्ट हो सके कि आपके क्या-क्या अधिकार हैं। छोटी पुस्तक से सबको नियम की भी जानकारी हो जायगी और फिर सक्रियता और प्रभावशीलता बढ़ती है।

कार्य-स्थगन प्रस्तावों की सूचनायें (क्रमागत)

श्री अध्यक्ष--

अब दूसरा प्रश्न है 56 में कि "14-6-74 को आयुक्त बिक्री-कर, लखनऊ द्वारा एक परीक्षाफल घोषित किया गया है जिसके अनुसार पूरे प्रदेश में लगभग 400 सेवारत बिक्री-कर कर्मचारियों की सेवा मुक्त कर देने का आदेश प्रदेश के 10 क्षेत्रीय सहायक आयुक्तों को दे दिया गया है। जिस परीक्षाफल के अधीन के कर्मचारी निकाले जा रहे हैं ये परीक्षाएं अनियमित थीं"।

यह ऐसा विषय है कि इसपर वक्तव्य के लिये सरकार को कहा जाय। केवल वक्तव्य के लिए इसको स्वीकार किया है।

श्री ओमप्रकाश सिंह (जिला मिर्जापुर)--

धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष--

अब माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी का है। "कई महीने पूर्व से राज्य सरकार ने लखनऊ में शिया कम्युनिटी द्वारा अलमों तथा ताबूतों के निकालने पर प्रतिबन्ध लगा रखा है। इसके परिणामस्वरूप उनके अनेक परम्परागत धार्मिक कृत्य रुके हुए हैं। जब तक अलम तथा ताबूत नहीं निकल जाते तब तक शादी आदि के सम्पन्न होने में भी धार्मिक बाधा है।" यह तो पता मुझे नहीं है, लेकिन माधव प्रसाद जी का यह है। आगे कहते हैं कि अब आन्दोलन होने वाला है।

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)--

इस संबंध में इतना ही कहना है कि आपने जो इसकी विशेष चीज थी वह पढ़ दिया कि उन्होंने आन्दोलन प्रारंभ करने की घोषणा कर दी है। गतवर्ष हमने देखा कि कितना भीषण परिणाम हुआ। अगर अभी से कंट्रोल नहीं कर पाये और शांति व्यवस्था का उचित प्रबन्ध नहीं किया और धार्मिक कृत्यों से सम्पन्न होने में जितने फोर्स की आवश्यकता है उसका प्रबन्ध नहीं किया तो डर है कि वहां फिर मार-काट शुरू न होजाय जैसा कि पिछली बार हुआ।

श्री अध्यक्ष---

इसमें क्या होगा ? ध्यान आकृष्ट करने के लिए कि अविलम्ब कार्यवाही की जाय यदि आवश्यक हो, यह सरकार को प्रस्तुत है ।

मुख्यमंत्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)---

मान्यवर, जो प्रश्न माननीय त्रिपाठी जी ने दिया है उसके संबंध में कोई बयान देने की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि आपने स्वयं कहा । आपके द्वारा उनसे प्रार्थना करता हूं कि उनके दल का बड़ा जोर है शिया लोगों पर और इधर हाल में उनके बड़े-बड़े लीडरों ने, अखिल भारतीय स्टेचर के जो लीडर है उन्होंने उनका समर्थन किया है, तकरीरें फरमाई है शिया साहबान को इकट्ठा करके--- क्या मदऊ किया है, दावत दी है उनको इसलिए वह गये हैं । मेरी आपके जरिये उनसे प्रार्थना है कि वह स्वयं एक प्रकृति से शान्ति-प्रिय व्यक्ति हैं, स्वभाव से शान्त है, उनके शील और शान्त स्वभाव का प्रभाव उनके दल के उन सब लोगों पर पड़ सके । शिया लोगों को मान्यवर इस सरकार से कोई खतरा नहीं है, न हमने कोई फैसला ऐसा किया है कि जिसपर उनको गुस्सा आना चाहिये । एक झूठी सच्ची बात चलाई जा रही है कि कहीं कोई हमने कभी रोक दिया है या कुछ कर दिया है ।

पिछले शिया सुन्नी झगड़े के बाद खुद शिया सुन्नी साहबान ने जो लिख कर कलेक्टर को दे रखा है उसी पर कार्यवाही हो रही है । आप अगर कृपा करें तो कुछ नहीं होगा । 'आप' से मेरा मतलब आप अकेले से नहीं है । आपके दल के लोगों से है । आप तो शान्त रहें लेकिन मोहल्ले वाले नहीं रहने देते . . . ।

श्री ओम प्रकाश सिंह---

अब तो मंत्री जी सीधे आक्षेप कर रहे हैं ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा---

जी नहीं । नानाजी देशमुख ने भाषण दिया, स्वामी जी ने भाषण दिया । सिवाय माननीय प्रताप नारायण तिवारी के, जिन्होंने एक दिन मेरे पास लाकर शिया लोगों का डीलीगेशन मिलाया । मैंने तो उनसे भी कहा कि मुझे खुशी है कि सब धर्मों के आदर का भाव आप में आ रहा है । सिर्फ शिया के लिये नहीं, सुन्नी मुसलमानों के प्रति, सारे मुस्लिम समाज के प्रति सद्भावना आपमें जाग्रत हो रही है तो बड़ी खुशी की बात है, लेकिन इतनी ही प्रार्थना है कि ऐसा काम कीजिये जिससे अशान्ति न होने पाये । मुझे आशा है कि माननीय त्रिपाठी जी और दल का सहयोग हमें मिलेगा ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी---

मैं भी ऐसा समझता हूं कि कदाचित् माननीय मुख्य मंत्री जी को यह न मालूम हो । वह भी इस पहलू पर, मैं समझता हूं, शान्तिप्रिय हैं लेकिन उनका दल क्या करता है इसका अन्दाजा लगाये । बजाय इसके कि शान्ति व्यवस्था को कायम रखने की बात करते वह दल पर आ गये । इनको अकेले की ठेकेदारी तो है नहीं शान्ति कायम करने की, यह जिम्मेदारी सरकार पर है यह मैं मानता हूं । इस दृष्टि से मैं कह रहा हूं कि शान्ति व्यवस्था बिगड़ न जाय । पिछली बार बिगड़ी थी, अब भी न बिगड़ जाय, पहली बात । दूसरे, अगर कोई अपनी धार्मिक खोज करना चाहता है तो उसे करने का अवसर दिया जाय । इन्हीं दोनों बातों को ले कर मैंने कहा कि आप शांति व्यवस्था कायम करें । यह कार्य इनका है । लेकिन आप चले गये राजनीति में कि नानाजी ने भाषण दिया, देशमुख जी ने भाषण दिया । आपकी सी० आई० डी० ने सही सूचना दी, जरूर भाषण दिया । लेकिन क्या भाषण दिया यह आपने नहीं कहा । यह न सोचिये कि आप ही एक व्यक्ति हैं जो शान्ति व्यवस्था के सम्बन्ध में भाषण देते हैं और दूसरे आदमी

[श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी]

केवल उपद्रव करने के लिये भाषण देते हैं । यह तो बहुत बड़ी ज्यादती हो जायगी । मैं ऐसी आशा आपसे नहीं करता था । सैकड़ोंदंगे हुए लेकिन एक में भी हम लोगों का हाथ नहीं मिला । क्या मुझे अधिकार नहीं है कि उनके बारे में कुछ कहूं महज इसलिये कि मैं जनसंघ का हूं । अगर मैं उनके निकट जाता हूं तो आप कहते हैं कि यह उपद्रव के लिये कर रहे हैं और अगर दूर रहता हूं तो कहते हैं कि साम्प्रदायिक हूं । चित्त भी मेरी पट भी मेरी वाली बात हुई, यह तो ।

श्री अध्यक्ष---

एक हैं श्री जनार्दन प्रसाद ओझा का आजमगढ़ तथा बलिया जिले के यातायात तथा सहारस-पाली ग्रामों के हरिजनों पर उच्च जाति के हिन्दुओं द्वारा तथाकथित अत्याचार के बारे में है । इस पर आप अल्पसूचित प्रश्न करें ।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)---

इस पर सरकार से बयान दिला दें । आजमगढ़ में 15 जून को दिन दहाड़े हरिजनों की बस्ती पर हमला हुआ । दो आदमियों को तत्काल मार दिया गया और 5 आदमी अस्पताल में घायल पड़े हैं । ठीक उस से सटे बलिया जिले में ऐसी ही घटना हुई । मैं चाहूंगा कि सरकार से बयान दिलायें क्योंकि यह घटना इससे पहले भी वहां होचुकी है और 'हिन्दुस्तान टाइम्स" की जो रिपोर्ट है उसमें कहा गया है कि बेगार, जबर्दस्ती काम, लेना चाहते थे । हरिजनों ने बिना पैसे के काम करने से इन्कार कर दिया । इस पर दो आदमी मार डाले गये और 5 अस्पताल में घायल पड़े है । इसके बाद ठीक वैसी ही बलिया में घटना घट जाती है । पूरी हरिजनों की बस्ती जला दी जाती हैं । इसलिये मैं नम्र निवेदन करूंगा कि इस पर सरकार से वक्तव्य दिला दिया जाय ।

श्री अध्यक्ष---

अल्पसूचित प्रश्न आप करें । इसके बाद अगर प्रदेश व्यापी कोई बात आयेगी तो देखा जायगा ।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा---

जहां आग लगी है पहले उसे बुझाने की बात करें फिर प्रदेश की बात देखी जायगी ।

श्री अध्यक्ष---

अब एक प्रश्न माननीय सत्यपाल मलिक ने दिया है ---

"22-23 जून, 74 को इलाहाबाद में नौजवानों का एक सम्मेलन हुआ । सम्मेलन लोक-नायक श्री जयप्रकाश नारायण के नौजवान साथियों ने बुलाया था और माननीय जयप्रकाश जी न उसका उद्घाटन किया । श्री जय प्रकाश नारायण ने उद्घाटन भाषण में तथा फिर निजी बातचीत में मुझे बातया कि प्रदेश सरकार ने अनेक अनुचित तरीकों से सम्मेलन को विफल करने के प्रयास किये ।

श्री जयप्रकाश नारायण ने बताया कि जिन जिन सभाकक्षों के प्रबन्धकों ने पहले कहा था कि वे सम्मलन क लिये जगह देंगे, बाद में वे सब मुकर गये और कहा कि हम पर सरकार का दबाव है । खाने आदि के इंतजाम की जिम्मेदरी जिन पर थी वे भी मुकर गये और सरकारी दबाव की शिकायत की । यहां तक कि सरकारी डाक बंगले में श्री नारायण को ठहरने की स्वीकृति दी गई, बाद में मना कर दिया गया । यह बात श्री नारायण व उनके निजी सहायकों ने मुझे बतायी है ।"

लेकिन यह प्रश्न नियम 56 का विषय नहीं है यह औचित्य का हो सकता है ।

श्री सत्यपाल मलिक (जिला मेरठ)--

मान्यवर, यह सदन इसलिये नहीं है कि यहां बड़े घरों को लड़कियों के सिखाया जाय कि तुम इस तरह बैठो इस तरह बोलो इस तरह काम करो आदि । सूबे में जो घटनायें होती हैं, उन पर चर्चा करने के लिये यह सदन बैठा है । हम ऐसे सूबे के रहने वाले है जिस सूबे ने आजादी की लड़ाई में मुख्य भाग लिया । दुख तब हुआ जब इस सूबे की सरकार ने आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले पुरानी पीढ़ी के सबसे बड़े नेता श्री जयप्रकाश नारायण जी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया । जब किसी बात को इस सरकार का कोई मंत्री कहेगा और दूसरी ओर माननीय जयप्रकाश जी कुछ कहेंगे तो यकीनन मेरी पीढ़ी के लोग जयप्रकाश जी की बात का पहले यकीन करेंगे । उन्होंने मुझे साफ तरीके से यह बताया कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने उनके सम्मेलन को विफल करने का प्रयत्न किया । डाक बंगले में उनके ठहरने के लिये पहले इजाजात दे दी गयी थी, परन्तु जब वे ठहरने के लिये गये तो उनको वहां ठहरने से मना कर दिया गया । जिन-जिन हाल के मालिकों ले हाल का प्रबन्ध करने के लिये कहा गया था उनसे भी मना कर दिया गया । जिन लोगों ने आर्थिक सहायता देने तथा खाने पीने का इन्तजाम करने के लिये कहा था उनसे भी मना कर दिया गया । इस सूबे की सरकार जब इतने बड़े नेता के साथ इस तरह का गैर जनतांत्रिक और शर्मनाक व्यवहार करे तो यह बड़े सी अफसोस की बात है ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

मान्यवर, अगर माननीय जयप्रकाश नारायण जी का नाम न लिया गया होता तो सम्भवतः मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी । मलिक साहब और उनकी पीढ़ी के लोग जिस तरह का दावा करते हैं, हम लोग भी उनकी उतनी ही इज्जत करते हैं, हमने उनके साथ काम किया है जेल में उनके साथ यातनायें सही हैं, उनके निर्देशन पर हम आगे बढ़े हैं, यह बात दूसरी है कि आज उनके और हमारे दृष्टिकोण में कुछ अन्तर है।

मान्यवर, मैं आपसे स्पष्ट कहना चाहता हूं कि जिस किसी ने भी जयप्रकाश जी को यह बात बतायी है वह सही नहीं है । मैं यह बात मानने को तैयार नहीं हूं कि माननीय मलिक जी जो बात कह रहे हैं वे अपने मन से कह रहे हैं या वह असत्य है । मैं यह कहना चाहता हूं कि जो बात जयप्रकाश नारायण जी को बतलायी गयी है वह गलत है । मेरे एक कांग्रेस के एम0एल0सी0 श्री पी0 डी0 टंडन ने मुझे एक पत्र लिखा जिसमें लिखा कि जयप्रकाश जी जब कभी आते थे तो हमेशा मेरे यहां ही ठहरते थे, इस वक्त भी मेरे यहां ही ठहरेंगे । यह खत जो उन्होंने मुझे लिखा मेरे पास मौजूद है । आप भी देख सकते हैं यह पत्र मेरे पास है । तो कहना कि हमने कोई रुकावट डाली उनके ठहरने में यह गलत बात है। यह तो टंडन जी और जयप्रकाश जी का व्यक्तिगत संबंध ऐसा है जिसके कारण उन्होंने मुझे यह पत्र लिखा कि वे उनके यहां ठहरेंगे जिस तरह वे जिस जगह मीटिंग कर रहे थे वह जगह और उनका घर शायद आमने सामने ही है। बस इतनी ही खबर मुझे है, इसके अलावा मुझे और कोई खबर नहीं है । किस तरह से मलिक साहब कह रहे है। मैं भी दावे के साथ कह रहा हूं कि उनके ठहरने आदि के मामले म कोई किसी प्रकार की रुकावट नहीं डाली गयी । यह बात अगर किसी भी समय, किसी भी तरह से सत्य हो जाय तो आप बड़ी से बड़ी सजा मुझे दे सकते हैं, मैं उस सजा को भुगतने के लिये तैयार हूं ।

श्री राम सेवक यादव (जिला बाराबंकी)--

सरकारी बंगला जो एलाट किया गया था वह बाद को क्यों कैंसिल कर दिया गया ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

कैन्सिल करने का प्रश्न नहीं है, उसके लिये तो हमारे कांग्रेस के ही एक एम0एल0सी0 श्री पी0 डी0 टंडन ने मुझे एक पत्र लिखा कि वे उनके यहां ठहरेंगे मुझे यह भी नहीं मालूम कि वे उनके यहां ठहरे या नहीं

श्री सत्यपाल मलिक—

वहीं ठहरे।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

तो ठीक है, एक कांग्रेस वाले के यहां ही तो ठहरे, वे उनके पुराने मित्र है। मैं अगर इलाहाबाद में होता तो मैं भी उनसे जरूर मिलता।

जय प्रकाश नारायण जी के प्रति आदर की भावना किसी के हृदय में कम नहीं है। इसमें दो राय नहीं है। पर यह जरूरी नहीं है कि यदि हम किसी का आदर करें तो उसके विचारों का भी आदर करें। आदर और विचार अलग-अलग चीजें हैं। चूंकि आपने आदर दिखाया है इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यह बात सही नहीं है कि हमारी तरफ से कोई निषेधाज्ञा या किसी तरह की ज्यादती हुयी है। इस तरह की कोई बात नहीं है।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो कहा है वह सही कहा है। लेकिन कहना यह चाहिये था कि जयप्रकाश नारायण के प्रति उनकी बहुत आदर की भावना है और जब हम किसी व्यक्ति के प्रति अपनी आदर भावना का प्रकाश करते हैं तो दरअसल एक प्रकार से हम अपना आदर करते हैं। लेकिन यहां पर मलिक जी ने जो बातें कहीं वह अपनी नहीं कहीं। उन्होंने यह कहा कि जय प्रकाश नारायण जी का स्वयं यह ख्याल है और उधर बहुगुणा जी ने कहा है कि उन्होंने और गवर्नमेंट ने उनके खिलाफ कोई मौका नहीं दिया तो मैं आपको एक सुझाव दे सकता हूं कि आप उनको एक चिट्ठी लिखें कि उनके जो ख्याल हैं ऐसी कोई बात नहीं है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैं आज ही पत्र लिखूंगा और साथ में श्री पी0डी0टंडन का पत्र लगा दूंगा।

श्री सत्य पाल मलिक—

माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो यह बात कही कि सदन का हर सदस्य सच बोलता है, यह उत्साह वर्धक है। फिर भी जय प्रकाश नारायण जी ने यही कहा था कि बहुगुणा जी को मेरे यहां आने से भयभीत होने की जरूरत नहीं है। मैं उत्तर प्रदेश में आग लगाने नहीं आ रहा हूं फिर भी मेरे यहां आने और सम्मेलन को विफल करने के लिये क्या-क्या किया गया। उन्होंने मेरे सामने और दूसरे सदन के 4 सदस्यों की मौजूदगी में यह बातें कीं। तो मेरा यह निवदन है कि जय प्रकाश नारयण जी बिल्कुल कैटेगोरिकल थे और उन्होंने बड़ी मजबूती के सा यह बातें कहीं हैं। तो मैं कहना चाहता हूं कि आप अपनी गवर्नमेंट की तरफ से जय प्रकाश नारायण जी से माफी मांग लें।

श्री अध्यक्ष—

मुख्य मंत्री, नेता सदन ने और नेता प्रतिपक्ष ने यहां सब बातें कह दी हैं तो अब आगे चलना चाहिये। अब इस बात पर कोई बहस नहीं है, जो कुछ कहना था वह हो गया है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश (जिला वाराणसी)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, जय प्रकाश नारायण जी के सम्मेलन को विफल करने के लिये...

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

अब आपको बोलने की आवश्यकता नहीं है। अब हम आगे चलते हैं।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)—

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। पिछली बार भी मैंने एक व्यवस्था का प्रश्न किया था कि नियम 56 के अन्तर्गत अगर 100 प्रस्ताव पेश किये जायेंगे और उनको पढ़ा जायगा तो सदन का 2–3 घंटे का समय जाया होगा। इसके लिये या तो आप विधान सभा नियमावली में तब्दीली करें या फिर कार्य-स्थगन प्रस्ताव पर आप सही सुझाव दें। इसको आदरणीय सदन के सामने रखा जाय।

श्री मुहम्मद असरार अहमद (जिला बदायूं)—

मान्यवर, मेरा भी एक व्यवस्था का प्रश्न है कि क्या माननीय सदस्य आपको राय देंगे और क्या आप उनकी राय के मुताबिक ही काय करेंगे।

(कई सदस्यों के साथ-साथ बोलने से शोर)

श्री काशी नाथ मिश्र—

विधान सभा नियमावली है जिसमें नियम 56 में दिया है कि आपको क्या अधिकार हैं और मादनीय सदस्यों को क्या अधिकार ह। बिना आपकी अनुमति के एक भी वाक्य अधिक बोलने का सदस्यों को अधिकार नहीं है। यह भी आवश्यक नहीं है कि आप सारी सूचनाओं को पढ़कर सुनायें। इसमें समय अधिक लगता ह। इस प्रकार आप 56 नियम को संशोधित करें।

श्री अध्यक्ष—

मैं पूर्व में व्यवस्था दे चुका हूं। नियम जीवन के लिये होते हैं। जो यह मार्ग-दर्शन पुस्तक है उसके अनुसार काम करना चाहिये। अब जो शब्द लिखा है उसके अनुरूप कार्य न हो यह अगर माननीय काशीनाथ मिश्र को भ्रम हो गया है तो उसका निवारण होना चाहिये। मुझको एक अध्यापक पढ़ाते थे जो बहुत ही अच्छे थे। वह समय से स्कूल आते थे। वह हमेशा घड़ी से काम करते थे। वह अंग्रेजी भी अच्छी पढाते थे। वह बारिश में हमेशा छाता कंधे पर रखकर आते थे। अगर बारिश इधर से होती थीं तो हम लोग कहते थे कि छाता एसा कर लीजिये क्योंकि पानी से भीग रहे हैं। मास्टर साहब तुरन्त जवाब देते "छाता लगाने का कायदा तो यही है"। चाहे भीग जायें लेकिन कायदा न टूटे। इसी प्रकार माननीय काशीनाथ मिश्र जी कहेंगे कि कहीं विधान सभा न टूट जाय तो नियमों को ऐसा कर लीजिये। ऐसे लोगों से सावधान रहना है। क्योंकि पहले लोकतंत्र का सार और लोकतंत्र का शरीर-शरीर और प्राण दोनों की रक्षा का जिस तरह उपक्रम के जरिये हमारे दिमाग में जब कोई राय ऐसी सुनिश्चित व्यबस्था को प्राप्त होती है तो उस ढंग से यदि विधान सभा का कार्य हो तो कार्य बहुत सुचारु रूप से चलेगा। उस चीज का अनुसरण मैं करता हूं। लेकिन सबसे मुख्य बात है कि यह विधान सभा तो जन-इच्छाओं तथा लोक मत को सामने रखकर विचार करती है। लोकमति और लोक सम्मति का अधिष्ठान यह उत्तर प्रदेश की विधान सभा, कसे यह सब बने उस ओर हमारा प्रयास होना चाहिये। तो माननीय काशीनाथ मिश्र यह बराबर सवाल उठाते हैं। मैं उनकी बुद्धि की प्रखरता और प्रचंडता का हामी हो जाऊंगा यदि वह बुद्धि से सारे हिसाब को ठीक कर दें और उसी हिसाब से इस सारे सदन की व्यवस्था करने में प्रेरणापूरक शुभ वातावरण बनाने की शक्ति का प्रदर्शन करें, तो इससे मुझे काशीनाथ मिश्र जी से अधिक प्रसन्नता होगी।

चौधरी चरण सिंह--

अध्यक्ष जी, अगर आप माफ करें तो मैं कहूं कि आज सरस्वती आपकी जवान पर बैठी हुई है।

श्री अध्यक्ष--

'आज' शब्द पर मुझे एतराज है ।

चौधरी चरण सिंह---

इसलिये कि इतने ऊंचे विचार सुनने को नहीं मिलते । इस स्थूल शरीर में एक नियम है 315 जिसमें आपको पूरा अधिकार हासिल है । इस पर आपको माननीय सदस्य का ध्यान आकर्षित करने के लिये कहना चाहिये था ।

श्री अध्यक्ष---

कुछ काम तो नेता विरोधी दल का भी तो होना चाहिये ।

1974-75 के आय-व्ययक पर सामान्य विवाद (क्रमागत)†

मुख्य मंत्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)--

अध्यक्ष जी, प्रस्तुत बजट के संबंध में माननीय नेता विरोधी दल, अन्य दलों के नेताओं और अन्य माननीय सदस्यों ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनके लिये मैं उनका अनुग्रहीत हूं । विचार, मान्यवर, जब वह स्पष्ट भी हों और व्यक्त किये जायं तो स्पष्टता लाने का अवसर मिलता है और इस कारण जहां कहीं भी हमारे इस बजट के संबंध में कोई धारणा ऐसी बन गई है या स्वराज्य के बाद पिछले 26 सालों के क्रियाकलापों के संबंध में संदेह प्रकट किये गये हैं तो इस अवसर पर मैं उन संदेहों के निवारणार्थ जो कुछ भी तर्क प्रस्तुत कर सकता हूं उसको करने की कोशिश करूंगा।

माननीय नेता विरोधी दल का बुनियादी तर्क यह था कि बड़ी भूल हुई है योजना की स्ट्रेटिजी में, योजना की आधारशिला गलत रही है। अगर हमने एग्रीकल्चरखती को प्रमुख स्थान दिया होता तो हम मुश्किल में नहीं पड़ते । और मुश्किल में ही नहीं, उनका एग्रीकल्चर के ज्ञान के सिलसिले में देश में किसी को शुबहा नहीं है, उन्होंने यह भी कहा कि कितनी बार कहर पड़ा इस देश में, आपने बड़े पहले के गिनाना शुरू किया, इतनी बुरी हालत न हुई होती जितनी बुरी हालत में भारत आज पहुंच गया है। मान्यवर, जहां तक उनकी बातों का स्मरण होता है उन्होंने यह भी कहा कि जवाहरलाल जी ने मरने के पहले सन् 1963 में इस भूल को स्वीकार कर लिया था, बेचारे मर गये नहीं तो सुधार हो जाता । उस सिलसिले में उन्होंने पंडित जी के भाषण की चर्चा की जो नेशनल डेवलपमेंट कौंसिल में पंडित जी ने सन् 1963 में देने की बात कही थी । मैं मान्यवर, दो-तीन बातों की ओर चौधरी साहब का ध्यान अर्काषित करना चाहता हूं आपके द्वारा । वह मुझसे पहले से कांग्रेस में, स्वराज्य की लड़ाई में, स्वतंत्रता संग्राम के एक बड़े सेनानी रहे हैं,मैं तो बहुत छोटा सा सिपाही, स्वराज्य की लड़ाई में आखिरी पेज में शामिल हुआ था, रहा हूं । करांची कांग्रेस में मैं तो नहीं गया था क्योंकि मैं उस समय नाबालिग था ।" तो मेरी पूरी आशा है कि चौधरी साहब वहां गये होंगे । करांची के अधिवेशन में जो आर्थिक प्रस्ताव सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में महात्मा गांधी जी की उपस्थिति में प्रस्तुत किया गया अगर वह हमारी स्ट्रेटिजी के विपरीत हो तो तराजू में तौलकर देखें कि गांधी जी और जवाहर लाल नेहरू के बीच में विचारों का फर्क था या नहीं । मैं बड़े अदब के साथ कहना चाहता हूं कि चौधरी साहब ने

---

†21 जून, 1974 की कार्यवाही से।

बतलाया कि उन दोनों के परस्पर विरोधी भाव थे । मेरा कहना है कि सरदार बल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता और गांधी जी की उपस्थिति में फंडामेंटल प्रस्ताव करांची अधिवेशन में पास होता है जिसमें लिखा जाता है कि स्वराज्य आयेगा तो क्या-क्या होगा, अर्थ व्यवस्था कैसी होगी । उससे निकाल कर अगर चौधरी साहब बताते और कहते कि उसमें नहीं लिखा था कि मिनरल्स को राज्य सम्पत्ति बनना होगा, लोहे को राज्य सम्पत्ति बनना होगा । गांधी जी ने बराबर यह जोर दिया कि बड़े उद्योग, खान खदानें ही नहीं बल्कि बड़े उद्योगों को निजी क्षेत्र में नहीं सार्वजनिक क्षेत्र में बनाना होगा । अगर इस तथ्य के विपरीत जवाहरलाल जी ने आचरण किया होता तो मान लेते कि भूल हुई । सन् 48 में इंडस्ट्रियल पालिसी रैज्यूलूशन पास हुआ । ठीक है, सन् 1961–62 में पंत जी को या जवाहरलाल जी को लिख कर दिया होगा।

मैं चौधरी साहब की किताब लाया हूं । जो आज वह कह रहे हैं यह उसमें नहीं है । नागपुर अधिवेशन की बात याद आती है । उनके मन में तो जो हुआ था उसके बाद यह पुस्तक प्रकाशित की थी और हमने उसे देखने की चेष्टा की और कुछ याद रखने की भी कोशिश की । सन् 48 के इंडस्ट्रियल पालिसी रैज्यूलूशन से चौधरी साहब की एक राय थी और अगर नहीं थी तो क्या उन्होंने दूसरी राय दी । मैं शिकायत नहीं करूंगा कि उन्होंने दूसरी राय क्यों नहीं दी । लेकिन अगर 25 साल बाद या 50 साल बाद भी कोई गलती दिखाई दे तो बताना चाहिये । मेरा तर्क यह नहीं है कि गलती आज क्यों बता रहे हैं । मेरा तर्क यह है कि बदकिस्मती या खुश किस्मती से कांग्रेस कुछ वायदे स्वराज्य के पहले, स्वराज्य के बाद संविधान और प्रस्तावों के द्वारा करती आयी है । अगर उसने उन वायदों की पूर्ति नहीं की है तो हम जरूर दोष के भागीदार हैं । 48 के रैज्योलूशन में सरदार बल्लभ भाई पटेल के जीवन काल में लिख दिया गया था । सरदार बल्लभ भाई पटेल का नाम मैं इसलिये बार-बार ले रहा हूं क्योंकि माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी का दल सरदार बल्लभ भाई पटेल को हमसे चुराना चाहता है, मुझे माफ करेंगे इस शब्द के इस्तेमाल के लिये, उनके जीवन काल में प्रस्ताव पास हुआ था । उसमें उद्योग और कृषि के रिश्ते के बारे में लिखा हुआ है, लोहे और खदानों के बारे में लिखा हुआ है । एक स्पीच भी ऐसी नहीं है कि जो फैजपुर कांग्रेस में दी हो, कराची रैज्यूलूशन पर बोलते हुए दी हो या हर प्लान पेश करते हुए दी हो जिसमें कि पंडित जी ने एग्रीकल्चर के महत्व को स्वीकार न किया हो । प्रश्न यह है कि एग्रीकल्चर कैसे फैले । चौधरी साहब की थीसिस है कि पहले एग्रीकल्चर फैले, फिर उससे सरप्लस फैलेगा, फिर वह सरप्लस इंवेस्ट होगा और इस तरह से ताकत आयेगी ।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

आप इंकम्पलीट स्टेटमेंट दे रहे हैं । मेरी थीसिस यह है कि महात्मा जी का यह विचार था कि बड़े-बड़े उद्योग धंधे बहुत कम होने चाहिये। उतने हो और वे हों जोकि छोटे पैमाने पर न किये जा सकते हों। लेकिन 10 प्रतिशत बड़े स्केल और 90 प्रतिशत छोटे स्केल के कारखाने हों और बड़े कारखाने और छोटे कारखाने और काटेज इन्डस्ट्रीज साइड-बाई-साइड एग्जिस्ट करें। करांची रिज्यूल्यूशन और 1948 में रिज्यूलूशन में इसका जिक्र नहीं है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, इंटरप्रिटेशन में तो बात भिन्न हो सकती है, लेकिन शब्दावली तो वही है, जो दी हुई है । जो मेरी कैपेसिटी है, जो मेरी समझ है, उसको आपके सामने प्रस्तुत करता हूं । सन् 1948 का रिज्यूलूशन हो या 1956 का हो, कोई भी रिज्यूलूशन हो औद्योगीकरण के सिलसिले में पहली योजना, दूसरी योजना और तीसरी योजना, तीनों योजनाओं का उद्देश्य यही था । शब्दावली में फर्क हो सकता है 90 प्रतिशत न करांची में

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुण]

न 1948 के रिज्यूलूशन में और न ही गांधी जी की रायटिंग में मिलता है। गांधी जी 90 प्रतिशत कैसे कह सकते थे ? उनको पहले से ही कैसे मालूम हो जाता कि कितना हमको डिफेंस के लिये बनाना पड़ेगा, क्या हैवी इंस्ट्रीज का परसेंटेज होगा, कितने बार चीन हमला करेगा कितने बार पाकिस्तान हमला करेगा और देश की सुरक्षा के लिये इंडस्ट्रियल बेस कैसे बनाना होगा ?

चौधरी चरण सिंह---

मान्यवर, मैंने 90 प्रतिशत और 10 प्रतिशत फाइनेंशियल एलोकेशन के बारे में नहीं कहा । मैंने कहा कि 90 प्रतिशत एकोनामिक एक्टिविटी छोटे गांवों हो, न कि 90 प्रतिशत फाइनेंशियल एलोकेशन के लिये कहा हो ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा---

मान्यवर, मैं तो इस वक्त यही कहूंगा कि जो स्ट्रेटिजी अपनायी गयी, उसमें एग्रीकल्चर को इगनोर नहीं किया गया, सपोर्ट किया गया । पहली प्लान से लेकर जितनी भी कंटीन्यूड स्कीम थीं, उसमें यही प्रयास था । अगर खेती की तरक्की करनी है तो फर्टिलाइजर लेना होगा । खेती की तरक्की करनी है तो एर्रीगेशन बढाना होगा । खेती की तरक्की करनी है, तो बिजली बढानी होगी । खेती की तरक्की करनी है तो नये बिजली के एक्सपेरीमेंट्स करने होंगे और बड़े-बड़े इंस्टीट्यूशन खोलने होंगे । और हमारे चौधरी साहब ने भी इस बात को माना है कि किस प्रकार खेती के बड़े-बड़े इम्प्लीमेंट्स खेत में परिवर्तन कर देते हैं और हर आदमी की उत्पादकता को बढा देते है । इन्हीं सारी बातों को दृष्टि में रख कर ही प्लानिंग कमीशन ने इन बातों की ओर ध्यान दिया । कीड़े मारने की दवा बनानी हो तो उसमें फर्टलाइजर से कीड़े मारने की बात आ जाती है । धरती के पेट से पानी निकालना हो, तो उसमें इंजीनियरिंग का पूरा-पूरा कम्प्लेक्स आ जाता है । कुएं बनाने के लिये ईटें हैं, उसके लिये रेलगाड़ी से कोयला लाने और ईट पकाने की बात आ जाती है । माननीय चौधरी साहब मेरी बात समझ रहे हैं । मैं अनुभव में उनसे कम हूं । इसलिये पूरी-पूरी जरूरत भी नहीं लगती होगी क्योंकि इतना बोल रहा है लेकिन एक दायित्व है...

श्री राम सेवक यादव (जिला बाराबंकी)---

लेखा-जोखा थाहे फिर लड़का बूढ़ा काहे

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा---

उसका जवाब दे दूं । लड़का बूढ़ा नहीं है । बिलकुल मौजूद है । उस पर आऊंगा । चौधरी साहब ने बुनियादी बातों पर बहस का ढांचा खड़ा किया । मैं भी अपना दृष्टिकोण रख दूं और जो कुछ मेरे पास मसाला है उसे अर्पित कर दूं । अगर खेती को बढ़ावा देना है तो चाहे कृषिनाशक दवा हो, चाहे फर्टिलाइजर हो चाहे मेसनरी वेल के लिये कोयले का मूवमेंट हो हमको सारे के सारे कामों के लिये इंडस्ट्रियलाइजेशन की तरफ जाना होगा । इसके अलावा दूसरा काम सुरक्षा का आ गया । और आप को सुरक्षा रखनी है तो दूरदर्शी जवाहर लाल को दिखाई पड़ा था कि हमें अपने हथियारों से लड़ना होगा और इसीलिये नेट जहाज ने सेबर जेट को गिरा दिया । अब नेट को बनाने के लिये जो इंडस्ट्री काम्प्लेक्स खड़ा करना होगा वह एक जगह और एक तरह से नहीं खड़ा हो सकता । उसके लिये स्टील चाहिये, अल्यूमीनियम चाहिये तरह तरह के छोटे-छोटे मिनरल्स चाहिये । इसकी पूरी खोज कैसे हो इसे उस महान दृष्टा ने देखा था । खेती के लिये दूसरी जरूरी चीज है तेल की और उसके लिये नेचुरल गैस कमीशन की भी उसी समय स्थापना की गयी और उसके लिये ओ०एन०जी०सी०पर इंन्वेस्टमेंट किया गया । आटम के तोड़ने की ताकत आ गयी

और अखबारों में सूचना मिली है कि हाइड्रोजन को भी शायद पकड़ लें। उसकी प्रसन्नता है लेकिन उसकी खोज के लिये जवाहरलाल जी ने ही श्री गणेश किया था और ट्राम्वे में काम शुरू हुआ। तो उसके ऊपर यह चार्ज लगाना कि पंडित गांधी जी के रास्ते से हटा यह गलत है।

जवाहर लाल के खिलाक उनके जीवन में भी यह बात कही गयी थी लेकिन गांधी जी के कान बहुत मजबूत थे। अगर कमजोर कान वाला गांधी होता तो जो महान नेतृत्व देश को मिला वह गड़बड़ हो जाता। सरदार पटेल को, कृपालानी को और राजेंद्र बाबू को गांधी ने नहीं कहा कि वे मेरे उत्तराधिकारी होंगे। गांधी ने कहा कि जवाहरलाल मेरा सक्सेसर है। गांधी जैसे शख्स ने अगर इसमें गलती की तो मेरे जैसे लोगों ने भी बहुत बड़ी गलती की चौधरी साहब को हक है कहने का गांधी गलत, जवाहरलाल गलत, सरदार पटेल गलत। अब सही कौन मैं तो उसे जान नहीं सकता। मैं अपनी गलती को मानने को तैयार हूं चौधरी साहब के मुकाबले में लेकिन चौधरी साहब व गांधी जी के बीच में निर्णय लेना हो तो मैं गांधी जी को स्वीकार करूंगा, चौधरी साहब को स्वीकार नहीं करूंगा।

चौधरी साहब ने चार्ज यह लगाया कि उद्योग पर हमने अपना ध्यान ज्यादा केंद्रित किया इसलिये गड़बड़ हुई। यह चार्ज सही नहीं है। चार्ज यह होना चाहिये था कि स्टील फैक्टरी लगाई लेकिन स्टील रेटेड प्रोडक्शन नहीं हुआ। यह चार्ज लगाया गया होता तो मैं उसे स्वीकार कर लेता। यह कमजोरी जरूर रही कि रेटेड केपसिटी पर स्टील पैदा नहीं हुआ। मजदूर, उद्योग तथा सरकार की व्यवस्था का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कि सरकार ने गलत नीतियां बनाईं। स्टील में पैदावार क्या है? कोई नई अथारिटी बना दी। आपने स्टील अथारिटी लिमिटेड आफ इंडिया की चर्चा की। आपने कहा कि अपनी कमजोरी देखें। कुछ न कुछ नई चीज आप पेश कर देते ह जो कि हम बड़े उलझाव में डाल देती है। चौधरी साहब मेरा निवेदन यह है कि भारत की जितनी भी स्टील रेटेड कैपेसिटी है अगर वह पूरी की पूरी पैदा भी हो जाय तो भी वह उससे ज्यादे की हमें जरूरत है। चौधरी साहब को ज्ञात होगा कि चीन ने जितने भी छोटे-छोटे स्टील के कारखाने चलाये थे वे सब बन्द हो गये। मैं इस बहस में नहीं जाना चाहता और न मैं चाइनालोजिस्ट ही हूं। अभी हाल ही में क्वालालम्पुर से एक आर्टिकिल हरीश चन्दोला का चीन की आर्थिक स्थिति के बारे में निकला था उसे आपन भी देखा होगा। तो आज उसने भी गांधीजी की बहुत सारी बात को मानना शुरू कर दिया। सब पूछिये तो चीन की वही स्थिति है जैसे कमल के पत्ते में पानी की बूंद लुढ़क रही हो और वह अस्थिर हो। उस नेतृत्व ने आज सारे विश्व को खतरा पैदा कर दिया है। उनकी कोई चीज नकल करने के लायक नहीं है। तो आज चीन भी छोटी इन्डस्ट्री लगाने के खिलाफ है।

चौधरी चरण सिंह--

आज से नहीं काफी पहले से है। यह मुझे मालूम है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

दुख तो इसी बात का है कि मालूम तो आपको सब कुछ है और आप इन मेनी केसेज मूविंग इन्साक्लोपीडिया हैं किन्तु निर्णय आपके गलत हो जाते हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि जानकारी सही होने पर आप निर्णय भी सही दें। यह क्या बात है कि जानकारी सही होने पर, निर्णय गलत। यह एक अजीब सा जजमेंट है। ऊपर से नीचे तक जो जजमेंट है वह दूसरा ही है लेकिन अन्त में परवर्स फाईंडिंग्स आन दि रिकार्ड।

मान्यवर, अब मैं फैक्चुअल बातों के बारे में कहना चाहता हूं। चौधरी साहब ने कहा कि जो भुखमरी यहां किसी जमाने में थी प्लैन के जमाने में और भी खराब हालत हो गई। आप यह देखे कि पर कैपिटा कन्जम्पसन भी देखें। चौधरी साहब उस आंकड़े को मुझे

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

दे दें मैं देखूंगा। पर कैपिटा कन्जम्पशन जो खाद्यान्न का है वह इस देश में ज्यादा हुआ है या नहीं। वह बढ़ा है। तो इसके माने यह है कि हमारी हालत बेहतर हुई है। यह जरूर है कि हमारा उत्पादन पूरा-पूरा नहीं आया है। सच बात तो यह है कि हम खेत से जितना पैदा करना चाहते थे और जितना पैदा हो सकता था वह अभी तक नहीं हो पाया है।

श्री राम सेवक यादव—

आपने पर कैपिटा कन्जम्पशन आफ फूड के बारे में बताया लेकिन जो लोयेस्ट कन्जम्शन है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

इस सम्बन्ध में आप नेशनल सैम्पुल सर्वे रिपोर्ट को देख लीजिये। मैं नेशनल पारस्पेक्टिव की बात कह रहा हूं। मेरी चौधरी साहब से प्रार्थना यह है कि प्लानिंग के सिलसिले में और खेती के सिलसिले में जो भी उनके विचार है लेकिन एक बात याद रखें कि वे जितने ही उद्योग और बड़े उद्योग के खिलाफ जायेंगे उतने ही हमारी खेती और डिफेन्स में कमजोरी आयेगी और दोनों काम चौधरी साहब के लिये प्रिय नहीं हो सकते। क्योंकि मैं जानता हूं किउस समय उन्होंने कहा था कि तिब्बत को माना ही क्यों।

चौधरी चरण सिंह—

दोनों में कंट्राडिक्शन है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

कन्ट्राडिक्शन नहीं हैआप देख लीजिये। हमारे देश की अपनी प्रतिष्ठा है। आप मंत्री रहे हैं। आपने बहुत कोशिश की, सख्ती भी की, मुलायमियत भी की, फिर भी रेवेन्यु डिपार्टमेंट को आप जैसे महापंडित होते हुये भी भूमि के बंटवारे में जो जमीन भूमिहीनों को आप दिलवाना चाहते थे, उसमें आपको कठिनाई हुई, उसमें आप सफल नहीं हुये। तो जो फैक्ट्री में काम करने वाले कर्मचारी लोग हैं—रेटेडकैपिसिटी क्यों नहीं आई ? तो क्या हम यह करें कि तब तक काम को आगे न बढ़ाओ जब तक सब कर्मचारी शुद्ध न हो जायें, तब तक कोई काम आगे न बढ़ाया जाये। यह सम्भावना नहीं हो सकती थी, न है। हमने अपनी गलत प्लान में जो किया वह बता दूं। पहली योजना का लक्ष्य विद्युत् एवं सिंचाई—सम्मिलित कृषि की सर्वोच्च 'प्रार्थमिकता थी। दूसरा था, पूर्व से प्रारम्भ योजनाओं को पूर्ण करना। तीसरा था, औद्योगिक विकास की गतिशीलता बनाये रखना। चौथा था कृषि एवं उद्योग एक दूसरे के पूरक हैं। यह पहले प्लान में है, जो मैं नम्र निवेदन कर रहा हूं। इस पर आपका भी दस्तावेज है। मैं नेशनल परस्पेक्टिव में पढ़ रहा हूं। कृषि एवं उद्योग एक दूसरे के पूरक हैं—इसके सन्तुलन को बनाये रखना। पांचवा था, प्रारम्भिक आवश्यकताओं—जैसे विद्युत एवं संचार हेतु आवश्यक साधन जुटाना। चौधरी साहब छठां बड़ा इम्पाटन्ट है—ऐसी मूलभूत औद्योगिक इकाइयों के निर्माण हेतु कार्यवाही प्रारम्भ करना, जैसे कि इस्पात एवं लोहा, भारी रसायनिक पदार्थ (केमिकल इंडस्ट्री), विद्युत् उपकरणों का निर्माण (हैवी इलेक्टिकल्स)। संक्षेप में ऐसे उद्योग, जिनके बिना विकास हो ही नहीं सकता। तो ये पहली योजना के उद्देश्य और लक्ष्य हैं। आप कह रहे हैं थे कि हम इससे हट कर भाग गये। दूसरी में क्या किया, यह मैं बताये दे रहा हूं। (चौधरी चरण सिंह द्वारा बोलने का प्रयास करने पर) मैं बैठा जा रहा हूं, मैं आपको बेचैन नहीं देख सकता हूं।

चौधरी चरण सिंह—

मैं चाहता हूं कि आप सही बात हाउस को बतायें। सवाल यह है कि पहली प्लान में 37 परसेंट एग्रीकल्चर पर रुपया रखा गया था और 5 परसेंट इंडस्ट्रीज पर रखा गया था। जबिक उसके बाद की प्लान में इंडस्ट्रीज पर 5 परसेंट से बढ़ाकर 24 परसेंट और एग्रीकल्चर पर 37 परसेंट से घटाकर 21 परसेंट हो गया, इसकी क्या वजह थी? इसको आप स्पष्ट कर दें कि क्या यह सही नहीं है और क्या यह आवश्यक था? और यह जो आप पढ़ रहे हैं, यह सब तो महालनबीज का है। वह पहला वाला तो ठीक है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

पहले सिर्फ उद्देश्य। उसके बाद उद्देश्यों और लक्ष्यों की पूर्ति और फिर कार्यवाही। यही बताना मेरा मतलब था। आपका कहना यह कि यह उद्देश्यों से हट गये—जैसे-जैसे प्लान बढ़ते गये, हम दुर्दशा को प्राप्त होते गये। अर्थात् पहली योजना के उद्देश्यों से आधारभूत तरीके से हटते नहीं तो दुर्दशा को प्राप्त न होते। मेरा कहना है पहली योजना के उद्देश्य देख लीजिये। जब पहली योजना का उद्देश्य यह था, उसे देखने से पता चलेगा कि उसमें यह साफ-साफ बता दिया गया था कि आधारभूत उद्योग (बेसिक इंडस्ट्रीज) के ऊपर सरकार को पूरा ध्यान देना होगा। अब दूसरी योजना पर आइये, इसका क्या लक्ष्य था—दूसरी, पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय आय में पर्याप्त वृद्धि, जिससे रहन-सहन का स्तर ऊंचा हो सके, त्वरित औद्योगीकरण। त्वरित यही हो सकती है, ये तो लांग, डिस्टेंट पीरिएटड की ह, लोहा, इस्पात वगैरह। त्वरित औद्योगीकरण तथा आधारभूत और भारी उद्योंगों पर बल देना और रोजगार के क्षेत्र में विशेष अवसरों की योजना कृषि की समृद्धि के लिये आवश्यक कार्यक्रम। आय एवं धन का असंतुलित वितरण कम किया जाना और आर्थिक सत्ता का समतापदित वितरण। इस लक्ष्य में जो नयी चीजें जोड़ी जो आप चाहते है—छोटे उद्योग और शीघ्र फल देने वाले उद्योग को लगाना। कृषि पर आधारित छोटे-छोटे उद्योग, कारखाने लगाना। उसके बाद राष्टीय आय में पांच प्रतिशत वृद्धि करना। नम्बर 2—और उसको चौधरी साहब कृपा करके देखें। खाद्यान्नों में आत्म-निर्भरता तथा खेती के उत्पादन में समुचित वृद्धि करना। यह तीसरी योजना का लक्ष्य है।

चौधरी चरण सिंह—

लक्ष्य सभी ठीक होते हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

आपने कहा था कि इनकी नजर और रास्ता साफ नहीं है। इसलिये नतीजे गलत निकल कर आ रहे हैं। नजर की बात कह दी। कदम की बात भी रखूंगा। चौथी योजना में—आप सब्र करें,थोड़ा टाइम लगेगा। बेअदबी के लिये माफी चाहता हूं। मुझे बोलने देंगे। चौथी योजना—ऐसी स्थिति का निर्माण करना जिसमें विकास की गति तीव्र बनी रहे, अनिश्चिता की सम्भावनाएं कम हो जायं। दूसरे, कृषि उत्पादन में अत्यधिक चढ़ाव को स्थिर करना। बाद में रिटर्न खेती से आ सके। पर्याप्त अन्न संग्रह करना जिससे गल्ले की मांग पूरी की जा सके तथा ऐसे उपाय किये जायं जिससे गल्ले तथा अन्य वस्तुओं के मूल्य स्थिर किये जा सकें। उसके बाद ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में प्रमुख रूप से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करना और उनको बढ़ाना। आपने कहा कि पांचवी योजना में डी० पी० धर साहब जाने क्या-क्या कह रहे हैं। कृषि की बात समझते नहीं है। तो कृषि को छोड़ दिया। मैं सिर्फ आपको आश्वस्त करने के लिये कह रहा हूं। आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमने ऐसा नहीं किया है। पांचवी योजना में स्पष्ट रूप से लिखा है कि हम किस तरह से उत्पादन करेंगे और खेती आधारभूत उद्योग पर और ऐसे उद्योग जो सार्वजनिक

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]
उपभोग की वस्तुएं तैयार करते है उन पर जोर देना, हमारा पहला आब्जेक्ट है। लक्ष्य स्पष्ट हो गया। लक्ष्य में कोई झगड़ा नहीं है। मुझे बड़ी खुशी है कि योजना के लक्ष्य में नेता विरोधी दल को कोई शक नहीं है। अब कार्यक्रम पर आ जायं।

चौधरी चरण सिंह—

डी० पी० धर की बाबत कह रहे हैं। एग्रीकल्चरल कमीशन क चेयरमैन ने जैसा कहा है, एलोकेशन फिर पहले की तरह कम है। 12.7 परसेंट ऐग्रीकल्चर, 7.2 परसेंट इरीगेशन और 24 परसेंट इंडस्ट्री। डी० पी० धर साहब कहते है कि इलोकेशन की कमी नहीं है। ऐलोकेशन बहुत काफी है। इंस्टीट्युशनल चेंज होना चाहिये, अर्थात् कलेक्टिव फार्मिग होनी चाहियेन कि टेकनिकल रेवोल्युशन से, पानी से, बीज से, अच्छी प्रैक्टिसेज से। ऐलोकेशन ही 20 परसेंट है। सभी लोगों ने कहा कि ऐग्रीकल्चर बढ़े, लेकिन रुपया 20 परसेंट से ज्यादा नहीं दिया। इंडस्ट्रीज को कहीं ज्यादा दिया। यह मैने कहा। आप सारे उद्देश्य पढ़ कर सुना रहे हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अच्छा तो मेरी ना समझी होगी। मैंने समझा था कि उल्टा रास्ता पकड़ू इसलिये कि वहां पहुंच जायं। खुशी है कि आप मानते है कि आपके उद्देश्य ठीक थे। रास्ता ठीक था। कम से कम इतना कामन फैक्टर है। अब फैक्टस पर आ जायं।

चौधरी चरण सिंह—

आपने काम सब अच्छे किये तो देश डूबा क्यों ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, देश डूबा नहीं। इतने कहर पड़े थे और देश की हालत खराब थी तो यह दखना चाहिये था कि कितने आदमी मर गये। अगर चौधरी साहब कम्पेयर करें तो रिजल्टस को भी देखना होगा। जब चौधरी साहब मंत्री रहे हैं या नहीं रहे हैं तो भूख से मरने वालों की कोई संख्या नहीं रही है। आज हमारे देश में भूख से मरने वालों की कोई संख्या नहीं रह गई है।

चौधरी चरण सिंह—

आज तो बाहर से अनाज आ जायेगा। पहले नहीं आ सकता था।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, अब भी आ सकता है और पहले भी आ सकता था। लेकिन उस समय उनको परवाह नहीं थी। इंडियन पावर्टी एण्ड सोल्यूशन वाली पुस्तक के पृष्ठ 7 में यह कहा गया है कि....

श्री बांके लाल (जिला देवरिया)—

श्रीमन्, मैं यह कहना चाहता हूं कि आप उद्देश्य और लक्ष्य तो बड़ी लच्छेदार भाषा में वर्णन कर रहे हैं....।

श्री अध्यक्ष—

जब मुख्य मंत्री जी बैठ जायं तो आप पूछिये ?

(व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

हम लोग एक उदाहरण पेश कर चुके हैं। मुझे आशा है कि वह भी कुछ करेंगे। उस पुस्तक के पृष्ठ 7 पर लिखा है कि—

"In short large scale farming will reduce production, injure the democratic principles which the country cherishes, invite bureaucratic control and lead to rapid mechanisation which all its consenuences. Peasant farming on the other hand, will enable the country to steer a path which may not be spectular but which will ensure that it does not abruptly go off the rails."

क्या माने हुये इसके चौधरी साहब। भूमि वितरण की आवश्यकता नहीं है। वह मानते हैं कि छोटी-छोटी होल्डिंग्स हों तो अच्छा है। लेकिन यह नहीं सोचा कि वह भूमि वितरण के विरुद्ध बोल रहे हैं।

दूसरी बात ले लीजिये। माननीय चौधरी साहब ने एक किताब लिखी है एग्रीकल्चर रिवोल्यशन इन यू० पी०। इसके पृष्ठ 40 पर लिखा है कि—

"It will take a good deal of time before the economic consequencies of the land reforms can be measured statiscally. All one can say in the meantime, is that production the peasants is increasing and generally speaking their standard of living, is improving. In course of time, as demands for comfort, health, education, roads and entertainments rise, the change in distribution of income and increase in farm production brought about by the reforms will give fillip to industrial expansion and allow the expansion to generate its own purchasing power and to create its own market."

यह किताब उस समय की है जब वह रेवेन्यू मिनिस्टर थे। उस समय उन्होंने कहा था कि यह सब ठीक चल रहा है। सीधी सादी बात यह है कि अगर हमें फी एकड़ पैदावार हिन्दुस्तान की यू० एस० ए०, कनाडा वगैरा के मुकाबले में बढ़ानी है तो क्या करना होगा। एक एकड़ में दो सौ गुना, तीन सौ गना और चार सौ गुना प्रोडक्शन बढ़ाना होगा। आप-टिमम रिटर्न प्राप्त करना होगा। उसके लिए हम इनपुट चाहिये। चौधरी साहब की किताब के अनुसार छोटी जोतें हैं। एक एकड़ में पैदावार बढ़ानी होगी। फर्टीलाइजर बढ़ाना होगा। बीज को ठीक रखने का प्रबन्ध करना होगा। हमें हेलीकाप्टर की सहा-यता लेनी होगी ताकि फसल को नष्ट होने से बचाया जाय। खेती की उन्नति के लिए बड़े-बड़े संस्थान बनाना होगा जो रिसर्च और डेवलपमेंट करें। खेती के लिए हमें अलमूनियम का तार लाना होगा स्टील के खम्भे लाना होगा। उद्योग के क्षेत्र में इतना धन उपलब्ध नहीं है कि उद्योग हमारी सेवा में आ सके। उसी तरह से मान्यवर, यह बात मानना पड़ेगा कि जो हमारा इन्वेस्टमेंट था उसका बहुत बड़ा हिस्सा डिफेंस पर खर्च करना पड़ा। चौधरी साहेब जानते हैं कि हमारा डिफेंस का खर्चा 2.50 करोड़ से 14.5 करोड़ पहुंच गया है। आप जरा सोचें कि सिपाहियों को हम सामान दे नहीं और उनके पैर मजबूत रहें। इसलिए जवाहर लाल जी ने तिब्बत से झगड़ा नहीं किया। उन्हें यह आशा थी कि युद्ध पर खर्च करने से उसका परिणाम यह होगा कि हम अपने देश में गरीबी के खिलाफ रुपया खर्च नहीं कर पायेंगे रुपया खर्च करेंगे आप चीन के खिलाफ तो अन्य चीजों में डेवलमेंट कैसे करेंगे। जहां तक चौधरी साहेब की पहले की नीतियां स्पष्ट करती हैं कि खेती की तरक्की के लिए उद्योग और भारी उद्योग चाहिये। रसायनिक का उद्योग है यह छोटा उद्योग नहीं है। टरबाइन बनती है थर्मल पावर है ये छोटे उद्योग नहीं हैं। हमें इनके चौगुने बनाना चाहिए। तभी उन्नति होगी। अगर 6 हजार मेगावाट बिजली हमें मिले

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

तो भी उसकी खपत की गुंजाइश है। हमने चीनी मिलों को बनाने का निर्णय लिया है। हम चाहते हैं कि चीनी मिलें जल्दी से जल्दी लगे। हमारे जो उद्योग हैं वह पिछड़े हुए हैं। वह गरीबों को सुख नहीं पहुंचा पाते हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि चौधरी साहेब देखें कि उद्योग और खेती के सम्बन्ध में गड़बड़ी हुई है तो डिफेंस की वजह से हुई है। डिफेंस पर पहले 2.50 करोड़ का खर्च होता था लेकिन अब वह साढ़े 14 करोड़ हो गया है 7-8 साल में इतना बढ़ा है। चीन ने हम पर हमला किया। उसके हमले का मुख्य कारण यह था कि इसकी इकोनामी को ऐसा कर दो जिससे कि यह लड़ाई की तरफ झुक जाय और यह तरक्की न कर सके जिससे यह जो प्रजातंत्र और समाजवाद का मार्ग देना चाहता है वह दिखा न सके। बुनियादी लक्ष्य यह था। माउत्सेतुंग ने कहा कि इनको सीमा पर गर्म रखो ठंडा न रहने दो। हमें लड़ाई के लिए बन्दूक चाहिए उसे बनाना पड़ेगा और उस किस्म के कारखाने बनाने होंगे और सारे का सारा कम्प्लेक्स उसमें चला जायगा।

एक चीज मान्यवर और कहना चाहता हूं गांधी जी का चौधरी साहब ने कुछ कोट किया है और कहा है कि गांधी जी ऐसा चाहते थे। इंडस्ट्रिलाइजेशन और खेती और छोटे उद्योग के रास्ते पर गांधी जी ही बढ़े हैं। गांधी जी का ख्याल था लोहा, इस्पात आदि इन सबको हैंडीक्राफ्ट के साथ ही साथ रहना पड़ेगा। मैं तो उनसे अब भी यह जानकारी करना चाहता हूं कि क्या चिकन के काम करने वाले, नक्काशी का काम करने वाले या मुरादाबादी का काम करने वाले या बनारस की साड़ी बनाने वाले या अन्य उद्योग करने वाले जो काम कर रहे हैं वह उद्योग नहीं हैं? मैं तो कहता हूं कि यदि उत्तर प्रदेश समझदारी से काम करे तो 10 साल में मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि 100 करोड़ रुपए साल का सामान यह छोटे उद्योग से बाहर भेजा जा सकेगा। आप अमेरिका की खपत देख लीजिए। लकड़ी की नक्काशी को देख लीजिये। मेरा कहना यह है कि हमारे पास अगर 6 हजार मेगावाट बिजली हो तो उसकी भी खपत हो जायगी। अभी हमारे दो-तीन साल और कठिनाई के हैं। तो जब तक बिजली नहीं आती है तब तक हम कुछ करें ही नहीं। यह मुसीबत है। इसका मुकाबिला हमें करना है और हमें भारी इन्तजाम करना है। तो भारी इन्तजाम में दोनों पक्ष जो हैं वह सफल होंगे। लाखों जो हमारे बुनकर भाई है जिनकी हड्डी जर्जर हो रही है। उत्तर प्रदेश को बड़े उद्योग की तरफ दौड़ने की जरूरत है। बिहार में बड़े उद्योग लाखों इस झगड़े में हैं।

सन् 57 में जब गवर्नमेंट बनी थी तो उस समय चौधरी साहब भी उसके मेम्बर थे। तब मैंने कहा था कुंवर श्रीपाल सिंह जी मौजूद नहीं हैं कि जब दूसरे प्रदेश बड़े-बड़े उद्योग और खेती के सिलसिले में चर्चा कर रहे थे तो हम उत्तर प्रदेश में हिन्दी के शब्दों को ढूंढ रहे थे कि इसके लिए हिन्दी का कौन सा शब्द होगा। यह हमारा 57 का लेख है। मैं उर्दू को इस प्रदेश की और देश की वही भाषा मानता हूं जैसा संविधान में उसका स्थान दिया गया है। मुझे यह कहा गया कि जो इस देश की भाषा है जो भाषा इस देश की जननी है उसके खिलाफ की भाषा उर्दू को बहुगुणा जी इस्तेमाल करते हैं। हां करता हूं और करूंगा क्योंकि यह हमारे देश की भाषा है। आप चाहते हैं अल्फाज तो उनके हैं और उसमें भी कुछ अपनी तरफ से फर्क करके रखें। यह मुझसे नहीं होगा।

मान्यवर, नेता विरोधी दल ने उत्तर प्रदेश के सम्बन्ध में कुछ चर्चा की। तो पहले मैं पंडित जवाहर लाल नेहरू की बात आता हूं। उनकी हर तकरीर में एग्रीकल्चर पर जोर देने की बात आई। 1963 में भी उन्होंने कहा था कि एग्रीकल्चर का पोटफोलियो हर चीफ मिनिस्टर को अपने पास रखना चाहिए। और यह भी कहा

कि यह सबसे कठिन काम है ग्रोथ कम हो ऐसा नहीं होना चाहिए। आपने भी ऐसा ही कहा था ।

जहां तक हमारी औद्योगिक पालिसी का ताल्लुक है। चौधरी साहब ने कहा कि छोटे उद्योगों का ख्याल ही नहीं रखा गया। आपको मालूम होगा कि 124 उद्योगों पर केन्द्रीय सरकार ने स्टेट्यूटरी कन्ट्रोल कर दिया। जो चौड़ी किनारी की धोतियां होती हैं, अब बड़े कारखाने नहीं जानते हैं। चौधरी साहब कई सालों से हमसे नाराज हैं, मुझ से नहीं कांग्रेस से। इसलिए हमारी टेढ़ी और सीधी बात दोनों बुरी लगती है। गुस्से में थोड़ी बात पर नाराजगी हो जाती है। तो मेरी प्रार्थना है कि सारे राष्ट्र में बहुत सारे लोग हैं जो कहते हैं कि चौधरी साहब को बहुत अच्छा ज्ञान है। तो आपके ज्ञान से वे कहीं कुरस्ते पर न लग जायं ?

चौधरी चरण सिंह—

धोती के लिए ही क्यों कर दिया। सारे कपड़े के लिए क्यों नहीं कर दिया है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

हम और आप तो खादी ही पहनते हैं। आप अपने और सदस्यों को कहिये कि वे भी खादी पहनें ।

इर्रीगेशन फैसिलिटीज को ले लीजिये। चौधरी साहब ने कहा कि तुमने इस मामले में ठीक काम नहीं किया है । मैं उत्तर प्रदेश की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। पहली प्लान में मान्यवर हमारा टोटल एरिया अन्डर कल्टिवेशन 56.15 लाख हेक्टेयर्स था। जब जमींदारी एबोलीशन हुआ तो तालाब जो जाने लगे और नहरें निकाली जाने लगीं ग्रेविटेशनल वाटर का इस्तेमाल होने लगा। कहा गया कि जो आपकी प्लान्स थी, उनसे बड़ी भारी फाल्ट है। प्लान के पहिले बंधी है, तालाब से और कुंओं से सिंचाई होती थी। जैसे-जैसे नये इर्रीगेशन के श्रोत हुये वे बन्द हो गये और जैसे-जैसे बन्द होते चले गए हमारे हिसाब से यह माना गया है कि परसेंटेज का लोस हुआ। चौथी प्लान के आखरी साल में 92.60 तक हमारा एरिया आफ कल्टिवेशन हो गया। 65 प्रतिशत बढ़ गया लेकिन चौधरी साहब कहते हैं कि कम हो गया है। मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि पहली योजना के जो आंकड़े उनके द्वारा एप्रूव है दूसरी के और तीसरी के एप्रूव्ड हैं उनको पढ़ूं या जो माननीय चौधरी साहब आज कह रहे हैं, उनको पढ़ूं। यह जवाब माननीय त्रिपाठी और माननीय चौधरी साहब दोनों का है। पिछले सालों में जैसा मैंने अभी निवेदन किया उत्तर प्रदेश में 65 प्रतिशत इंक्रीज हुआ है हमारे इर्रीगेशन पोटेंशियल में।

एक और कह दूं। इनवेस्टमेंट की अगर बात कही जाय तो पहली प्लान में मेजर और मीडियम सेक्टर में 20.83 लाख इर्रीगेशन पोटेंशयल था—लाख हेक्टेयर में, और जो एक्चुअल एरिया हुआ है वह है 28.26 लाख। तो सारी चीज को एक साथ देखें। मुझे खुशी है कि शारदा सहायक और गंडक—इन दो प्रोजेक्ट्स के कारण हमारे सारे प्रदेश में और हमारे इस देश के करीब-करीब मेरा अपना खयाल है, 22 जिलों के जीवन में एक मौलिक और बुनियादी परिवर्तन खेती के सम्बन्ध में स्पष्ट दिखलाई पड़ेगा। जून, 75 के अन्दर-अन्दर आप देखेंगे कुछ तो अभी-अभी खरीफ की फसल में वर्तमान में भी गंडक और शारदा सहायक के परिणामस्वरूप हुआ है। दरियाबाद वाली सांच में रामसेवक जी से पूछें तो पता स्वयं लग जायेगा कि वहां आज पानी की क्या हालत है और खरीफ के लिए कसे पानी मिल रहा है। मेरा कहना यह है कि जो इंडस्ट्री का इन्वेस्टमेंट है, फर्स्ट प्लान से लेकर आखिरी प्लान तक वह पहले 20.83 था, अब वह 110 करोड़ रुपया तक पहुंच गया। हेक्टेयर की बात तो पहले बता चुका ।

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

अब ट्यूबवेल को लीजिये। पहले ट्यूबवेल 4,415 थे और फोर्थ प्लान के आखिरी तक 12,463 ट्यूबवेल हो गये। यह तो हुआ स्टेट ट्यूबवेल का। अब प्राइवेट में जो बढ़ा है...मैं प्रार्थना करूंगा माधव बाबू से कि मैंने माना कि जनसंघ का जन्म ही इसलिए हुआ कि हमारा विरोध करे, लेकिन कम से कम तथ्यों का तो विरोध न करें, उनसे मुझे आशा रहती है। तो मैसीनरी वेल्स में 1965-66 को बेस ईयर मान कर चलता हूं, तो 1965-66 में 9,16,000 थे, वह 1973-74 में 12,59,573 हो गए। दूसरे पार्शियल वेल्स 1965-66 में 2,10,873 थे, 1973-74 में 4,22,284 हो गए। पम्पिंग सेट्स 1965-66 में 23,584 और 1973-74 में आज 2,42,334 हैं। ट्यूबवेल्स प्राइवेट 1965-66 में थे 25,590 और आज हैं 4,01,458। अगर तरक्की आपको नही दिखलाई दी तो यही कहा जा सकता है कि आपने असली दीपक से देखने की कोशिश नहीं की बल्कि कागज के दीपक से देखा है, इसलिए आपको दिखाई नहीं देता। और दीपक का जहां तक ताल्लुक है, मिट्टी तो कुम्हार की है, बाती कपास की और तेल भी किसी दूसरे का है। यानी तेल किसी का, बाती किसी की और मिट्टी किसी की तो जनसंघ के दीपक से दिखाई दे भी कैसे? इसलिए मेरी प्रार्थना है कि यह आप न कहें कि तरक्की नहीं हुई। हां, यह कहें कि और होना चाहिए। यह तो न कहें कि उत्तर प्रदेश में कुछ नहीं हुआ वरना मुझे वही कहना पड़ेगा जो जवाहर लाल जी ने कहा था जिसे कोट किया था उन्होंने कहा था कि जो सबसे बड़ी इंडस्ट्री है हिन्दुस्तान में तो एक विदेशी ने कहा था कि वह इंडस्ट्री "सरकार की बुराई किये जाओ"। "बिगेस्ट इंडस्ट्री इज दि क्रिटिसिज्म आफ गवर्नमेंट"। मैं कहता हूं कि आप हमारी गलती अवश्य बताइए। कहिये कि बिजली पदा नहीं कर सके। लेकिन यह मत कहिये कि कुछ नहीं हुआ। तथ्य यह है कि सिचाई का काम सकड़ों गुना आगे बढ़ गया होगा और आप कहें कुछ नहीं हुआ?

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

मुझे क्षमा करेंगे। मैं तो इसलिए कहता हूं कि इतने सारे इनवेस्टमेंट के बाद अगर असमानता बढ़ी, अनएम्पलायमेंट बढ़ा, गरीबी बढ़ी तो यह कहने से क्या लाभ हुआ, प्राप्ति क्या हुई? यह सब कहने से क्या फायदा जब जनता के कष्ट निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। तब तो यही कहा जायगा कि कुछ नहीं हुआ। यदि हुआ तो पता नहीं किस दिशा में हुआ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, बड़ी खुशी है कि माधव बाबू को असमानता दिखाई देने लगी है, क्योंकि जनसंघ का साथ असमानता पैदा करने वालों साथ ही रहा। वरना बैंकों के राष्ट्रीयकरण पर आपने बलराज मधोक को अपनी पार्टी से निकाला होता। लेकिन तब आपने नहीं निकाला।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

आप अपने शीशे में दिखाना चाहते हैं।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

जी हां। मैं आपके शीशे में अपनी तस्वीर और अपने शीशे में आपकी तस्वीर आपको दिखाना चाहता हूं।

इर्रीगेशन की जितनी स्कीम्स आज हमारे यहां पूरी की गई हैं मैं उनका नाम एक-एक कर नहीं लेना चाहता।

चौधरी चरण सिह—

मैं अपने फायदे के लिए ही नहीं, आपके फायदे के लिए भी कहना चाहता हूं कि जो आंकड़े इरीगेटेड एरिया के आपको दिये गये वह गलत दिये गये हैं जिसमें आप कह रहे ह कि 65 परसेंट इजाफा हुआ है। अंग्रेजों के जमाने से 1960-61 तक 32 परसेंट नेट इरीगेटेड एरिया था। आपने जो आंकड़े दिये हैं राम सेवक जी उसके हिसाब से 42 परसेंट पड़ता था। तो 65 परसेंट कैसे हो गया ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब, आपकी और मेरी तकलीफ एक है। जो 32 परसेंट दिया है उसमें जो तालाब से सिचाई कर रहे थे वह भी सिचित क्षेत्र शामिल था। ताल तलया नहीं। चौधरी साहब ने जमींदारी उन्मूलन किया लेकिन ताल तलया भी उन्मूल हो गये। उन पर गवर्नमेंट कोई देखरेख रख नहीं पायी। यह गलती बताते तो मैं मानने को तैयार हूं। लोगों की आदत बदल गयी कि हम कुयें से क्यों सोचें। पहले पक्के और कच्चे दोनों तरह के कुयें बनाते थे। मैं तो बड़े गरीब गांव से आता हूं। मेरे गांव में जून में पीने को पानी नहीं होता था।

चौधरी चरण सिह—

प्राइवेट सोर्सेज बन्द होते रहे। नेट इर्रीगेटेड एरिया वहां का वहीं रहा 60-61 तक।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

जी नहीं। मैं मानने को तैयार नहीं हूं। 10 परसेंट तक इजाफा हुआ। लेकिन हर सूबे की सरकार ने, जिसमें उत्तर प्रदेश की सरकार भी शामिल है, ताल तलैया आदि को नैगलेक्ट किया। जो हमारी बड़ी भारी सम्पदा है, जो बंधियां हैं अगर उनकी ठीक प्रकार से रक्षा की गयी होती, जिनकी देखरेख जमींदारी किया करते थे अगर उन ताल तलैयों को सरकार ने अपने हाथ में ले लिया होता और इस तरह से उनको नष्ट न होने देते तो हमारा परसेंटेज इससे भी ज्यादा होता। यह तो मैं उसको निकाल कर बतला रहा हूं।

एक बात चौधरी साहब ने और कही कि पानी का पोटेंशल तो बढ़ा कहीं-कहीं लेकिन इस्तेमाल नहीं हुआ। दोष किस का है ?

चौधरी चरण सिह—

मैंने नहीं कहा।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

आई एम सारी। तो किसी और माननीय सदस्य ने कहा होगा। गंडक बह रही है, गूलें नहीं निकल सकतीं, लैंड एक्वीजीशन की प्रोसीडिंग्स होगी। लेकिन जब वर्तमान सरकार बनी तो हमने आर्डिनेंस निकाला। हमको चार महीने में समझ आ गई कि इसका इलाज यह है और 30 जून तक गंडक के कमांड एरिया में गूलें बन कर पानी चला जायगा, इतनी तेजी से काम हो रहा है। शारदा सहायक कमांड एरिया में हम खेत-खेत में पानी दे देंगे। नादर्न इंडिया कनाल ऐंड ड्रेनेज ऐक्ट अंग्रेज बहादुर के जमाने का। हमने उसमें शंसोधन कर के आर्डिनेंस निकाला और सदन के सामने पेश किया। प्रश्न यह है कि देखरेख ठीक न रखी गयी है तो हमारा कसूर है। लेकिन काम हुआ है, उस दशा में कदम बढ़ रहे हैं, लूप-होल्स खत्म किये जा रहे हैं, छीजन को बन्द किया जा रहा है तो स्वीकार करना चाहिए माननीय सदन को कि सही दिशा में कदम है।

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

माननीय चौधरी साहब ने एक बात और कही कि जब इन्दिरा जी आयीं थीं तो बहुत सी योजनाओं पर उन्होंने पत्थर लगाये और कहा कि उनका खयाल यह है कि किसी भी योजना में या बहुत कम योजनाओं के सम्बन्ध में पत्थर लगाने के पहले की अग्रिम कार्यवाही हुई थी। मुझे नहीं मालूम कि चौधरी साहब कितना ज्यादा कम समझते हैं लेकिन इन्दिरा जी ने 42 पत्थर लगाये या उद्घाटन किये ।

सारी गवर्नमेन्ट रिजीम से लेकर जनवरी में नोटिफिकेशन की डेट के पहले तक . . (व्यवधान) में जो काम हो रहे है उनको बता रहा हूं । मान्यवर, 6 का तो उनका उद्घाटन किया जिन योजनाओं का काम पूरा हो चुका था . . . (व्यवधान) . . . फैक्ट्स बताना मेरा काम है, इन्टर प्रीटेशन आप जैसा चाहे करें । मैं तो जो फैक्ट्स है उनको ही बता रहा हूं । बाकी कोई भी योजना ऐसी नहीं थी जो हमारी या केन्द्रीय सरकार की प्लान में शामिल न हो । बजट के अन्दर भी उनके लिये प्राविधान था । कोई योजना ऐसी नहीं थी जिसके लिये पहले से प्राविधान न हो ।

आपने यह कहा कि खेकड़ा में क्यों किया ? चुनाव जिताने के लिये खेकडा में किया । चौधरी साहब, खेकडा में तो आप जीत गये हम कहां जीते ?

चौधरी चरण सिंह—

खेकड़ा में क्यों किया ? सहारनपुर में क्यों नहीं किया ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

हमारे एग्रीकल्चर मिनिस्टर साहब तो आपके मित्र थे । उन्होंने संविद काल में आपको ही अपना नेता माना था । हमारे चौधरी साहब को इस पर भी गुस्सा है । मैं उनको बताना चाहता हूं कि रेलवे बोर्ड ने ही यह निश्चय किया था कि खेकडा में करने से काम तेजी से हो सकता है । इसके लिये उनकी सिफारिश थी । मान्यवर, सन् 71 में जिस दिन यह लाइन बन्द हो गयी थी, हमने और यू0 पी0 के अन्य पार्लियामेंट के मेम्बरों ने और जो यहां के मिनिस्टर थे सबने इन्दिरा जी को इसके लिये घेरा था । हम मान्यवर, कोई भिखमंगे नहीं है, न भिखमंगे की तरह रहना चाहते है, जो अपना हक है उसको मांगते है . . . (व्यवधान) . . . आप कृपया मेरी बात को सुनें, मैं आपकी कड़ुवी से कड़ुवी बात को भी सुनता रहा, आप कृपया मेरी मीठी बात को तो सुनने की कृपा करें । तो मैं यह निवेदन कर रहा था कि खेकड़ा का सम्बन्ध इंजीनियरों और टैक्नीकल लोगों की राय से था । मैं चौधरी साहब को आश्वस्त करना चाहता हूं कि यह रेलवे बोर्ड के निश्चय के अनुसार किया गया था । रुपया इसमें उनका भी खर्च होना था और हमारा भी । बहुत दिनों से सन् 36 से यह इच्छा थी कि यहां बड़ी लाइन बन जाय । हमारी और आपकी आकांक्षायें अब पूरी हो रही है । इतने दिनों बाद यह दिन आया है कि जब हमारी सब की आकांक्षायें पूरी हो रही है चौधरी साहब, आपको तो हमारी पीठ इसके लिये ठोंकना चाहिये था कि बेटे, तुमने, अच्छा काम किया . . . (हंसी) । मान्यवर, इस अच्छे काम के लिये हमारी शिकायत की जा रही है । हमारा तो काम है अपने बुजुर्गों की बात को पूरा करना । हम आपका हर वादा पूरा करेंगे । आपने वहां वादा किया था कि रेलवें लाइन होनी चाहिये तो मैं आपके इस वादे को भी जल्दी ही पूरा करूंगा और आपको रेल में बैठा कर साथ ले चलूंगा ।

(मेजों को थपथपाने की आवाजें)

चौधरी साहब, आप जरूर मेरे साथ बैठ कर चलेंगे यही आशा है । एक बात मैं और कहूंगा, मैं थोड़ा वक्त लूंगा ।

माननीय, यह कहा गया कि उत्तर प्रदेश में पैदावार हर चीज की कम हो रही है, घटी है तो मैं यह कहना चाहूंगा कि खाद्यान्न को यदि आप योजनावार देंखे तो प्रथम योजना में 121.88 लाख टन प्रति वर्ष थी। दूसरी योजना में 129.83 लाख टन और तीसरी योजना में 135.78 लाख टन तथा तीन वार्षिक योजनाओं में 148.29 लाख टन और चौथी योजना में 176.56 लाख टन हो गयी। यह आंकड़े दिखाते है कि खाद्यान्नों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुयी है। तिलहन को अगर आप देंखे तो प्रथम योजना में 9.05 लाख टन था पर चौथी योजना अवधि में 16.40 लाख टन हो गया। आलू जिसका वार्षिक उत्पादन प्रथम योजना काल में 6.53 लाख टन था वह चौथी योजना के अंत में 16.42 लाख टन हो गया। गन्ने का उत्पादन, गुड़ के रूप में प्रथम योजना अवधि में 267.60 लाख टन तथा चौथी योजना अवधि में 566.88 लाख टन हो गया। मेरा प्वाइंट कहने का यह है कि माननीय, जहां तक सिंचाई का ताल्लुक है, निजी और लघु सिंचाई के बारे में एक बात यह उल्लेखनीय है कि सिंचन क्षमता को निकालते समय हम लोगों ने खुद 5 प्रतिशत पुराने कुओं, जो काम नहीं करते, को कम करके यह आंकड़े निकाले है और तब फीगर्स दिये है। प्रति व्यक्ति खाद्यान्न कितना-कितना था यह भी उल्लेखनीय है। पहली योजना में 187 किलोग्राम, दूसरी योजना में थोडा कम, 184 किलोग्राम और चौथी योजना में 198 किलोग्राम हो गया। अब आप यह कहें कि प्रति व्यक्ति को कितने किलो ग्राम अन्न मिला, कम पैदा हुआ या ज्यादा, तो यह साफ दिखायी देता है कि पदावार बढी है। चौधरी साहब ने एक बात कही कि गांवों और शहरों में आमदनी में फर्क है, गांव की आमदनी घटी है और शहरों की बढी है लेकिन जो फीगर्स उन्होंने दिये है, मुझे ऐसा लगता है कि शायद काफी पुराने थे या फिर उसमें कहीं पर जोड़ या घटाने में गलती हुयी है।

चौधरी चरण सिंह—

यह फीगर्स सन् 73 के हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

हमारे हिसाब से और जो एन0एस0एस0 का शेड्यूल है और जो हमारा इकोनामिक स्टेटिस्टिक्स, अर्थ एवं संख्या विभाग है, ने यह आंकडे दिये है। इन आंकडों के मुताबिक वास्तव में अगर ग्रामीण और नगरीय क्षेत्र की असमानता की तुलना करें तो उनका कहना है कि प्रति व्यक्ति उपभोक्ता व्यय का आधार मानना होगा और अगर प्रति व्यक्ति उपभोक्ता क्षमता को आप आधार मानते है तो फिर वर्ष 1955-56 में ग्रामीण क्षेत्र में प्रति व्यक्ति उपभोक्ता व्यय नगरीय क्षेत्र के व्यय का 67.5 प्रतिशत था जो पिछले वर्ष में 80.85 हो गया। तो इसमें भी बढोत्तरी हुयी है जहां 67.5 प्रतिशत था वहां 80.85 हो गया है।

चौधरी चरण सिंह—

एन0एस0एस0 के आंकडे जो आपने बतायें है वह किस सन् के है और उन्होंने जो कप्परीजन किया है उसमें क्या मोटर कार, टेलीफोन सेट आदि शामिल किया है जिनसे कि डिफरेंस की डिस्पैरिटी बढ़ जाती है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब हमने यह कतई नहीं कहा कि टेलीवीजन और मोटरकारें तथा एयर कंडीशन की मशीनें अदि उपभोक्ता की वस्तुओं में शामिल किया है। हमारे पास तो कम्परेजिन है वर्ष 1972-73 का उसके मुताबिक यदि शहर में उपभोक्ता व्यय 100 प्रतिशत था तो ग्रामीण जनता का उपभोक्ता व्यय 80.85 प्रतिशत था जबकि वर्ष 1955-56 में यह उपभोक्ता व्यय गांव में शहर के प्रतिशत का 67.5 प्रतिशत था। इस प्रकार गांव की उपभोक्ता शक्ति बढी है। हमार पास नेशनल सेम्पुल सर्वे के आंकड़े मौजूद हैं जिनको मैं यदि, आप कहें तो भेज बूंगा।

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

दूसरी बात चौधरी साहब ने कहा कि पंच वर्षीय योजना में कम रुपया लगाया गया है। पिछली योजना का जो खर्च आया है उसमें पूंजी गत व्यय और आयोजनेतर व्यय यदि इनको ठीक से देखे तो उत्तर प्रदेश के अन्दर खेती में सबसे अधिक खर्च हुआ है। चौधरी साहब ने कहा कि एग्रीकल्चर सेक्टर में 72 फीसदी खर्च किया गया है। चौधरी साहब मैंने यह नहीं कहा बल्कि यह कहा कि 72 फीसदी रूरल सेक्टर पर खर्च हुआ है।

चौधरी चरण सिंह—

मैंने 72 फीसदी कृषि पर देश भर में खर्च करने को कहा था।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैंने पहले ही दिन कहा था कि हम लोग तो सूबे में कार्य करने वाले हैं और आप देश भर के नेता हैं। तो इसलिये मान्यवर मैं आपके पास उत्तर प्रदेश के आंकड़े ब्रेकअप के रूप में जैसे बिजली है, पानी है, खेती है या चाहे स्कूल हो आदि सब के आंकड़े भेज दूंगा।

चौधरी चरण सिंह—

बिजली का खर्च गांव में कितना पड़ेगा ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

हम गांवों में 45 प्रतिशत बिजली का खर्च मानते हैं।

मान्यवर, यह कहा गया कि यह मुसीबत उत्तर प्रदेश में क्यों ? अब अगर चौधरी साहब अपनी स्पीच में बतला दिये होते कि सूखे से और बाढ से पिछले 10–5 सालों में कितनी हानि हुई है और वह किसके जिम्मे जाय तो अच्छा रहता क्योंकि अगर आप नहीं बतलायेंगे तो मेरी अकेली बात को कोई मानने वाला नहीं है। मैं भी बतलाऊंगा, सारा सदन बतलायेगा यह बात तभी साफ होगी केन्द्र, प्रदेश और देश के सामने। 1965 में 90,183 गांव सूखे से गड़बड़ाये। उस समय 1 लाख 12 हजार या 13 हजार गांव थे, अब तो शायद कम हुये हैं जो क्षतिग्रस्त क्षेत्रफल था वह लाखों एकड़ों में है। उत्पादन हुआ नहीं। क्या हो ? यह योजना पर असर पड़ेगा कि नहीं ? प्रगति पर असर पड़ेगा कि नहीं ? वसूली पर असर पड़ेगा कि नहीं ? सरकारी कोष पर असर पड़ेगा कि नहीं ? और अगर इन सब पर असर पड़ेगा तो तरक्की पर असर पड़ेगा कि नहीं। 1966 में 91,938 गांवों पर असर पड़ा।

चौधरी चरण सिंह—

बाढ़ और सूखा तो आता ही रहता है...

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

आप एलीबाई लें तो फिर मैं कैसे बतला सकता हूं। यह तो उधर की कुर्सी पर बैठने का असर होता है क्योंकि मैं भी कुछ दिन बैठा हूं। मैं यह कह रहा था मान्यवर, 91 हजार गांवों में सूखा पड़ गया। मान्यवर, मैक्सिको जैसा देश में भी कई लाख जानवर सूखे से मर गये हैं, वह देश जो अन्न से भरपूर था, वहां लाखों जानवर मर गये और तो और आदमी मर रहे है वह अलग...

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

आदमियों की गिनती की होगी ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

गिनेंगे आप लेकिन हमने प्रतिज्ञा की है कि हम किसी को नहीं मरने देंगे । मान्यवर सन् 71 में 26,400 गांवों पर कुप्रभाव पड़ा । सन् 72 में फिर 91 हजार गांवों पर असर आया । कहां जायेगा यह असर ? यह कहा गया कि बिजली देनी चाहिये थी, खेत के पानी को बाहर करना चाहिये था । मान्यवर, मैं पहले की कह चुका हूं कि इन सब सूखे से बिजली के उत्पादन पर किस तरह असर पड़ा । लेकिन यह बात ठीक है कि बिजली की खपत हमारे प्रदेश में प्रति व्यक्ति कई प्रदेशों से कम है, फिर भी यह सच है कि आन्ध्र प्रदेश, आसाम, मध्य प्रदेश और राजस्थान से हमारे प्रदेश में प्रति व्यक्ति खपत बिजली की ज्यादा है ऐसा नहीं है कि केवल उड़ीसा और बिहार को छोड़कर कोई हमारे पीछे है नहीं । अपने को बार-बार निकम्मा कहते रहने से लोगों का भरोसा टूट जायेगा । यह कोई अच्छी बात नहीं है. लेकिन अगर उसको तोड़ना हो तो प्रगति के रास्ते में बहुत भारी बाधा आ जायेगी ।

मान्यवर, जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि शिक्षा, जन-स्वास्थ्य के सम्बन्ध में क्या किया जा रहा है, कहां-कहां क्या कर रहे हैं, मुझे खेद है कि चौधरी साहब ने यह कहा कि कुछ पहाड़ों की तरफ ज्यादा कर रहे हैं ।

चौधरी चरण सिंह—

विशेष कर गढ़वाल ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैं स्वीकार कर लेता हूं लेकिन मैं आपसे और इस सदन से यह स्पष्ट कहना चाहता हूं कि मेरे मुख्य मंत्रित्व काल से बहुत पहले 1966 में योजना आयोग ने एक सेल बनाया था जो कश्मीर से लेकर नेफा तथा जितना हिमालियन बार्डर आता है । उत्तर प्रदेश में पिछले 15–20 सालों से हमारे पर्वतीय क्षेत्र का क्षेत्रफल जो हिमाचल के क्षेत्रफल से दुगना है, आबादी दुगुनी है, लेकिन उनसे खर्चा प्रतिवर्ष आधा आया है । केन्द्रीय सरकार ने इन सारी बातों को देखने-सुनने के लिये, क्योंकि तिब्बत का पड़ोस है, मध्य सीमावर्ती क्षेत्र है, उस क्षेत्र के लोगों में नाराजी और गुस्सा पैदा हुआ । इससे पूर्व की अलगाव का भाव हो यह बात जरूर है कि कुछ लोग इस प्रदेश को अलग करना चाहते हैं तो एक इलाके से दूसरे इलाके का मुकाबला कराकर आपस में यह वैमनस्य पदा करना हो तो अलग बात है वरना मैं स्पष्ट कहना चाहता हूं कि प्लानिंग कमीशन ने जो एडीशनल रुपया दिया उसी से उस क्षेत्र में काम कर रहे हैं । नेफा, हिमाचल प्रदेश, अरुनांचल और कश्मीर तथा महाराष्ट्र के कोनकन एरिया को रुपया दिया है ।

चौधरी चरण सिंह—

आपने मेरे मोटिव को एट्रीब्यूट किया है । इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि पहली दिसम्बर, 1973 को यूनीवर्सिटी बनना तय हुआ । अब फिर आप चाहते हैं कि पंतनगर के कैम्पस की तरह दूसरी बनायें । उसके लिये आपने जो पांच करोड़ रुपया रखा है उस पर मुझे एतराज है ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब के हर सवाल का जबाब देना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूं । मैं चौधरी साहब से एक विनती करना चाहता हूं । पहाड़ी इलाकों में इस बात की चर्चा है कि हिमांचल के मुकाबले में हमारे ऊपर कम खर्च हो रहा है । उनके असन्तोष को दूर करने के लिये केन्द्रीय सरकार ने कहा कि इनकी योजनाओं को कुछ तेज करो । किस पर तेज करें । पंतनगर में जो बीज पैदा होता है गाय की जो नस्ल बदली जा रही है तो कोई चीज पहाड़ के लायक नहीं है । हार्टिकल्चर के लिये ये लोग कहते हैं कि इतने हायर आल्टीट्यूड की रिसर्च हम नहीं कर सकते । डी0 पी0 सिंह साहब को किसी दिन चौधरी साहब बुला लें और पूछ लें तो

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

यह चीज डी0पी0 सिंह, आई0सी0आर0 और केन्द्रीय सरकार के बीच में तय हुई न कि बहुगुणा सरकार ने इसको तय किया । जिस दिन यहां कृषि मंत्रालय का बजट आया तब मुझे पता चला कि डेढ़-दो साल से यह प्रश्न विचाराधीन था । इसके हो जाने से हार्टिकल्चर और पशुधन को बढ़ाने के लिये हायर आल्टीट्यूड पर आपरचुनिटीज मिलेंगी । 12 करोड़ रुपया एडीशनल खर्च करने के लिये दिया गया है और प्लानिंग कमीशन ने जो काम करने को कहा है वह किये हैं । चौधरी साहब अगर कहते हैं कि यह पांच करोड़ रुपया खर्च न किया जाय तो मैं उनको चिट्ठी लिख दूंगा कि चौधरी साहब समझते हैं कि पंतनगर, फैजाबाद और कानपुर में ही यह काम हो जायगा । उनकी यह सलाह है और एग्रीकल्चर से उनका इतना अधिक सम्बन्ध भी रहा है ।

चौधरी चरण सिंह—

आप मुझसे पूछते हैं तो मैं बतलाता हूं । आप पहाड़ और मैदान की बात कह कर फीलिंग फैलाने की बात न करें । उससे सारे सूबे का नुकसान होगा । पंतनगर की देखरेख में पहाड़ के लिये एक रिसर्च फार्म खोला जा सकता है । लेकिन पांच करोड़ रुपया यूनीवर्सिटी कैम्पस के नाम पर खर्च करना चाहते हैं तो इस पर मुझे ऐतराज है । आज भी एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट की तरफ से रिसर्च फार्म चल रहे हैं ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अगर इन्टरप्शन छोटे ही रहें तो ज्यादा अच्छा हो । अलगाव का भाव समाप्त हो तो मुझे खुशी है कि वह समाप्त हो गया है । हमारे बजट और सारे कार्यकलाप से जाहिर है कि चाहे मेरठ का रीजन हो, चाहे बदायूं का रीजन हो, चाहे पहाड़ का रीजन हो, चाहे बुन्देलखंड का रीजन हो हम सभी को दृष्टि में रख कर कार्य कर रहे हैं । अब चौधरी साहब जो कह रहे हैं मैं उनकी बात मानूं या एक्सपर्ट्स और आई0सी0आर0 की बात मानूं ।

चौधरी चरण सिंह—

अक्ल की बात मानें ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अक्ल आपके और मेरे दोनों के पास है । यह मैं मानता हूं कि मेरे पास अक्ल कम है । अक्ल हम दोनों के पास है । लेकिन टेक्निकल अक्ल उन्हीं लोगों के पास है । मान्यवर, एक बात चौधरी साहब ने कही कि सब पैसा स्टाफ और कर्मचारियों पर ही खर्च हो रहा है । उन्होंने कहा राज्य कर्मचारियों को दिया, लोकल बाडीज के कर्मचारियों को दिया, अध्यापकों को दिया । लेकिन मैं चाहता हूं कि विकल्प क्या है ।

चौधरी चरण सिंह—

प्रोडक्शन बढ़ाओ...

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

हां, प्रोडक्शन बढ़ाओ । लेकिन यह बीमारी तब तक रहेगी जब तक प्रोडक्शन नहीं बढ़ जाता और लेकिन सरकार किसी न्यायोचित मांग को ठुकरा नहीं सकती । लेकिन एक बात मैं स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि राजनीति न वे माधव बाबू के मन से कर सकते हैं और न चौधरी साहब के मन से और चौधरी साहब तो अनुशासन के मानने वाले आदमी हैं । मैं स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि सरकारी कर्मचारियों से अनुशासन के मामले में कोई समझौता नहीं होगा । लेकिन मैं उनकी जायज मांगों को दूंगा और एक बजट के बाद यदि हम अपने खर्चे की कमी में, अपने काम

में अच्छाई न पेश कर सकेंगे, तो अगले साल आप इसकी शिकायत कर सकेंगे हम सरकारी कर्मचारियों को छोड़ नहीं सकते । हम वह सब देंगे जो "सचिव" सरकार के मसविदे में, जो माननीय प्रभु नारायण सिंह, भूतपूर्व मंत्री, श्री गंगा बक्श सिंह और राम चन्द्र बिकल जी ने सूत्रीय कार्य-क्रम बनाया था । उसमें जो जो चीजें हैं, हम सब करेंगे, अनुचित बात नहीं करेंगे । चुनाव के जमाने में जूनियर इन्जीनियर्स का बड़ा फायदा उठाना चाहा . . समान वेतन-समान कार्य चौधरी साहब को हमारी पीठ तो ठोकनी चाहिये थी कि चुनाव के जमाने में भी हमने जूनियर इन्जीनियर्स की नाजायज मांग को नहीं माना और चौधरी साहब का भी तो पीठ ठोक दिया करें । तो हम न्यायोचित बात मानेंगे, अनुचित बात नहीं । माधव जी ने और उनकी पार्टी के लोगों ने हर जगह कहा, भाषण दिये । लेकिन हमने तय किया है कि हम अनुशासन-हीनता से समझौता नहीं करेंगे । डिसिप्लिन इज नाट निगोशियेबुल, लेकिन न्यायोचित मांगों को जरूर मानेंगे और इसीलिये आज प्रदेश में शांति है वरना वह रास्ता पकड़े होते तो आज अशांति का वातावरण ही नजर आता और इस वातावरण में हम इस प्रदेश के सृजन का काम नहीं कर सकते । जहां तक कर्मचारियों की वाजिब मांग, (नये वेतन-मान, तरक्की, हाउस रेन्ट एलाउन्स, छुट्टी एलाउन्स और महंगाई) का सवाल है, उसको हमने दिया ।

मान्यवर, हमारे नेता जनसंघ की 2-3 बातें बड़ी दिलचस्प रहीं । उसमें एक यह थी कि यह सरकार में केवल 150 सदस्य आने चाहिये थे, लेकिन बड़ा दुख हुआ कि इसमें 215 हो गये । तो मैं एक राय देता हूं कि आप चौधरी साहब के साथ मिल कर जो एक पार्टी बना रहे हैं उसमें 68 फीसदी ले आयें . . . । (व्यवधान) जिस तारीख में एक हो जायंगे आप तब आपको 38 या 30 फीसदी भी नही मिलेंगे । अलग-अलग दूकानें लगा कर अभी तो आप हमारे ग्राहकों को भड़का देते हैं लेकिन अब ग्राहक भड़कने वाले नहीं हैं और चौधरी साहब हमारी मदद में लगे हुए हैं । (हंसी)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

मुझमें और आपमें यही फर्क है कि आप खरीद फरोख्त में विश्वास करते हैं और मैं विश्वास करता हूं कि विचारों का मिलान होगा तो मिल जायगा ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

सारा जीवन ही एक व्यापार है । सच्चाई से काम करेंगे तो अच्छा फल पायेंगे और फरेब करेंगे तो सजा पायेंगे । लेकिन 32 व 68 की जो बात आप करते हैं । एक हो जाइये और फिर 68 हो कर दिखाइये ।

एक सदस्य--

दिखा देंगे ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा---

मैं उसका इन्तजाम करूंगा लेकिन आपकी हालत तो यह है कि आप जवाब देने के लिये तरसते रह जायंगे, जवाब मिलेगा नहीं ।

मान्यवर, माधव बाबू ने एक बात यह कही कि बाहर से आदमी ले आये । वैसे वह बड़ी कृपा रखते हैं लेकिन पता नहीं व्यक्तिगत छोटी सी बात क्यों उन्होंने उठाई ? क्वायटली पूछ लिया होता मेरे साथ कौन-कौन से आदमी हैं ? कौन गलत बात मधाव बाबू के कान में फूंकता रहता है । मुझे अन्देशा है कि जनसंघ को इससे खतरा है कि नेता की खबर देने वाले गलत बात कहें कि तीन आदमी ले आये हैं । दो आदमी जरूर लाया हूं एक का नाम है कोहली दूसरे का हेलोन । लेकिन मासूम नाम का तीसरा आदमी कोई मेरे साथ नहीं आया । पता नहीं

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

किसने मासूम माधव बाबू को मासूमियत में फंसा दिया ? आपको पता होगा कि पंडित पंत यहां से गये थे वो उनके साथ कोई गया था दिल्ली । मैं उस बात को कहना नहीं चाहता माधव बाबू, उस बात को उठाना अच्छा नहीं है । लेकिन यह लोग ऐसे हैं जिनका उत्तर प्रदेश में किसी से लगाव नहीं है, न वे परमानेन्ट सर्विस में हैं । उनका पोलिटिकल एप्वाइंटमेंट है। मुझे भेज दीजिये वह भी चले जायंगे । उसके पीछे क्यों पड़े हुए हैं, उनकी दुम क्यों मरोड़ते हैं । धोबी से बस न चले तो गधे के कान पकड़ने लगे.... (हंसी)

एक बात यह कहना चाहता हूं कि यह कहा गया कि हरिजनों के सवाल को लेकर पार्टी के लोग तरह तरह की बातें बना रहे हैं मैं उनको बतला दूं कि इस सूबे की सरकार का यह निर्णय है कि हम उनके साथ अन्याय और अत्याचार नहीं होने देंगे और उसके कारण कहीं किसी दल को हानि होती है, चोट पड़ती है तो मैं उसके लिए क्षमा चाहूंगा लकिन रास्ता हम नहीं छोड़ सकते ।

आखिरी बात माधव बाबू ने कही कि प्रशासन ढीला हो रहा है, काम सब बिगड़ रहा है । मुझे अफसोस यह है कि उसी स्वर में भीखालाल जी भी बोले और उनके बोलने से मुझे चोट लगी।

चौधरी चरण सिंह--

घर के आदमी जो हैं ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगणा--

इसलिये कि वह समझदार हैं । (व्यवधान) भीखालाल जी ने चौधरी साहब, माधव बाबू की नकल की । उन्होंने कहा कि सिस्टम आफ प्राइवेट ओनरशिप एंड पब्लिक ओनरशिप के एक्सपेंशन में पार्लियामेंट तथा असेम्बली की एकाउंटेबिलिटी का मिश्रण किया जा रहा है । हम औद्योगिक संस्कृति बनाने में रुकावट न डालें । चौधरी साहब, यहां पर कई दलों के नेता लोग हारे भी हैं और आप मुझे बतायें कि हारने के बाद संविद शासन काल में कोई न कोई काम सरकारी या गैर सरकारी उन्हें नहीं दिया गया ? हाउसिंग बोर्ड के चेयरमैन बना दिये गये गुप्ता जी जीवित हैं उनसे आप जाकर पूछ लें कि उनके शासन काल में क्या-क्या हुआ । मेरे सामने भी यही प्रस्ताव आया था कि करछणा की जनता ने मुझे रिजेक्ट कर दिया तो मैंने कहा था कि यदि बारा क्षेत्र से भी चुनाव जीतकर नहीं आता तो मैं किसी भी रूप से असेम्बली में नहीं आऊंगा ।

हम कमेटीज का एप्वाइन्टमेंट कर रहे हैं और आप देखियेगा कि मैं विरोधी दलों के लोगों को उसमें भी बराबर उसी प्रकार का प्रतिनिधित्व दिलाऊंगा जैसा कि यहां पर आप लोगों का प्रतिबिम्ब है । ये कारपोरेशन्स दो कारणों से बनाये गये हैं । इनसे कार्यक्षमता बढ़ती है । फर्स्ट फाइव इयर प्लान रुल्स में गलत हो गया था तो क्या वहां सेकिन्ड फाइव इयर प्लान नहीं चलाया गया या उसे दुरुस्त किया गया ? कम्युनिस्ट पार्टी ने तो यह सिखाया है कि अगर कोई भूल हो तो उसकी सुधार किया जाय, इन्स्टीट्यूशन्स खतम नहीं किये जा सकते । कहा गया कि रिक्शे वालों के लिये भी निगम बनाया गया है । मैं कहना चाहता हूं कि रिक्शे वाले की वक्त पर कोई मदद नहीं कर सकता है वह बेचारा पिसता रहेगा और जीवन भर रिक्शा खींचता रहेगा । उसको मुक्ति दिलाने के लिये ही हमने उसके लिये निगम बनाया है । उसके लिये निगम बनाने पर एक बैंक ने कहा कि हम 50 लाख रुपया दे सकते हैं उधार । हमारे पास तो पैसा भी नहीं था । इस बारे में माननीय सदस्यों ने ही शिकायत की थी और तब हमने किया । इसलिये आपको इस कार्य के लिये हमारी पीठ ठोकनी चाहिये थी और हमें बधाई देनी चाहिये थी या प्रश्न करने चाहिए थे कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो ?

प्रशासन के बारे में कहा गया कि मुख्य मंत्री के पास 29 विभाग हैं । अगर एक विभाग की 5 फाइलें भी उनके पास आयेंगी तो 145 हो गईं । कैसे देख पाते हैं । यह सारी चीजें

तो अफसरों के हाथ में है । मैं यह कहना चाहता हूं कि जब से मैं मुख्य मंत्री होकर आया हूं तब से आज तक 8 महीने हुये हैं । तीन आदमियों की एक कमेटी बना दी जाय और चौधरी साहब के शासन काल से कम्पेरिजन करा लें कि कितने भ्रष्टाचार के केसेज इन 8 महीने के दौरान रहे और कितने संविद के शासन काल के दौरान रहे । और मैं अनुभवहीन यहां आया हूं । बहुत समय इस प्रदेश से दूर भी रहा । तो चौधरी साहब को तो मालूम था कि किस डिपार्टमेंट में क्या क्या गड़बड़ी है । मैं तो यहां नया नया आया था और 8 महीने में ही क्लास वन व टू के कितने अधिकारी बरखास्त किये गये हैं, यदि मैंने उस पी० रएड में वह नोटिसेज दी हैं, जिनका हाईकोर्ट में भी चैलेंज नहीं हुआ है और आपके जमाने में हाईकोर्ट में चैलेंज होकर 75 परसेंट नोटिसेज आ गई थीं, आप मेरी एक भी बता दें तो मैं मान लूंगा कि हमारी व्यवस्था में कमजोरी है । आप आपने समय के और मेरे समय के 8 महीने की प्रशासनिक कारगुजारियों को इस दृष्टि से देख लें और फिर निर्णय कर लें । मैं अपने मन्त्रिमंडल में 11 रखूं तो आपको तकलीफ, 40 रख लूं तो आपको तकलीफ होगी । आपको तो हमारे हर कामों से तकलीफ हो जाती है । यह मेरा काम है कि हम देखें कि हम कितने लोगों से प्रदेश का काम चला सकते हैं । आपको कहना चाहिये था कि हम जो इतने कम लोगों से चला रहे हैं, वह काबिले तारीफ है और आपको उसकी तारीफ करनी चाहिये थी । मैंने कितने डी०एस०ओ०, डी०एस०पी०, डी०वाई०एस०पी० को निकाल दिया, उसके लिए आपको सरकार की तारीफ करनी चाहिए थी । आप कहते हैं कि मंत्री बढ़ा दीजिये । एक आदमी गाय खरीद कर लौट रहे थे । उनके साथ उनका बच्चा और गाय का बछिया भी साथ थी । लोगों ने रास्ते में सोचा कि उनसे बछिया कैसे छुड़ाया जाए । वह बाप कंधे पर बछिया को बैठाए लिए जा रहा था । रास्ते में एक ने कहा कि कैसा लड़का है कि बाप इतना बोझ लेकर चल रहा है और लड़का आराम से अकेले चल रहा है । यह सुनकर उसने बछिया को अपने लड़के को दे दिया, लेकिन कुछ देर बाद दूसरा मिला उसने कहा कि बुड्ढा तो मजे में जा रहा है और 18-19 साल के लड़के पर इतना बड़ा बोझ । तो उसने बछिया को उतार दिया वह पैदल चलने लगी । इस पर तीसरे ने कहा कि गाय बछिया इतना ज्यादा पैदल चल नहीं सकते हैं आप बछिया पर ज्यादती कर रहे हैं, उसे क्यों इतनी तकलीफ दे रहे हैं, आज रात यहीं रुक जाओ । वे उनकी बातों में आ गए और उस रात्रि में विश्राम के लिये वहीं रुक गये । उसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें दूसरे दिन न गाय मिली न बछिया । कम मंत्री है 11 हैं तो आपको तकलीफ है, ज्यादा रखूं तो भी आपको तकलीफ होगी ।

हेलीकाप्टर के बारे में कहा गया । इस प्रदेश के मस्तिष्क को आधुनिक बनाना पड़ेगा । एक सदस्य ने कहा इसमें एक देश नहीं कई देश होते तो अच्छा होता । तो हर जिले में कुछ गवर्नर होते और कितने राजदूत होते, यह आपने सोचा है । फिर आप कहते हैं कि कितना बोझ बढ़ रहा है । बंगला देश में 98 करोड़ का टैक्स लगाया गया है, जबकि हमसे कम आबादी वहां है । लेकिन उन्होंने इतना बड़ा टैक्सेशन किया है अपनी स्वतंत्रता को कायम रखने के लिये । हम जरा सांस लगाते हैं तो माधव बाबू के चिंगारी छूट जाती है । उत्तर प्रदेश की महान जनता को अपने अस्तित्व के लिये, अपने भविष्य को बनाने के लिये, निर्माण करने के लिए बहुत बोझ उठा देने हैं और मुझे आशा है कि इस प्रदेश की जनता उन्हें सहर्ष स्वीकार करेगी ।

अन्त में मैं एक ही निवेदन करना चाहता हूं सरकार का ध्यान निर्माण से हटाने के बाद, निर्माण की शिकायत नहीं करनी चाहिये । मुझे खुशी है कि फिलहाल उत्तर प्रदेश में शान्ति और व्यवस्था है । लेकिन रह रह कर मान्यवर, भाषणों में, बातों में, अखबारों में चर्चा सुनता हूं--- कभी हिंसात्मक प्रवृत्ति आगे बढ़ाने की, कभी सुनता हूं आन्दोलन करने की । हर उचित आन्दोलन का स्थान है जनतंत्र में । लेकिन जनतंत्र को समाप्त करने की कुचेष्टा उत्तर प्रदेश में हम पनपने नहीं देंगे, खड़े नहीं होने देंगे, रहने नहीं देंगे । इस कुचक्र से प्रदेश को हमें बचाना है, भविष्य को बचाना है । मुझे पूरी आशा है कि यह सारा सदन और माननीय चौधरी साहब

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

विपक्ष के नेता होते हुए भी, हमारी सारी शक्ति निर्माण में लगेगी, विध्वंस में नहीं । मैं आपका आभारी हूं कि इतनी देर आपने मेरी बातों को सुना ।

(सदन में देर तक मेजों की थपथपाहट)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

सारा बजट सुनने के बाद मुझे एक बात याद आयी, बहुगुणा जी और चौधरी साहब दोनों आदमी आंकड़ों में बड़े विद्वान लगते हैं ।

चौधरी चरण सिंह—

आप मुझसे नाराज क्यों हैं ?

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

बिल्कुल नहीं । मैं कहता हूं कि जानकारी है । लेकिन जो उन्होंने आज आंकड़े दिये, मुझे एक उदाहरण याद आया । जब लड़ाई चल रही थी तो किसी ने चर्चिल से पूछा कि कितने आदमी मारे गये । चर्चिल ने कहा कि 4 सौ मरे, 3 सौ के पट्टी बांधी गई, 2 सौ को अस्पताल के बाहर पट्टी बांधी गई । उनके प्राइवेट सेक्रेटरी ने कहा कि आप इस डेटेल से बातें बता रहे हैं कोई वेरिफाई करने लगे । उन्होंने कहा कि अगर वेरिफाई करेंगे तो वर्ष लग जायेंगे । तो आंकड़ों को हम वेरिफाई नहीं कर सकते । मैं जानना चाहता हूं कि परिणाम क्या हुआ ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

परिणाम यह हुआ कि उत्तर प्रदेश 1947 से आज बहुत सुखी है और सुख का रास्ता निकलेगा ।

श्री अध्यक्ष—

वित्त मन्त्री जी का उत्तर होगा । मैं पूछना चाहता हूं कि वह कितना समय लेंगे । इस बीच में कोई और वक्त की गुन्जाइश है ?

वित्त मन्त्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

लगभग 50 मिनट ।

श्री अध्यक्ष—

चार बज जायेंगे । माननीय सदस्यों को अभी समय दिया जा सकता है, अगर कम समय लें, पांच-पांच मिनट, तो माननीय सदस्यों को समय मिल जायगा ।

श्री दर्लासिह यादव (जिला शाहजहांपुर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय मुख्य मन्त्री की बड़ी लम्बी चौड़ी स्पीच सुनी। सबसे पहले मैं एक मिनट लेना चाहता हूं, जो कांग्रेस की केन्द्र से लेकर प्रांत तक 25 वर्ष की उपलब्धियां हैं, उनके ऊपर मैं एक मिनट में प्रकाश डालना चाहता हूं । इनके 25 वर्ष के शासन में राम और श्याम को पराया बना दिया गया । हमारी संस्कृति तथा उसकी पुत्रियां उपेक्षित हो गयीं । राजभाषा हिन्दी को विदेशी भाषा की चेरी बना कर रखने का प्रयत्न किया गया । देश की सीमाएं कटती रहीं । मां-बहनों की इज्जत ढाका और करांची की बाजार में नीलाम होती रही । हमारी आर्थिक रचना इसकी प्रतीक स्वतन्त्रता मास्को, लंदन और वाशिंगटन की गलियों में भिखारिन बन कर भटकती रहीं । हमारी

प्रधान मन्त्री वाशिंगटन, लंदन और मास्को की गलियों में कटोरा लेकर भीख मांगती रहीं। यह शर्म की बात है। हमारा देश कृषि प्रधान है। मैं उनको बधाई देता हूं कि 25 वर्ष गुजर

(इस समय 3 बजकर 20 मिनट पर अधिष्ठाता श्री रामा.णराय पीठासीन हुए।)

जाने के बाद आज उनको याद आया कि कृषि में प्रगति की जाय। उनको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि टेक्निकल ढंग से खेती करने का एकमात्र यही तरीका है, जैसा उन्होंने बजट में दिखाया है, इसके लिए कृषि विश्वविद्यालय खोल रहे हैं, केवल कृषि विश्वविद्यालय खोलने से प्रदेश की कृषि समस्या हल नहीं हो सकती है। कृषि समस्या हल करने के लिए गम्भीरता से सोचना होगा। जो ऐग्रीकल्चर का बजट रखा गया है वह बहुत कम है। मैं इस बात का दावा करता हूं कि इस बजट से किसी भी कीमत पर कृषि की प्रगति नहीं हो सकती है। हमें ऐग्रीकल्चर की प्रगति करने के लिये टेक्निकल ढंग से खेती करने के लिये हमको उपलब्ध हो फर्टिलाइजर, फंजीसाइड्स, पेस्टीसाइड्सव, इंसेक्टीसाइड्स, वीडी साइड्स हमको इन सारी चीजों की आवश्यकता पड़ेगी। तब टेक्निकल ढंग की खेती कर सकते हैं। आपने जैसा अभी कहा, माननीय मुख्य मन्त्री जी से मैं निवेदन करूंगा कि उन्होंने अपनी बात कह दी है, चूंकि लीडर आफ दि हाउस हैं, और मैं साधारण सदस्य हूं, मेरी बात भी वह सुन लें, आपने जो ऐग्रीकल्चर के प्रति इतना भाषण दिया है लम्बा चौड़ा, मैं कहता हूं कि ऐग्रीकल्चर की प्रगति तभी हो सकती है जब ऐग्रीकल्चरल प्रोडक्शन सेंटर्स स्थापित किये जायं, हर ब्लाक लेविल पर ऐस्टोमालजिस्ट और प्लांट पैथालोजिस्ट रखे जायं। इसके अलावा खेती की प्रगति नहीं हो सकती।

माननीय सदस्य जानते होंगे कि तराई और नैनीताल एरिया में धान की पैडी में एक खैरा डिजीज लगती थी जिससे सारी फसल नष्ट हो जाती थी। पन्तनगर यूनिवर्सिटी के डाक्टर ने इसके सम्बन्ध में एक्सपेरीमेन्ट्स किये और मालूम हुआ कि डेफीशियेन्सी आफ जिंक के कारण बीमारी लगती है। फसल उगाने के लिये जो आवश्यक तत्व हैं उनके ऊपर जोर दिया गया है। लेकिन फर्टिलाइजर के ऊपर कोई जोर नहीं दिया गया है। हम अपने देश की खाद्य समस्या को सुलझाये बिना तरक्की नहीं कर सकते हैं।

आपने कहा है कि खेती की तरक्की करेंगे। लेकिन मैं नहीं समझ पाता कि खेती की कैसे तरक्की हो सकती है। एक साधारण किसान जो अपने गुजारे के लिये अपने खेत में मक्का उगायेगा। उसकी उपज और खर्चे का आपने कोई अनुमान नहीं लगाया है। उसका इनपुट आउटपुट से ज्यादा होगा। एक एकड़ के लिये दो बोरी डी0 ए0 पी0 खाद चाहिये इसकी कीमत 300 रुपये होती है और चार बोरी यूरिया की जरूरत है। इसकी कीमत 400 रुपये होती है। इसके अलावा 200 रुपये खेत की गुड़ाई-निराई वगैरा में व्यय होंगे। इस तरह से उसका खर्चा 900 रुपये होगा और उसमें जो मक्का पैदा होगी वह मुश्किल से 800 रुपये की होगी। जब किसान की पैदावार में खर्चा ज्यादा होगा और आमदनी कम होगी तो देश कैसे तरक्की कर सकता है।

जहां तक आपने कहा है कि पशुपालन के लिये भी कार्य कर रहे हैं जिससे हमारे पशुधन में तरक्की हो। कृषि का और पशुपालन का अटूट सम्बन्ध है। इसको किसी भी दशा में अलग नहीं किया जा सकता है। मैं जानना चाहता हूं कि आपने पशु धन की तरक्की के लिये क्या किया है। बजट में आपने क्या रखा है। पिछले साल जो अस्पताल स्वीकृत हुए थे उनमें से सकड़ों अस्पताल ऐसे हैं जिनके पास इमारत नहीं है। डाक्टर के रहने के लिये कोई मकान नहीं है। अभी शाहजहांपुर जिले में मैं एक एस0 ई0 महोदय के साथ बंदा ब्लाक में गया था। वहां के डाक्टर ने बताया कि अस्पताल एक 20 रुपये माहवार किराये की बिल्डिंग में है। उसके रहने के लिये कोई इंतजाम नहीं है। मकान चूता है। पशु धन की तरक्की के लिये ब्लाक लैविल पर अच्छे जानवर होने चाहिये।

[श्री दर्लसिंह यादव]

यूनिवर्सिटी कैम्पस बनाने के लिये 5 करोड़ रुपया रखा गया है जिसमें से इस साल 25 लाख रुपया रखा गया है। लेकिन उत्तर प्रदेश भूमि सुधार और विकास निगम पर 10 लाख रुपया खर्च कर सकते हैं। क्या उससे उत्तर प्रदेश का सुधार किया जा सकता है पहले हमको खेती की तरक्की करनी है। इसी पर सारे प्रदेश का भविष्य निर्भर करता है। मैं माननीय मुख्य मन्त्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि केवल मीठे-मीठे भाषणों से प्रदेश की तरक्की नहीं हो सकती है। उसकी तरक्की तभी हो सकती है जब प्रैक्टिकली अपना ज्ञान और शक्ति उस पर लगायें। इस प्रकार से अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। वैसे तो मुझे 20 मिनट का समय मिलना चाहिए।

श्री क्रांति कुमार (जिला बिजनौर)—

मान्यवर, आपने मुझे जो चर्चा का समय दिया उसके लिये मैं आपका बहुत आभारी हूं। चर्चा के समय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता ने यू0पी0 एग्रो इन्डस्ट्रियल कारपोरेशन का जिक्र किया। मैं आपको बताना चाहता हूं कि पहली जनवरी से मैं यू0पी0 एग्रो इन्डस्ट्रियल कारपोरेशन का अध्यक्ष हूं। इसलिए मैं मुनासिब समझता हूं कि अपनी बात को रखूं। जो चित्र माननीय सदस्य ने सदन के सामने रखा वह ऐसा है कि मानो पूरे भ्रष्टाचार का घर एग्रो ही है। मैं माननीय सदस्य को बताना चाहता हूं कि जो उन्होंने कहा कि लगभग ढाई करोड़ का घपला है यह ऐसा है जो वसूल होना है। मैं संक्षेप में इतना ही कहना चाहता हूं कि जो 78 लाख बकाया है और उसमें से 3 या 4 लाख बैड डेट हो सकता है। वही यहां रख दिया गया है। दूसरी बात माननीय सदस्य ने बार-बार यह कही कि एग्रो घाटे में चल रहा है। उसके सम्बन्ध में स्थिति यह है कि 1971–72 में 37.88 लाख, 1972–73 में 54.46 लाख और 1973–74 में लगभग 35 लाख का मुनाफा हुआ है। जहां तक प्रोइसी का प्रश्न है जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा, जब यह पाया कि वह घाटे में चल रहा है तो उसे समाप्त कर दिया जाये, ऐसा निर्णय लिया गया है और उसे किराये पर देने की बात की जाये। मैं माननीय सदन को बताना चाहता हूं कि वह शीघ्र ही किराये पर दिया जा रहा है। मैं संक्षेप में कहना चाहता हूं। जैसा माननीय सदस्य ने कहा कि यहां पर आई0 ए0 एस0 अफीसर्स की भरमार है। तो मैं बताना चाहता हूं कि यहां पर 17 सदस्यों द्वारा प्रबन्ध होता है जिनमें 4 नान अफीशियल, 6 सीनियर गवर्नमेंट आफीसर्स और 7 आई0ए0 एस0 आफीसर्स हैं। ट्रैक्टर के प्रोडक्शन में भी वृद्धि हुई है। पहले 84 ट्रैक्टर प्रतिमास के हिसाब से हमें मिलते थे लेकिन अबकी बार हमें 100 ट्रैक्टर प्रतिमास के हिसाब से मिले हैं और अब औसतन 150 ट्रैक्टर पाने का प्रयास है।

दूसरी बात पार्ट्स ब्लेक मार्केटिंग की कही गयी। यह कहा जाता है कि स्पेयर पार्ट्स में ब्लैक मार्केटिंग होती है। इस संबंध में मैंने प्रत्येक सर्विस स्टेशन पर स्टाक बनाने का प्रबन्ध कर दिया है। ऐसी दशा में मैं समझता हूं कि कोई शिकायत नहीं मिलेगी। दूसरी बात कस्टम के संबंध में कही गयी है। तो मैं कहना चाहता हूं कि इस समय डीजल के दाम भारी बढ़ गये हैं फिर भी उसके रेट में बढोत्तरी नहीं की गयी है। मैं बताना चाहता हूं कि पहली जनवरी तक 10 हजार घंटे प्रतिमाह किराये पर काम किया और अब 13 हजार घंटे प्रतिमास चल रहा है। अब मैं अपनी बात 5 मिनट में समाप्त करता हूं। माननीय अधिष्ठाता महोदय ने लाल बत्ती जला दी। अब मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। मान्यवर, मैं आपका बहुत आभारी हूं जो आपने मुझे अपने विचारों जो व्यक्त करने का अवसर दिया।

*श्री जमुना प्रसाद बोस (जिला बांदा)---

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका आभारी हूं जो आपने मुझे बोलने का अवसर दिया । मान्यवर, मैं सरकारी पक्ष का ध्यान बांदा जनपद की ओर दिलाना चाहता हूं । मान्यवर, बांदा ऐसा जिला है जहां से कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली है। बांदा जिले की सारी सीट कांग्रेस हार चुकी है । सरकार इस बांदा जिले के प्रति यह दृष्टिकोण रखती है कि चूंकि इस जिले से सारी की सारी सीट कांग्रेस हार चुकी है और जनता ने कांग्रेस को स्पोर्ट नहीं किया है इसलिये इस जिले की अवहेलना की जाय। मान्यवर, यही हाल बुन्देलखन्ड की भी है । बुंदेलखण्ड से भी कांग्रेस को कम सीटें नहीं मिली हैं इसलिये बुंदेलखड की भी अवहेलना की जाय । मान्यवर, मैं चाहता हूं कि जो इन जिलों की सुख-सुविधाओं के प्रति सरकार द्वारा अवहेलना की गई है, उसकी उपेक्षा न की जाय और वहां के लोगों की जो समस्यायें हैं, बजट में इन दोनों जिलों को छोड़ दिया गया है, बजट में उनके लिये प्राविधान किया जाय । अभी हमने समाचार-पत्र में पढ़ा कि सरकार ने एक करोड़ 30 लाख का जो ड्रिंकिंग वाटर है उसमें 1 करोड़ 3 लाख का धन और बढ़ा दिया है ।

मान्यवर, इन दोनों जिलों की सड़कों के बारे में, वहां पर जिला परिषद् के जो स्कूल्स हैं उनके बारे में और जो नहरें हैं, इन सारी चीजों की ओर सरकार को खासतौर से ध्यान देना चाहिये । सरकार से मेरा निवेदन है कि सरकार अपने बजट में धन बढ़ाकर ऐसी व्यवस्था करे जिससे लोगों की जो कठिनाइयां हैं, वह दूर हो सकें । हमारे जिले में जनता की मांग है कि सरकार चाहे टैक्स बढ़ा दें लेकिन वहां पर सड़क की व्यवस्था की जाय । वहां पर एक गांव से दूसरे गांव में लोग आजा नहीं सकते हैं । वहां पर बाढ़ के कारण वहां के बच्चे स्कूल नहीं जा पाते हैं और न पढ़ पाते हैं । यह कठिनाई इसलिये है कि वहां के गांवों में लोग आज भी आने-जाने नहीं पाते हैं । वहां पर आने-जाने का कोई साधन नहीं है । मैं आपसे बताना चाहता हूं कि बांदा जनपद एक ऐसा जनपद है जहां पर रोज हरिजनों की समस्यायें उठा करती हैं । हरिजन समस्या का मूल कारण यह है कि वहां पर प्रचंड गरीबी है । वहां पर जो हरिजन हैं उसके पास आमदनी का कोई जरिया नहीं है और दूसरी ओर वहां पर उद्योग कम हैं । वहां पर उद्योग के लिये कोई साधन ही नहीं हैं वहां पर लोगों का कैसे विकास हो सकता है । मैं चाहता हूं कि अगर आप सही माने में चाहते हैं हरिजनों की समस्याओं का समाधान हो, वहां के गरीबों के लिए, खेतिहर मजदूरों के लिए सहायता की जाय, जिससे वहां पर वे लोग उद्योग स्थापित कर सकें और उनकी समस्याओं का समाधान हो सके तथा वे अपना समय उसमें लगा सकें ।

डाक्टर चरण सिंह (जिला लखनऊ)---

मान्यवर, मैं आपका बहुत आभारी हूं जो आपने मुझे बोलने का अवसर दिया । मैं कई दिनों से सदन में जो बहस हो रही है और बहुत से विषयों पर प्रकाश डाला गया है मैंने उसको सुना । आदरणीय मुख्य मंत्री जी ने बहुत अच्छे ढंग से बताया कि किस तरह से हमारे प्रदेश में उन्नति हुई । उन्होंने यह भी बताया कि हमारी क्या योजना है जिससे हम प्रगति कर सकें ।

जहां तक स्वास्थ्य का संबंध है, मेडिकल और पब्लिक हैल्थ का प्रश्न है माननीय वित्त मंत्री महोदय के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने हमारे देशवासियों की सुविधा के लिये अनेकों योजनायें बनायीं । मिसाल के तौर पर उन्होंने 32 एलोपैथिक अस्पताल, 36 यूनानी और 51 आयुर्वेदिक अस्पताल खोलने का इस वर्ष में प्राविधान किया है । इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में प्राइमरी हैल्थ सेन्टर्स के मातहत जो डिस्पेंसरीज थीं, उनमें दवाओं का कोई प्रबन्ध नहीं था । इनके लिये सरकार ने इस वर्ष के बजट में 1 करोड़ 40 लाख रुपये का प्राविधान किया है जिससे इन ग्रामीण क्षेत्रों में दवाओं के पहुंचाने का प्रबन्ध हो सके और

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[डाक्टर चरण सिंह]

ग्रामीण जनता को उसे लाभ हो सके । जब से हम आजाद हुए हैं, इस क्षेत्र में हमारे प्रदेश ने काफी प्रगति की है।

मैं सदन के सामने आंकड़े पेश करना चाहता हूं जिससे मेरी बात साबित होती है। सन् 1947–48 में जब कि इस मद में 2 करोड़ 10 लाख 6 हजार 5 सौ रुपया रखा गया था तो उस वक्त हमारा एक्सपैक्टेशन आफ लाइफ (स्पेन औफ लाइफ) 32.5 वर्ष था और 1,000 के पीछे जो डैथ रेट था वह 27.4 था । उसको देखते हुए 1958–59 में जब इस मद में 7 करोड़ 3 लाख 10 हजार 6 सौ रुपया रखा गया था तो उस वक्त एक्सपैक्टेशन आफ लाइफ 42.7 हो गयी और डैथ रेट 27 से 22 हो गया । इसी प्रकार 1972–73 जब इस मद में 21 करोड़ 8 लाख 72 हजार 891 रुपया रखा गया तो हमारा जो स्पैन औफ लाइफ था वह 48.2 हो गया और अब जब कि 1974–75 में यह धनराशि 30 करोड़ 2 लाख 49 हजार 6 सौ रखी गयी है तो अनुमान है कि हमारी एक्सपैक्टेशन औफ लाइफ 50.7 उम्र हो जायगी और इसी तरह से डैथ रेट भी कम हो जायगा । तो हमारे प्रदेश में इस क्षेत्र में बहुत ही प्रगति हुयी है । लेकिन अफसोस यह है कि हमारे माननीय सदस्यों ने, जो विरोध पक्ष में बैठे हैं, सिवाय आलोचना करने और टीका-टिप्पणी करने के कोई उचित सुझाव नहीं दिया है। उन्हें तो सरकार की कमियों और खामियों को बताते हुए तामीरी सुझाव देने चाहिये थे । जहां हम लोग अपनी कमियों को दूर करने और प्रदेश की तरक्की में लगे हुए हैं, वहां विरोध पक्ष के लोग इंतिजार करते हैं और एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे हैं । मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि वे इस तरह से चलें और हमारी सरकार को भी सुझाव दें हमारी सरकार प्रगति के रास्ते पर चल सकें । इन शब्दों के साथ मैं इस बजट का समर्थन करता हूं ।

*श्री मुहम्मद मसूद (जिला आजमगढ़)—

मोहतरिम स्पीकर साहब, मैं आपके तवस्सुत से सरकार की तवज्जह 3 बातों की तरफ दिलाना चाहता हूं । जहां तक मैंने बजट के सिलसिले में हुयी तकरीरों को सुना और बजट को पढ़ा, उसमें 3 बातों की तरफ सरकार ने ध्यान दिया है। एक तो उर्दू के सिलसिले में। उर्दू के बारे में मुझे यह अर्ज करना है कि इसे सरकार ने हमेशा बे तवज्जह का शिकार रखा है। कागजी बातें कुछ लेकिन अमली बात उसके खिलाफ होती है । मिसाल के तौर पर यहां इस मर्तबा, जब इलेक्शन्स हुए कुछ उर्दू असातजा जरूर रखे गये लेकिन उनको फौरन हटाया जा रहा है। दूसरे यह भी देखा गया कि उर्दू के माध्यम से न होकर हिन्दी के माध्यम से ट्रेनिंग दी जा रही है । प्राइमरी स्कूल्स जो उर्दू माध्यम के स्कूल हैं उनमें हिन्दी माध्यम में इम्तिहान लिये जा रहे हैं। एक तरफ तो उर्दू का ढोल पीटा जा रहा है और दूसरी तरफ यह किया जा रहा है । आज इस ऐवान के अन्दर अच्छी-खासी तादाद मौजूद है ऐसे लोगों की जो कि महज गजट और दूसरी चीजें उर्दू में होने की वजह से मैं भी उनमें शामिल हूं कार्य-वाही में हिस्सा नहीं ले सकते । मैं यह नहीं जानता कि नियमावली में क्या चीज है। सबसे बड़ी ताज्जुब की बात यह है कि उर्दू जो इस देश और इस उत्तर प्रदेश की जबान है उसमें वित्त मंत्री जी का बजट और भाषण नहीं छपा, हां अंग्रेजी में जरूर छपा है...

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

इन्तजाम हो रहा है उर्दू में...

श्री मुहम्मद मसूद—

लेकिन मिलेगा कब ?

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

आपके जमाने में ।

श्री मुहम्मद मसूद--

मगर आप भी तो उर्दू नहीं बोलते । अगर हिन्दी में छाप सकते थे, अंग्रेजी में छाप सकते थे तो कोई वजह नहीं थी कि उर्दू में छाप करके नियमावली और तकरीरें न दे दें । इस ऐवान में 30-35 ऐसे आदमी हैं जो आयकी नियमावली नहीं जानते कि सवाल कैसे देना है, क्या करना है। अगर वाक्फियत हो तो अपना फर्ज बहैसियत मेम्बर के अंजाम दे सकते हैं । दुख तो इस बात का है कि वजीर माल जब तकरीर करने खड़े होते हैं तो यह अहसास नहीं करते कि उसको समझने में कुछ लोगों को दिक्कत हो सकती है । ऐसी कड़ी हिन्दी में लफ्ज तलाश कर करके लाते हैं जिससे बेचारे न समझ सकें ।

इस बजट के सिलसिले में आपने अरबी दरसगाहों पर भी अपनी नजरे-करम फरमाई है । अगर रुख देखा जाय तो अच्छा है, लेकिन हमें चीफ मिनिस्टर साहब की तारीख मालूम करनी होगी कि वह कहां से आये हैं ।आप उसी मरकज से आये हैं जिसमें बैठ कर के इस अलीगढ़ यूनिवर्सिटी पर वार किया गया था और ऐसा इन्तजाम किया था कि चन्द सिक्कों की इम्दाद देने के बाद 1972 में ऐसा ऐक्ट ले आये जिससे अलीगढ़ यूनिवर्सिटी दीवारे गिरियां बनी हुई हैं । तो क्या वही हथियार आप अरबी दरसगाहों पर भी इस्तेमाल करना चाहते हैं जिन्होंने माल्टा को जीनत बख्शी है ? क्विट इंडिया का नारा जब लगा था तो लगाने वाले इसी अदारे से निकले थे । आज चन्द सिक्कों की इमदाद देकर अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की तरह हमें डर है कि कहीं इसे भी दीवारे गिरियां न बनाया जाय ।अगर साफ तौर से मेरी आवाज इन अदारों के सरपरस्तों तक पहुंच सकती है तो मैं गुजारिश करूंगा कि हमारे चीफ मिनिस्टर साहब की और मरकज की तारीख भी देखने से जाहिर हो जायगा कि चन्द बिरम की वजह से एक जाल आपने फेंका है जिसकी वजह से अलीगढ़ जब लूट लिया तो अब इरादा है कि इस दरवाजे से उन पर भी कब्जा करें ।

इसमें अकलियती कमीशन की बात कही गयी है, लेकिन यह पता नहीं चलता कि वह रहेगा किसके ताबे ?अगर आपके ताबे रहेगा तो ये फसादात कभी भी खत्म होने वाले नहीं हैं । अगर शिया-शुन्नी फसादात हो सकते हैं उनकी मौजूदगी में और चीफ मिनिस्टर साहब उनको रोक नहीं सकते जबकि चीफ मिनिस्टर साहब को 1 हफ्ते पहले खबर दे दी गयी थी....

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

मुझे किसी ने नहीं कहा ।

श्री मुहम्मद मसूद--

मैं दावा करता हूं कि 15 तारीख को फसादात हुए हैं और 7 तारीख को उनको इल्म करा दिया गया था, क्या यह झूठ है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

बिल्कुल झूठ है।

श्री मुहम्मद मसूद--

अहमद हुसैन, दिलदार हुसैन के यहां आप दावत खा रहे थे तो आपको बताया गया था मैं इस्तीफा देने के लिये तैयार हूं अगर यह झूठ हो....

श्री अधिष्ठाता--

खां साहब, आपका समय समाप्त हो गया ।

श्री मुहम्मद मसूद—

बस दो मिनट और दे दीजिये । एक मैं आपसे इस्तदुआ करूंगा कि....

"दोरंगी छोड़ कर एक रंग हो जा,
सरासर मोम हो या संग हो जा।"

अगर आप चाहते हैं कि ऐडमिनिस्ट्रेशन ऐसा हो तो किसी मसले की जरूरत नहीं है— न अकलियत कमीशन की, न किसी और की । लेकिन अगर नेकनीयती नहीं है तो यह साफ जाहिर है कि आप एक जाल बना रहे हैं, जिस तरह का जाल कि आपने हरिजनों के वास्ते बनाया है, वही मुसलमानों के वास्ते बना रहे हैं । आप कुल्हाड़ी और छुरे लिये हुए हैं ।

एक सदस्य—

कुल्हाड़ी और छुरे आप लिए हुए हैं।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता—

अब आप बैठें । आप अपना स्थान ग्रहण करें ।

(व्यवधान)

आप तशरीफ तो रखिये, आपका समय समाप्त हो गया ।

श्री मुहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी (जिला वाराणसी)—

अधिष्ठाता महोदय, इससे पहले कि मैं मौजूदा बजट पर अपने ख्यालात का इजहार करूं मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि मुझे आपने बोलने का मौका दिया। चूंकि बजट का मसला है और हाउस में जैसा हम लोग देखते हैं कि आमतौर से अपोजीशन बेंचेज से उसकी शदीद मुखालिफत ही की जाती है । ("नहीं समझ में आया" की आवाज) आप शायद यह समझते है कि मैं हिन्दी नहीं बोल सकता हूं । अधिष्ठाता महोदय, मैं आपके माध्यम से यह निवदन करना चाहता हूं कि इस सदन में हमने जब भी देखा तो यही देखा कि जो विपक्ष के हमारे सहयोगी और साथी हैं जब वे बजट पर बोलते हैं तो उनको दूसरे की आंखों में जो एक मामूली सा तिनका पड़ा हुआ तो दिखायी देता है लेकिन अपनी आंखों के अन्दर पड़ी हुई शहतीर उन्हें दिखायी नहीं देती । जो बजट आज हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है यह बड़ा ही सन्तुलित बजट है और इसके लिये मैं अपने वित्त मंत्री जी और मुख्य मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं कि बड़ी संकट की परिस्थिति में भी आपने जो बजट प्रस्तुत किया है उसमें विशेष रूप से छोटे उद्योगों की तरक्की, हरिजनों की तरक्की, छोटी जाति के लोगों की तरक्की की ओर ध्यान दिया गया है।

एक बात और जिसके लिये मैं खासतौर पर अपने मुख्य मंत्री और वित्त मंत्री को बधाई देना चाहता हूं वह उर्दू का मामला है कि अभी हमारे एक साथी उर्दू के विषय में चर्चा कर रहे थे । बड़े अफसोस की बात है कि कल उन्हीं बेंचेज से एक साहब ने उर्दू की शक्ल को बिगाड़ देने की बात कही थी । उस समय उन्होंने एक लफ्ज भी कहना मुनासिब नहीं समझा और आज भी जब वह बोल रहे थे तो शायद उनका ध्यान उनकी ओर नहीं गया । वह थे हमारे माननीय साथी श्रीपाल सिंह जी जिन्होंने यह कहा था कि उर्दू से विदेशी होने की बू आती है । इसका रस्मुल खत अरबी और फारसी जैसा है, इसको देवनागरी कर देना चाहिये । एक इतनी बड़ी चोट भारत माता की कोख से पैदा होने वाली भाषा पर करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं । जैसे भारत के संविधान ने बहुत सी भाषाओं को मान्यता दी .

है उर्दू उन्हीं भाषाओं में से एक भाषा है। उर्दू किसी विदेश से इम्पोर्ट नहीं की गयी है। वह इसी धरती पर पली है, उसका यहीं जन्म हुआ है और यहीं आगे बढ़ी है । उर्दू सबकी भाषा है जैसा कि शायर ने कहा है:—

न टूटा है न टूटेगा किसी से रिश्तए उर्दू,
नजर आती है सब की जिन्दगी वाबस्तए उर्दू ।
गुलिस्ताने जहां के फूल जब चुन चुन के रखे हैं,
बना है तब कहीं इस शान का गुलदस्तए उर्दू।

मैं यह बताना चाहता हूं कि यह कोई ऐसी भाषा नहीं है जो किसी जाति या धर्म विशेष की हो, बल्कि यह एक ऐसी भाषा है जिसके अन्दर हिन्दुस्तान की तहजीब है, हिन्दुस्तान का कल्चर छिपा हुआ है । मैं श्रीपाल सिंह जी से कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की जो अन्य भाषायें हैं जैसे तेलगू आदि उनकी जबानें बदलने के लिये उन्होंने क्यों नहीं कहा (व्यवधान) मैं उर्दू के लिये माननीय मुख्य मंत्री जी को बधांई देना चाहता हूं. . . .

श्री अधिष्ठाता—

दो मिनट में समाप्त करें ।

श्री मुहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी—

आपने देखा होगा कि मेरे बोलने के बीच में लोगों ने किस कदर मदालखत की है, व्यवधान किया है।(व्यवधान) रास्ता आपने बताया है यही तरीका हमने भी सीखा है।

मान्यवर, मैं एक बात बुनकरों की समस्या के बारे में अवश्य कहना चाहता हूं । उत्तर प्रदेश में सबसे बड़ी दस्तकारी बुनकारी की दस्तकारी का काम होता है। मुझे खुशी है कि इस बजट में दस्तकारी को प्रोत्साहन देने के लिये कदम उठाया गया है, लेकिन उसके बावजूद दस्तकारों की कुछ समस्यायें हैं जिनका मैं जिक्र करना चाहता हूं। रेशम और सूत के जो बुनकर माल बनाते हैं उनके माल को विदेशों में भेजने के लिये उनको कोई सुविधायें प्राप्त नहीं हैं । लखनऊ में बने हुए चिकन के कुर्तों की विदेशों में बहुत मांग है । एक बार 9 हजार से ऊपर कुर्ते विदेशों में गये थे । अब करीब 9 लाख से ऊपर की मांग वहां से आयी है । इसके अलावा जो रेशम का काम करने वाले हैं कुछ उनकी और भी समस्यायें हैं । मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि वे इस ओर ध्यान दें. . . (व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता—

आपका समय समाप्त ।

एक सदस्य—

मैं उर्दू जानने वालों से कहूंगा कि वे इधर आ जायें ।

*श्री राजेंद्रकुमार गर्ग (जिला सहारनपुर)—

मान्यवर, आज सुबह से हम लोगों ने माजी और मुस्तक्विल को टकराते हुए देखा है। आज के युग में हम लोग इंसान को चांद की तरफ ले जाना चाहते हैं मगर पहुंच नहीं रहे हैं। आज हम बधाई देना चाहते थे माननीय बहुगुणा जी को, मगर मान्यवर, रुकावट पैदा होती है बधाई देने में । रुकावट पैदा उन आंकड़ों से नहीं होती है जो माननीय चौधरी साहब ने दिये हैं । रुकावट पैदा उन ख्यालात से भी नहीं हो रही है जो

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[राजेन्द्र कुमार शर्मा]

माननीय चौधरी साहब ने जाहिर किये हैं, रुकावट तो सबसे ज्यादा उस भाषण से हो रही है जो माननीय नारायणदत्त तिवारी जी ने यहां दिया है। इसमें कहा गया है कि चौथी पंचवर्षीय योजना में इस तरक्की पसन्द ख्याल को लेकर, प्लान को बना कर, गरीब को ऊपर उठाया जायगा। इसमें यह भी है कि इस प्रदेश में इस राज्य की आय 3.1 फीसदी बढ़ेगी। साल में 3.1 फीसदी बढ़ेगी। हमारी प्रति व्यक्ति आय, परकैपिटा इन्कम 1.8 फीसदी बढ़ेगी। बहुत बढ़ेगी, हम बहुत तरक्की करेंगे। गांधी जी के सब ख्वाब पूरे होंगे। जवाहर लाल नेहरू जी की आत्मा को बड़ी शांति मिलेगी। आज तो हम लोगों को अपना सर शर्म से झुका लेना चाहिये। इसलिये शर्म से झुक जाना चाहिये था कि हमारा रास्ता सही है, मंजिल सही है, सेंटर हमारे साथ है, हमारे दोस्त आगे बढ़ना चाहते हैं। एटम का विकास भी हुआ है, लेकिन तरक्की की जो यह रफ्तार है क्या वह टूटेगी ?

माननीय मुख्य मंत्री साहब ने बहुत से आंकड़े दिये और चौधरी साहब को जबाव देकर उनकी सियासत को पर्दाफाश कर दिया। लेकिन इस प्रदेश की गरीबी को, गरीब लोगों को क्या उन्होंने आगे बढ़ाया है ? क्या उन्होंने यह यकीन दिलाया है कि जब उत्तर प्रदेश का मुकाबला किया जायेगा अन्य राज्यों से तो क्या यह हरियाणा, पंजाब राज्यों से आगे निकल पायेगा। अगर मुकाबला किया जायेगा हमारे औद्योगिक विकास का तो क्या यह महाराष्ट्र या मद्रास या दूसरे राज्यों से आगे निकलेगा और हमें दूसरों के सामने सर नहीं झुकाना पड़ेगा। माफ करेंगे मेरे दोस्त, इन 25 सालों में मरकज में और प्रदेश में एक जबर्दस्त तनाव रहा है। सरकारें कांग्रेस की जरूर रही हैं, चाहें वह गोविन्द वल्लभ पन्त रहे हों, और चाहे वह सम्पूर्णानन्द रहे हों और चाहे वह चरण सिंह की सरकार रही हो लेकिन देश की आर्थिक स्थिति ऐसी ही रही है कि लगता है कि कोई विकास नहीं हुआ है। यहां बजट के आंकड़े दिये गये हैं ; उनसे पता लगता है कि योजना बनायेंगे आप पर एलोकेशन्स सेंटर देगा। पावर की योजना होगी तो सेंटर एलोकेशन्स देगा और बदकिस्मती से हमारे यहां सी० बी० गुप्ता साहब और मान्यवर सम्पूर्णानन्द साहब, उन पर जवाहर लाल नेहरू जी की बड़ी कृपा रही है। आज सवाल यह है कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने चुनाव के पहले 72 योजनाओं का उद्घाटन करके यह एलान किया है कि इस प्रदेश की गवर्नमेंट और सेंट्रल गवर्नमेंट में जो दिक्कतें थीं वह दूर होने जा रही हैं। अगर यह बात सही है तो बहुगुणा जी का आना इस प्रदेश में, एक मुनासिब कदम है। मैं अपने फाइनेंस मिनिस्टर साहब से पूछना चाहूंगा कि क्या आने वाली पंचवर्षीय योजनाओं में इस प्रदेश की प्रगति की रफ्तार 3.1 फीसदी ही रहेगी। मैं तो आपसे गुजारिश करूंगा कि इस बात का ख्याल छोड़कर कि हम किस पार्टी के हैं या किस दल के हैं, हम और आप मिलकर तय करें कि हमारे प्रदेश में औद्योगिक तरक्की 12.15 फीसदी होगी, कृषि की तरक्की 7-8 फीसदी होगी। मेरा कहना है कि सरकार को राज (?) कमेटी की रिपोर्ट पर अमल करना चाहिये। यहां जब भी कृषि पर टैक्स लगाने की बात आती है तो सभी खामोश हो जाते हैं। बजट तो आप लोगों ने बना दिया है। इस पर जो सुझावों की जरूरत है वह हम दे रहे हैं। माननीय मुख्य मंत्री जी इस सदन के नेताओं को बुलाकर कुछ लक्ष्य निर्धारित करें ताकि उत्तर प्रदेश को हम औद्योगिक विकास में, कृषि में और तेज रफ्तार के साथ आगे ले जा सकें।

(श्री अधिष्ठाता द्वारा माननीय नश्तर साहब का नाम पुकारे जाने पर।)

श्री एदल सिंह (जिला बुलन्दशहर)--

माननीय अधिष्ठाता महोदय, यह व्यवस्था का प्रश्न है। उधर के माननीय सदस्यगण बोल चुके हैं। इस पार्टी के सदस्यों को भी बोलने की आज्ञा दी जानी चाहिये।

श्री अधिष्ठाता--

अभी विरोधी पार्टी के सदस्य ने ही बोला है।

श्री एदल सिंह—

मान्यवर, कम्युनिस्ट पार्टी विरोधी पार्टी नहीं है। विरोधी पक्ष तो जनसंघ, भारतीय क्रांति दल आदि पार्टियां हैं।

श्री अधिष्ठाता—

आपको भी मौका मिलेगा।

श्री अब्दुल रहमान खां नश्तर (जिला कानपुर)—

अधिष्ठाता महोदय, हमारे बहुत से साथियों....

एक सदस्य—

मान्यवर यहां व्यवस्था का प्रश्न है। जब उधर से एक सदस्य बोल चुके तो हमारे तरफ के सदस्यों को बोलने का मौका दिया जाना चाहिये। कम्युनिस्ट पार्टी को हम उधर ही समझते हैं।

श्री अधिष्ठाता—

आप बैठ जायं। आपके तरफ के सदस्य को मौका मिल चुका है।

श्री अब्दुल रहमान खां नश्तर—

अधिष्ठाता महोदय, जहां तक हमारे साथियों ने और हमारे विरोधी दल के नेताओं ने तथा उनके बहुत से साथियों ने उत्तर प्रदेश की तरक्की न होने पर अपनी चिन्ता व्यक्त की है। मैं उनकी इस बात से सहमत हूं कि आजादी के बाद हिन्दुस्तान की बहुत सी रियासतों को देखते हुये उत्तर प्रदेश की रियासत ने उतनी तरक्की नहीं की है जितनी तरक्की और रियासतों ने की है। इस तरक्की में अनेक रुकावटें पड़ी हैं। जिससे उत्तर प्रदेश पिछड़ा रहा है। उत्तर प्रदेश के अन्दर बहुत दिनों तक ऐसे लोगों की सरकार रही जिससे केन्द्रीय सरकार और प्रदेश सरकार की नीतियों में फर्क रहा। प्रदेश सरकार के केन्द्रीय सरकार की नीतियों के खिलाफ काम करने के कारण जो केन्द्रीय सहायता उत्तर प्रदेश को तरक्की के लिये मिलनी चाहिये थी वह नहीं प्राप्त हो सकी।

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपके द्वारा सदन का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि जब से बहुगुणा जी की सरकार बनी तब से उत्तर प्रदेश में थोड़े समय में कितनी अधिक तरक्की हुई। बहुगुणा जी का आना हुआ कि 25 साल को उन्होंने 7–8 महीनों में इतना बदल दिया कि नये क्रांतिकारी परिवर्तन हो गये। बहुगुणा सरकार ने भ्रष्ट अधिकारियों तथा शरमायादारों के खिलाफ अनेक क्रांतिकारी कदम उठाये। ये भ्रष्ट अधिकारी तथा पूंजीपति लोग मिलकर उत्तर प्रदेश को लूट रहे थे उन्होंने इस थोड़े से समय में इनकी लूट को समाप्त करने के लिये ऐसे क्रांतिकारी कड़े कदम उठाये जिससे इनकी लूट में कमी हुई। मौजूदा बजट इस बात की मिसाल है कि गहुगुणा सरकार ने बजट में ऐसे उद्देश्यों को रखा है जिनको उत्तर प्रदेश की किसी भी सरकार ने नहीं रखा था। जैसे कि हरिजन के छात्रावास का आरक्षण, उच्च तथा माध्यमिक शिक्षा का हरिजन के छात्रों के लिये आरक्षण, वजीफे की धनराशि में बढ़ोत्तरी आदि नये-नये उद्देश्य बजट में रखे हैं। साथ ही साथ उन्होंने भूमिहीन हरिजनों के लिये भूमि दिलाने का कार्य तत्परता से चालू करने का निर्णय लिया तथा उनकी आवास समस्या को हल करने के लिये बजट में रखा गया है।

बहुगुणा सरकार ने माइनरटीज कमीशन मुकर्रर किया है। यह मांग हमेशा विरोधी पक्ष की तरफ से की जाती रही है। परन्तु अभी हमारे एक बी0 के0 डी0 के साथ बैठे हुये मुस्लिम मजलिस के एक साथी ने इस कमीशन की मुखालिफत की है। यह अफसोस की

[श्री अब्दुल रहमान खां]

बात है। इस सरकार को इस कमीशन के मुकर्रर करने के लिये मुबारबाद देना चाहिये। इस कमीशन के द्वारा हरिजनों व अन्य माइनरटीज जातियों की शिकायतों को कम किया जा सकेगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि जिस तरह गहुगुणा सरकार उर्दू जानने वालों के लिये उर्दू की तरक्की करना चाहती है, उन्होंने उर्दू को उच्च शिक्षा तक पढ़ने की सहूलियत देने के लिये कहा है, तो इसके लिये वे मुबारकबाद के पात्र हैं। परन्तु अध्यक्ष महोदय कुछ सदस्यों ने इसे हिन्दू जमात के ऊपर कलंक की बात कही है। जैसे जनसंघ इसे एक पोलीटिकल जमात मानता है।

जनसंघ एक पोलीटिकल जमात नहीं है। यह एक फासिस्ट जमात है। इसको पोलीटिकल जमात कहना अफसोसजनक बात है। उसकी एक मिसाल आज के अखबार में है। जब उत्तर प्रदेश के हिन्दू-मुसलमानों ने इस बात को तय कर लिया कि वह फसाद नहीं करेंगे तो जनसंघ ने हरिजन मुसलमानों को लड़ाने के लिये शिया सुन्नी को लड़ाने के उनमें फूट डालने के लिये इन्तजामात कर लिये हैं....

श्री अधिष्ठाता---

आपका समय समाप्त हो गया है। कृपया आप बैठ जायं।

श्री शफीकुल रहमान बर्क (जिला मुरादाबाद)---

सदरे मोहतरम, मैं इस वक्त सिर्फ आंकड़ों की रोशनी में यह बता देना चाहता हूं कि यह मौजूदा बजट जो आपके सामने पेश किया गया है, आया सही है या गलत। सन् 1974-75 में सरकार ने जो 40 करोड़ रु० का खसरा बताया है वह गलत है। रेवेन्यू मद की आमदनी 682.75 करोड़ रुपये दिखाई गई है। मेरी राय में यह तखमीना गलत है। सन 1973-74 के बजट में हुकूमत ने 671.12 करोड़ रुपये की आमदनी बताई है जिसके मुकाबले में अब यह कहा जा रहा है कि सिर्फ 653.06 करोड़ रुपया ही वसूल होगा। आमदनी में घाटे की वजह इस बिना पर यह गलत मालूम होता है कि हुकूमत ने इससे पहले यानी 1972-73 में 68.89 करोड़ रुपये वसूल होने का तखमीना लगाया था, लेकिन उससे ज्यादा वसूल हुये थे। बजट में तखमीना किया गया था कि 509.09 करोड़ रुपये वसूल होंगे लेकिन कुल वसूलयाबी 578.79 करोड़ रुपये हुई। इससे हम यह देखते हैं कि रेवेन्यू मद में जो तकमीना लगाया गया था उसमें बराबर इजाफा होता रहा है। सिवाय इसके कि कोई बड़ा टैक्स हुकूमत खतम कर दे तो ऐसी कोई बात बजट में नहीं बताई गई है।

दूसरी वजह यह है कि हुकूमत साल-ब-साल जितना रुपया कर्ज देने के लिये बजट में रखती है उससे कहीं ज्यादा कर्ज दिया जाता है। 1972-73 में हुकूमत ने कर्जा देने के लिये 51.55 करोड़ रुपये रखे थे। लेकिन जो रकम कर्जे में दी गई वह इससे 44.23 करोड़ रुपये ज्यादा थी। इसी तरह से 1973-74 में 37.38 करोड़ रुपये असिल तखमीने से ज्यादा कर्जा दिया गया। लेकिन मैं हुकूमत से पूछना चाहता हूं कि कर्ज जो दिया जा रहा है उसे कहां तक वसूल किया जा रहा है। मुझे तो इस बजट के देखने से मालूम होता है कि हुकूमत इस मामले में बिलकुल नाकाम है। मिसाल के तौर पर मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि सन् 1972-73 के बजट में हुकूमत ने इस कर्जे की वसूलयाबी की रकम 55.37 करोड़ रुपया बतलायी थी, लेकिन दरअसल वह सिर्फ 35.07 करोड़ रुपया ही वसूल कर पाई। यानी तकरीबन 20 करोड़ रुपया नहीं वसूल हो सका। पिछले साल 1973-74 के बजट में भी ऐसा ही रहा। हुकूमत ने 52.02 करोड़ रुपये वसूल करने का तखमीना लगाया था लेकिन दरअसल वसूलयाबी 13.29 करोड़ रुपया कम हुई। अगर हुकूमत कर्जा देने के बाद वसूल नहीं कर सकती तो सिर्फ यह उसकी नाअहली की दलील है। बल्कि उसे हर साल बजट

में बतलाये गये तखमीने से ज्यादा कर्ज देने का इखतियार नहीं होना चाहिये। हुकूमत के सबसे बड़े कर्जे यू0 पी0 इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड को दिये जा रहे हैं। मुझे इस सिलसिले में यह गुजारिश करनी है कि साल-ब-साल उसके कर्जों की रकम बढ़ती जा रही है। बिजली की पैदावार की जो हालत है उससे यह हाउस बखूबी वाकिफ है। देहातों में ट्यूबवेल बगैर बिजली के खड़े हैं, कारखाने बन्द है। शहरों में कई-कई घंटे बिजली गायब रहती है। लेकिन इसके बावजूद इसको गवर्नमेंट ज्यादा से ज्यादा सहारा दे रही है।

श्री बालकृष्ण सनवाल (जिला नैनीताल)—

मेरा ख्याल है वह लिखी हुई स्पीच को पढ़ रहे हैं।

श्री अधिष्ठाता—

वह अपने नोट से सहारा ले रहे हैं।

श्री शफीकुल रहमान बर्क—

तो फिर इसको आटोनोमस बाडी बनाने की जरूरत ही क्या थी क्योंकि उसको अपनी जरूरयात पूरा करने के लिये खुद इंतजाम करना चाहिये। सबरे मुहतरम में इस तरफ तव्वजो दिलाना चाहूंगा कि यकुम अप्रैल 73 को टैक्स और दूसरी मदों से मिलने वाली रकम का बकाया 104.18 करोड़ रुपया था। इसी तरह से जो-जो कर्जे हुकूमत ने दिये हैं और जो वसल नहीं हो सके हैं उसकी रकम 86.78 करोड़ रुपया है। अगर इन दोनों रकमों को जोड़ दिया जाय तो 190.96 करोड़ रुपया यानी तकरीबन दो अरब रुपया ऐसा है जो वसल किया जा सकता है अगर हुकूमत पूरी मेहनत करे। तो किसी नए टैक्स लगाने की जरूरत नहीं। (श्री अधिष्ठाता महोदय द्वारा स्थान ग्रहण करने के लिये कहे जाने के उपरान्त।) थोड़ा सा समय और दे दें नहीं तो मेरी बात ही का मलतब पूरा नहीं होगा:

ऐ तरक्की के खुदाओ तुम्हें शाबास मगर
मुल्क बरबाद किया तुमने मिनिस्टर बन कर
चलती फिरती हुई लाशों से भरी हैं सड़कें
हर तरफ गुरबतों अफलास का खूनी मंजर
होश में आओ तो असरारे तबाही समझाएं
मेरे साथ आओ तुम्हें मुल्क की हालत दिखलाएं
हर तरफ लूट के हर गाम है रिश्वत का रिवाज
अश्के मजबूर किसी वक्त न शोले बन जायं
तुम समझते हो कि गुलशन में बहार आई है
मैं तो कहता हूं कि ये बाइसे रुसवाई है।

आज उत्तर प्रदेश के अन्दर और हिन्दुस्तान के अन्दर अकलियतों के साथ जो नाइंसाफी हो रही है मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आपने कोई इंसाफ नहीं किया। उर्दू के साथ नाइंसाफी की गयी और उर्दू तहे तंग हो रही है, अलीगढ़ मुसलिम यनिवर्सिटी के साथ नाइंसाफी हुई और मुसलमान का खून पानी की तरह बहाया गया। आपने क्या किया।

(व्यवधान)

5 मई सन 73 को उर्दू में मुकम्मेल गजट शाये करने के लिये तय कर दिया गया था लेकिन मुकम्मिल गजट उर्दू में शाये नहीं हो रहा है। मैंने क्वेश्चन दिया था, मुझे तहरीरी जवाब मुख्य मंत्री का मिल चुका है। मेरी गुजारिश है कि मुकम्मल गजट उर्दू में शाये होना चाहिये।

(व्यवधान)

*श्री हरीश कुमार गंगवार (जिला बरेली)—

इसके लिये मैं माननीय तिवारी जी का स्वागत भी करता हूं। साथ ही साथ यह भी कहना चाहता हूं कि लगभग 25 प्रतिशत बजट पर्वतीय क्षेत्रफल में ले जाकर इसको पर्वतीय बजट की संज्ञा प्रदान कर दी है। होना भी चाहिये था कि तीन-तीन मिनिस्टर पर्वतीय क्षेत्र के हैं। आपने पर्वतीय बजट तो बनाया लेकिन एक बात भूल गये। आप समाजवाद की बात करते हैं लेकिन नैनीताल स्थित राज भवन का आपने कोई उपयोग नहीं किया। माननीय मंत्री जी और मुख्य मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि आखिर इस राज भवन की आज के जमाने में क्या उपयोगिता है। क्या इसका उपयोग कुमायूं यूनिवर्सिटी के लिये नहीं किया जा जा सकता। मेरा सुझाव है कि इस राजभवन को समाप्त करके उस स्थान पर कुमायूं यूनिवर्सिटी की स्थापना करें।

मान्यवर, म यह भी कहना चाहता हूं कि प्रदेश में प्रायर्टीज दी गयी हैं वह सही नहीं है। आपको चाहिये था कि 84 प्रतिशत जनता के साथ न्याय करते। इस प्रदेश में सड़कों और पुलों को जो स्थान मिलना चाहिये था, वह नहीं मिल सका और इस प्रकार हमारे प्रदेश की जो गरीब देहाती जनता है उसको सड़क और पुल नहीं मिल रहे हैं, जोकि सर्वोपरि मान्यता थी और जिससे उनका विकास सम्भव था सरकार कहती है कि प्रदेश की जनता और विरोधी पक्ष। हमारा साथ नहीं देते हैं। इस संबंध में मैं डिटेल में नहीं जाना चाहता और सिर्फ फिराक गोरखपुरी की शेर पेश करना चाहता हूं:—

न इधर-उधर की तू बात कर, ये बता कि काफिला क्यों लुटा।
तेरी रहबरी का सवाल है, मुझे राहजन से गरज नहीं।।

मान्यवर, प्रदेश आज भुखमरी और बेकारी का शिकार है और सरकार कहती है कि यह नहीं है, वह नहीं है। अगर आप प्रदेश की समस्याओं को हल नहीं कर सकते, तो छोड़ दें, इस धंधे को, कोई दूसरा काम देखें। कोई दूसरा उस जगह बैठेगा। लेकिन मुझे मालूम है कि आप इतने शर्मदार नहीं है कि उसको इतनी आसानी से छोड़ दें, जबतक कि प्रदेश की जनता आपको बाहर न निकाल दे।

इसी के साथ मैं कहना चाहता हूं कि बीसों बार इस प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों ने यह मांग की कि हमको अस्पतालों में दवा नहीं मिलती। हमको सार्टीफिकेट लिये बाध्य किया जाता है कि सरकारी कर्मचारी है। फिर भी दवा नहीं मिलती। उनकी मांग है कि इसके बजाय मेडिकल एलाउन्स दिया जाय क्यों नहीं उनको 5 प्रतिशत या 10 प्रतिशत मेडिकल एलाउन्स देते ताकि वह जहां चाहे अपनी चिकित्सा करा सकें।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि आज प्रदेश में विधायकों के साथ बड़ा अन्याय हो रहा है। विधायकों का सम्मान अफसरों के सामने नहीं रहा है। मैं मुख्य मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वह कृपया इस प्रदेश में अफसरों को ठीक करें ताकि विधायकों के साथ उचित व्यवहार किया जाय।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस सरकार के प्रशासन में से आज अनेकों गड़बड़ियां हैं। बरेली डी0 डी0 सी0 आफिस में एक मि0 राम चन्द्र शर्मा, हेड क्लर्क हैं जो पिछले कई सालों से एक ही काउन्टर का काम देख रहे हैं। मान्यवर यह सरकार अपने प्रशासन में ब्राह्मणों को प्रश्रय दे रही है।

(इस समय 4 बजकर 20 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

बरेली जिले के डिप्टी डायरेक्टर, कृषि, 5 वर्ष से एक ही स्थान पर जमें हैं। पी0एम0 ओ0 और डी0सी0एम0ओ0 सगे सम्बन्धी हैं और एक ही अस्पताल में हैं। प्रदेश में 270 जुडीशियल मजिस्ट्रेट्स की नियुक्तियां नहीं की गयीं, जिससे जनता को मुकदमों का शीघ्र न्याय नहीं मिलता। जिला परिषद् और नगर महापालिका के टीचर्स की मांगें 7-8 सालों से पड़ी हैं और उन पर विचार नहीं किया जा रहा है। शिक्षा समितियां डिस्ट्रिक्ट लेविल पर हैं, उनमें सब लोग कांग्रेस के भरे हैं। दूसरों को उनमें जगह नहीं दी जाती। मैं कहना चाहता हूं कि आपके सोशल वेलफेयर डिपार्टमेंट में भी भ्रष्टाचार है। जो सीनियर लोग हैं उनको नीचे रखा गया है और जो जूनियर लोग हैं उनको प्रोमोशन दिया गया है जबकि वे कम योग्यता के लोग हैं। इसी तरह से आप पी0सी0एस0 आफिसर्स के साथ बहुत ज्यादती कर रहे हैं। एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स कमीशन के अनुसार 40 प्रतिशत प्रोमोशन आपको उन्हें देना चाहिए लेकिन आप उनको नहीं दे रहे हैं। 49 के बाद एक भी पी0सी0एस0 आफिसर को आपने कलेक्टर नहीं बनाया जबकि एक आई0सी0एस0 4 साल के बाद कलेक्टर बना दिया जाता है। मेरा सुझाव है कि 8 साल-के बाद ही उनको कलेक्टर बनाया जाय।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--

अब आपका समय समाप्त हो गया है। आप समाप्त करें।

श्री हरीश कुमार गंगवार--

20, 25 साल का तजुर्बा जिन पी0सी0एस0 आफिसर्स को होता है उनको कलेक्टर बनाना चाहिए और उनसे काम लिया जाना चाहिए और एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स कमीशन ने जो रिपोर्ट दी है उसकी सिफारिशों को पूरी तौर से लागू करना चाहिए।

एक बात और है वह यह कि गांव सभा की जो प्रापर्टी है उस पर जो चाहता है कब्जा कर लेता है। इस सिलसिले में कानून में ऐसी रद्दबदल की जानी चाहिए जिससे गांव समाज की सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

श्री अध्यक्ष--

अब आप समाप्त करें। (शोरगुल)

श्री हरीश कुमार गंगवार--

मैंने जो सुझाव दिये हैं वे बहुत गम्भीर हैं इनको आप कार्यान्वित करें। इस शेर साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं--

कदरदानों की महफिल का यह अहवाल है आज,
बुलबुलों को तमन्ना है कि उल्लू होते।

श्री अध्यक्ष--

इस समय तक शासक पार्टी से 34, बी0के0डी0 से 18, जनसंघ से 12, कम्युनिस्ट पार्टी से 4, संगठन कांग्रेस से 2, सोशलिस्ट पार्टी से 3, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से 1 सदस्य बोल चुके हैं। इस तरह से कुल मिला कर 75 सदस्यों ने इस बहस में हिस्सा लिया। पिछले 5 वर्षों में यह संख्या सबसे ज्यादा है। अब वित्त मन्त्री उत्तर देंगे।

श्री नारायण दत्त तिवारी--

अध्यक्ष महोदय माननीय मुख्य मन्त्री ने अभी कुछ देर हुई मेरे बजट भाषण के प्रसंग में राजकीय, विकासात्मक तथा विविध दृष्टिकोण से अपने तर्क पूर्ण तथा ओजस्वी भाषण

[श्री नारायण दत्त तिवारी]

में बहुत सी शंकाओं का समाधान किया, फिर भी नियमानुसार मेरा दायित्व है कि जो वित्तीय पहलू हैं, जिन पर माननीय सदस्यों ने प्रकाश डाला उन पर सदन का ध्यान मैं आकर्षित करूं और किंचित शंका समाधान करने का प्रयास करूं। सर्वप्रथम में उप नेता विरोधी दल को बधाई देना चाहता हूं कि सदन की गरिमा रखते हुए उन्होंने अपने संसदीय कर्त्तव्यों का परिपालन किया और तथ्यपूर्ण भाषण दे कर हमारा मार्गदर्शन किया। मुझे आश्चर्य हुआ नेता विरोधी दल के भाषण को सुनकर जिसमें उन्होंने मेरे इस वर्ष के बजट भाषण में दूध और शहद की नदियां बहती देखीं। उन्होंने यहां पर भी यह दुहराया कि मेरे इस अकिंचन बजट भाषण पढ़ने के बाद उन्हें ऐसा आभास हुआ मानों बहुगुणा सरकार ने यह दावा किया है कि यहां पर दूध और शहद की नदियां बह जायेंगी। श्रीमन्, मैं यह कल्पना करने की ऐसी धृष्ठता कभी नहीं की। कदम-कदम और पृष्ठ-पृष्ठ पर मैंने यह स्पष्ट करने की चेष्टा की कि किस प्रकार से प्रदेश में आई संकटपूर्ण आर्थिक स्थितियां, कठिनाइयों, दुश्वारियों और चुनौतियों का सामना किया जाय।

श्रीमन्, यह कहा गया हमारे उत्तर प्रदेश में कर्ज बढ़ रहा है और उसके सम्बन्ध में आंकड़े भी नेता विरोधी दल ने दिये। उन्होंने कहा कि आज हम इतने अधिक कर्जदार हो गये हैं कि 450 रुपए प्रति व्यक्ति कर्ज उत्तर प्रदेश में हो गया है। अगर कोई और सम्मानित सदस्य इस बात को कहता तो मुझे इतना दुख न होता, इतना आश्चर्य न होता। मैं उनसे पूछता हूं कि क्या यह बात सही नहीं है कि संसार के प्रत्येक देश में किसी भी देश के बजट बनाने वाले वित्त मन्त्री को या किसी भी सरकार को आवश्यक है कि वह पूंजी व्यय के लिए कर्ज न ले? श्रीमन, समय इतना नहीं है मेरे पास प्रदेश, देश के आंकड़े रखे हैं कि किस देश के ऊपर कितना राष्ट्रीय कर्ज है। मैं केवल एक देश लेता हूं। इंग-लैण्ड में नार्मन टाइम्स ने नेशनल डेट के बारे में लिखा है--

"Borrowing by the State on the security of taxes was practised in Norman times but the National Debt really dates from the time of William III. The acknowledged debt in 1689 was about £664,000 on which the annual charge for interest and management was £40,000."

इंगलैन्ड में 1689 में पहली बार 6 लाख 64 हजार पौंड का कर्ज राष्ट्रीय कर्ज के रूप में था जो कि आज बढ़कर 33 अरब, 96 करोड़ 2 लाख 76 हजार पौंड हो गया है। इसी प्रकार अमरीका का राष्ट्रीय कर्ज जितना सारे देशों में का नेशनल डेट है, उससे ज्यादा कज अकेले अमरीका सरकार पर वहां की जनता के प्रति है। मान्यवर, कर्ज लेना आज की स्थितियों में कोई बुरी बात नहीं है और यह आवश्यक भी है। बल्कि मेरा दावा है कि हमें और अधिक कर्ज लेना चाहिये।

श्री रामसेवक यादव —

जो कर्ज की बात कही गयी है वह विदेशी कर्ज की बात थी या देशी कर्ज की बात थी?

श्री नारायण दत्त तिवारी—

दोनों की बात थी। श्रीमन् आप देखें। हमारे कर्ज के बारे में सिक्स्थ फाइनेन्स कमीशन ने जिसमें कि देश के बड़े बड़े अर्थशास्त्री हैं, कहा था —

"While the mounting debt liabilities of the States have attracted considerable attention in various forms in recent years, we would like to observe that there is nothing intrinsically alarming about this growth of public debt. The continuous increase in the indebtedness of the States to the Centre only reflects the assistance provided by the Centre to the States year after year for financing not only their plan outlays but also for meeting the non-plan needs.....

छठे फाइनेन्स कमीशन का कहना है कि राष्ट्रों को कर्ज लेना बुरा नहीं है क्योंकि यह कर्ज उस देश और प्रदेश की प्रोग्रेस को प्रतिविम्बित करता हूं। यह हमारी एक प्रकार से सहायता है। जो हमारे पास दूसरे आंकड़े हैं उनसे स्पष्ट हो जाता है कि हमारी कर्ज लेने की क्षमता क्या है ग्रोस नेशनल प्रोडक्ट यानी प्रदेश की कुल राष्ट्रीय आय जो है उसके मकाबले मे हमारा कर्ज बहुत कम है। मैं पुनः फाइनेन्स कमीशन के आंकड़े ले रहा हूं—

"The following table shows the relative ranking of the States on the basis of their relative debt burden worked out according to the principle mentioned above :

राज्यों की कितनी आमदनी है उसके मुकाबिले में उनके कर्ज को आप देखें। पंजाब में यह 6.5 परसेन्ट है, गुजरात 6.8, महाराष्ट्र में 6.9 और उत्तर प्रदेश का चौथा नम्बर है। यहां 7.9 प्रतिशत है यानी जितनी उत्तर प्रदेश की आय है, उसमें से केवल 7.9 प्रतिशत उस पर कर्ज है। जब कि तामिलनाड में 8.7 परसेंट और वेस्ट बंगाल में 9.3 परसेंट, हिमांचल प्रदेश में 33.2, राजस्थान 31.4 केरल में 70.1 और मैसूर में 14.9, और आन्ध्र प्रदेश में 13.4 है। आप देखें दूसरे राज्यों को जो कर्ज मिला है वह उनका कर्ज डोमेस्टिक प्रोडक्ट के मकाबिले में बहुत अधिक है। इसका मतलब यह है कि हमारी और भी ज्यादा कर्ज लेने की क्षमता है। उत्तर प्रदेश की तमाम सरकारों की तो समय-समय पर यह मांग रही है मार्केट बारोइंग बढ़ानी चाहिये। मैं दूसरे पहलू से इस प्रश्न को सदन के सामने रखना चाहता हूं। आखिर हमारा बन्क डिपाजिट है, उसमें प्रदेश का जितना रुपया जमा होता है, उसके अनुरूप उत्तर प्रदेश में खर्च-इन्वेस्ट नहीं होता है तो हम शिकायत करते हैं कि उत्तर प्रदेश का पैसा बाहर गया। अब आप देखें कि उत्तर प्रदेश के बैंकों में उत्तर प्रदेश की जनता का 621 करोड़ रुपया जमा हुआ। इस 621 करोड़ रुपये में से जो यहां इन्वेस्ट हुआ है वह केवल 259 करोड़ है यानी कुल 41.65 लगा है। अब हम रिजर्व बैन्क और प्लानिंग कमीशन से कहते हैं कि हमारी मार्केट बारोइंग बढ़ाइये ताकि हम प्रोडक्टिव स्कीम म रुपया बढ़ा सकें। इसलिये हमारी मांग तो यह है कि हम अधिक कर्ज लेने के हकदार हैं, किन्तु हमें उतना मिलता नहीं है, जो मिलना चाहिये। एल0 आई0 सी0 के साथ भी यही कहानी है। हमारे प्रदेश की जनता के टोटल प्रीमियम में से कुल 7 परसेंट अपने प्रदेश में लगा है। एल0 आई0 सी0 से कह रहा हूं हमारे यहां ज्यादा इन्वेस्टमेंट करो। तो प्रश्न यह नहीं है कि कर्ज कितना बढ़ा, प्रश्न यह है कि कर्ज लेकर विकास करना हर देश की राष्ट्रीय आवश्यकता है। तामिलनाड, महाराष्ट्र, गुजरात और केरल आदि सारे प्रदेश ऐसे ही आगे बढ़े ह। यह बुरा नहीं है। अपने यहां हम धन को और बढ़ाना चाहते हैं—पूंजी विनियोजन बढ़ाना चाहते हैं। इस प्रसंग में जो कहा गया कि हम केवल कर्ज ले रहे हैं, ऐसी बात नहीं है। हम दे तो रहे ह। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी किसानों, म्यूनिसिपल बोर्डों संस्थाओं, कारपोरेशनों को सहायता दी है, वह 1 हजार 60 करोड़ हमने दिया है और जो हमने पूंजी में लगाया है वह 1140 करोड़ रुपया है। इस प्रकार हमारा जो कर्ज है, कर्ज के मुकाबले में, 875 करोड़ के मुकाबले में आज हमारे जो अपने एसेट्समेन्ट हैं, जो हमें लेना है वह 2148 करोड़ है। तो कहने का मतलब यह ह कि आज ऐसी स्थिति नहीं ह कि हम दिवालिये हो रहे हैं। हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत ह। अब इस आधार पर हम आगे बढ़ रहे हैं और आगे अपनी वित्तीय संस्थाओं को बढ़ाना चाहत हैं।

जो कारपोरेशन के बारे में कहा गया कि यह मेरी व्यक्तिगत ब्रेन वेव है, उसके सम्बन्ध में मैं कहना चाहता हूं। श्रीमन्, देखें, आज उत्तर प्रदेश क्यों पिछड़ा है, इसलिए कि यहां पूंजीविनियोजन कम हुआ है, कैपिटल इन्वेस्टमेंट कम हुआ ह। यह कैसे ठीक होगा। क्या यह केवल गवर्नमेंट के जरिये होगा। सरकार को अगर करना होगा तो टैक्स लगाकर

[श्री नारायण दत्त तिवारी]

या रेवेन्यू बढ़ाकर करना होता है। यदि यहां बैठे जन प्रतिनिधि यह फैसला कर लें कि हम कोई कारपोरेशन नहीं बनायेंगे, हम तो गवर्नमेंट के जरिये ही कारोबार बढ़ायेंगे तो हम कितने पिछड़ जायेंगे, इतिहास इसके लिये कभी हमें माफ नहीं करेगा।

आज जितनी वित्तीय संस्थाएं हैं, बैंक हैं, ये सरकार के जरिये आगे काम करती है, इसके लिए इंस्टीट्युशंस बनाने पड़ते हैं। आज महाराष्ट्र में, केरल में, मेरे पास आंकड़े हैं केरल में 32 कारपोरेशंस हैं। उनकी सारी लिस्ट मौजूद है। पब्लिक सेक्टर इयर बुक है।, इस सम्बन्ध में अपने माननीय सदस्यों का मैं इसमें सहयोग चाहूंगा पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग्ज को बढ़ाने में। यह जो हमारी नीतियां हैं, कांग्रेस की नीतियां हैं, संसद की नीतियों के और विधान मंडल की नीतियों के अनुसार हैं। केरल में 32, महाराष्ट्र में 19, मैसोर जैसे छोट राज्य में जिसकी हमसे एक चौथाई आबादी है, 24 कारपोरशंस हैं। उड़ीसा में 43 कारपोरेशंस हैं, पंजाब में 13, आसाम में 19, आं में 12 कारपोरशंस हैं और हमारे यहां 16 कारपोरशंस हैं। तो यह किसी दूसरे दृष्टिकोण से नहीं बल्कि इसके लिए हम बैंकों से कह सकें—एग्रीकल्चरल रिफाइनेंस कारपोरशन एक संस्था है उनकी शिकायत रहती है कि उत्तर प्रदेश में एक लैंड डेवलपमेंट बैंक के अलावा कोई संस्था नहीं है जिसमें रुपया लगा सकें। प्लानिंग कमीशन रिजर्व बैंक सब कहते हैं कि आप कारपोरेशन नहीं बनाते। इस सिलसिले में जो हम कारपोरेशन बना रहे हैं वह कौन सी हैं? मेरठ और आगरा की ट्यूबवेल कारपोरेशन लीजिए। बरेली और लखनऊ की ट्यूबवेल कारपोरेशन लीजिए। इसका मतलब यह हुआ कि अगर हम बजट में कुल 100 ट्यूबवेल बनाते तो यह सोचते कि पूर्वी क्षेत्र जो पिछड़ा है, वहां पश्चिमी उत्तर प्रदेश से जहां ज्यादा सिंचाई के साधन हैं, वहां हमें ट्यूबवेल कम लगाना चाहिये, पिछड़े क्षेत्र में ज्यादा लगाना चाहिये। अब मेरठ और आगरा, बरेली और लखनऊ में ट्यूबवेल कारपोरेशन बनाने से हम एग्रीकल्चरल रिफाइनेंस कारपोरशन से गवर्नमेंट आफ इंडिया से 14 राष्ट्रीयकृत बैंकों से कर्ज ले सकेंगे। जितना शेअर कैपिटल लगायेंगे उसका दस गुना ऋण ले सकते हैं। जितना शेअर कैपिटल बढ़ायेंगे उतना ही रुपया ले सकते हैं। हरियाणा ने माइनर इर्रीगेशन कारपोरेशन बनाया है। नहरों के पानी को उन्होंने ट्यूबवेल से बढ़ाया है। इसका नतीजा होगा कि हम मेरठ, आगरा डिवीजन में जितना कर्ज ले सकें उतने ट्यूबवेल बना सकते हैं उसका बोझ बजट पर पड़ने वाला नहीं है। उसका नतीजा यह होगा कि बाकी रुपया बुन्देलखण्ड और पूर्वी जिलों में, जहां ट्यूबवेल की, ज्यादा आवश्यकता है उसके लिये इनवेस्ट कर सकते हैं। वहां रुपया लगा सकते हैं। इसी प्रकार ब्रास वेअर कारपोरेशन है। अगर बजट को ठीक से अध्ययन किया गया होता जैसा कि उपनेता विरोधी दल ने किया तो इसमें शाबाशी न देते तो कम से कम आलोचना कम होती। इसमें हैवी इंडस्ट्रीज कहां हैं। इसमें ऐग्रो इंजस्ट्रीज हैं।

गन्ने के आधार पर चीनी मिलें 26 बनायेंगे। यह बहुगुणा सरकार का संकल्प है जिससे किसान की आमदनी बढ़ेगी। आजमगढ़ जसे पिछड़े जिले में, हम पटेल कमीशन से भी आगे कदम बढ़ा रहे हैं इन प्रस्तावों के जरिये, बजट के जरिये वहां ऐग्रो इंडस्ट्रीज वढ़ा रहे हैं जिससे किसान मजबूत हो और किसान के आधार पर उद्योग बढ़े। बुनकरों को सूत देने के लिए हम स्पिनिंग मिल लगाना चाहते हैं। इसमें एक तरफ लाखों बुनकरों को रोजगार मिलता है और जो तामिलनाडू, महाराष्ट्र से सूत मंगाना पड़ता है वह नहीं मंगाना पड़ेगा।

12 करोड़ रुपये के मुरादाबादी बर्तनों का एक्सपोर्ट होता है। यह रामपुर में क्यों नहीं बन पाते हैं। केवल मुरादाबाद में ही बन रहे हैं। पाकिस्तान में पहले कोई इस तरह का उद्योग नहीं था वहां अब 44 करोड़ रुपये के बर्तन एक्सपोर्ट होते हैं। हम सोच रहे हैं कि मुरादाबादी बर्तन प्रदेश के अन्य स्थानों पर भी बनने लगें। इसके लिए एक कारपोरेशन बन रहा है ताकि आस-पास बदायूं, रामपुर, अमरोहा वगैरा में लोगों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार मिल सके और वहां भी मुरादाबादी बर्तन बनने लगें।

इस प्रकार से आपका जूता कारपोरेशन है। इसका हेड क्वार्टर आगरा में होगा। इसको देखना है कि इसके मारकेटिंग के क्या प्राबलम्स हैं, चमड़ा खरीदने के क्या प्राबलम्स हैं। आजकल आस्ट्रेलिया से चमड़ा मंगाना पड़ता है इन कारपोरेशन्स के लिए 50-50 लाख रुपये रखे गये हैं। इससे हम 5 करोड़ रुपया ऋण ले सकते हैं। इससे जनता पर टैक्स कम लगता है और बैंकों का जमा रुपया अपने ही यहां इनवैस्ट होगा। इसी प्रकार आपका वन निगम है या खनिज पदार्थों का निगम है। बांदा जिले में बौक्साइट होता है तो उसको क्या हम हिन्डालको को देते। इसीलिए हमने खनिज निगम बनाया है इस निगम से बुन्देलखण्ड के लिए नई आशा दिखाई देती है। मैं नहीं कहता कि यह कारपोरेशन्स हर मर्ज का इलाज है। हम अपने प्रदेश के पिछड़ेपन को दूर करने के लिये इनको बना रहे हैं, वित्तीय संस्थाओं को लाने के लिए कायम कर रहे हैं।

इसी प्रकार से आपका एक कंसल्टेंसी कारपोरेशन कायम करने जा रहे हैं। यह इसलिए है कि लोग कहते हैं कि हमारे पास रुपया है। लेकिन हमें अनुभव नहीं है और हमें पता नहीं है कि कौन सा उद्योग लगायें। यह ऐसे ही छोटे उद्योगों के लिए निगम है। किसी ने कहा कि हम एक प्रोजेक्ट लगाना चाहते हैं तो हम कौन सा उद्योग लगा सकते हैं। इस तरह की राय देने के लिए ही यह कन्सल्टेंसी कारपोरेशन बना है। ऐसी भी बात नहीं है कि हमारे सारे कारपोरेशन्स घाटे में चल रहे हों। बहुत से पहले से काम कर रहे हैं। जसे लघु उद्योग निगम है वह साढ़े तीन लाख के मुनाफे पर चल रहा है। इसी तरह से इंडस्ट्रियल फाइनेंशियल कारपोरेशन जो 45 लाख रुपये के मुनाफे पर चल रहा है। मेरे कहने का मतलब यह है कि 8-9 कारपोरेशन्स ऐसे हैं जो मुनाफे पर चल रहे हैं। हम ऐसी वांछना नहीं करते हैं कि सरकारी अधिकारियों के आधार पर इनको चलायें बल्कि ट्रेड आदमी रख कर इनको चलाने का प्रयास है।

श्री राम सेवक यादव--

मुनाफे के साथ-साथ इनवेस्टमेन्ट भी बताते चलें तो ज्यादा अच्छा है।

श्री नारायण दत्त तिवारी--

इसका पूरा विवरण दिया हुआ है। समय कम है इसलिये उसको मैं आपके पास भेजे देता हूं। मैं निवेदन कर रहा था कि इन कारपोरेशन्स को कायम इसलिये कर रहे है कि हम इनके द्वारा अपने देश की तरक्की करना चाहते हैं। यह कहा गया कि हम जापान को माडल टाउन मानें। अमेरिका वगैरा को न देखें। आप चाहे तो जापान को ले लें। इसके आंकड़े मेरे पास हैं। जापान में आज 16 फीसदी किसान खेती पर रह गये हैं बाकी जो 78 फीसदी थे अब एग्रो इन्डस्ट्रीज या दूसरी इन्डस्ट्रीज में चले गये हैं। जो जोते हैं वह उतनी ही है जितनी 1906 में थीं। 5378 जोते थीं अब 5342 जोते रह गयी हैं लेकिन जो संख्या है वह 16 फीसदी रह गयी है क्योंकि जापान ने मेकनाइजेशन इस्तेमाल किया है। जापान में पावर टिलर का इस्तेमाल करते हैं, छोटे ट्रैक्टर का इस्तेमाल करते हैं। हमारा विकास नहीं हो सकता है अगर हम पुराने ढंग से चलने लगें। इस बजट के सम्बन्ध में कहा गया कि प्रति व्यक्ति आय घटी है। विरोधी दल के नेता ने जो आंकड़े दिये हैं वह दुर्भाग्य से उन कर्मचारियों द्वारा दिये गये हैं जो रिटायर्ड हो गये ह। उन्होंने 1948-49 और 1960-61 के आधार को मानने में त्रुटि की है। अगर इस हिसाब से नेता विरोधी दल आंकड़ों को देखें तो मेरे आंकड़े ठीक बैठते हैं। हमें जितना बढ़ना था उतना नहीं बढ़े हैं। इसका कारण क्या है? जन संख्या म वृद्धि। जो इनकम ग्रोथ है वह 3.1 प्रतिशत है जबकि जनसंख्या में 1.8 प्रतिशत वृद्धि होती रही है।

श्री राम सेवक यादव--

क्या योजना बनाते समय जनसंख्या का ध्यान नहीं रखा जाता है?

श्री नारायण दत्त तिवारी--

अवश्य रखा जाता है । लेकिन जितना अन्दाज रखा गया था उससे अधिक वृद्धि हुई है । तो उसका आर्थिक प्रभाव हमारे रेट आफ इकोनामी पर पड़ा ।

श्री राजेन्द्र कुमार गर्ग--

क्या पर कैपिटा की इनक्रीज पर प्लान बनता है । यह प्लान है या मजाक है ।

श्री नारायण दत्त तिवारी--

जो यह बात कही गयी, यह मजाक नहीं है यह वास्तविकता है । आप कितना बोझ उठाने के लिये तैयार हैं इस प्रदेश के विकास के लिये । अगर आज हम अपेक्षा करें कि सारे अस्पताल, सारी नहरें और सारे विकास के कार्य हो जाये और जब साधनों का प्रश्न आये उनको जुटाने का नाम न लें । यह कैसे संभव हो सकता है । सारे विश्व में आर्थिक संकट है । संसार में इनफ्लेशन हो रहा है और लोग इनफ्लेशन पर रोक लगा रहे हैं । बैंक रोक रहा है कि मुद्रा प्रसार नहीं होने दो जो हम अर्जित करे वही देंगे । ऐसी स्थिति में यह बजट आ रहा है । इस बात को देखने की आवश्यकता है कि यह बजट मुद्रा स्फीति को बढ़ाता है या उसका मुकाबला करता है । हमें इस बजट को इस कसौटी में कसना है कि यह बजट क्या हमारे प्रदेश के जो बदबे हुये आर्थिक दृष्टिकोण से पिछड़े हुये वर्ग हैं उनको सहायता पहुंचाता है या नहीं । आप इस दृष्टिकोण से देखें कि यह बजट है, जो कर-भार है उसके लिये अधिक लोगों को प्रगतिशील आधार पर टैक्स व्यवस्था लाता है या नहीं । अगर इस दृष्टिकोण से आप इस बजट का मूल्यांकन करें तो फिर आप अवश्य सहमत होंगे। इसमें जो हमने कदम उठाया है वह सामान्य क्षेत्र को सहायता पहुंचाने वाला है । कृषि आधार को मजबूत करने वाला है । रघुपति सहाय फिराक की एक शेर है कि--नुक्तये तस्बीर तस्वीर नहीं होती, हल्कये जंजीर जंजीर नहीं होती। यह एक सवाल का बजट है। इसको कहिये सुझाव नहीं आया, कैसे नहीं आया। यह कह दिया जाय कि इससे सारी गरीबी क्यों नहीं दूर हुई । नहीं जंजीर की केवल एक कड़ी है यह तस्वीर जो हमारे आपके सामने है । यह तस्वीर है । अगर आप और हम सहयोग करें..

श्री राम सेवक यादव--

ठीक है, अगर आप चाहते हैं हमारे लोगों का सहयोग तो हमारा सहयोग रहेगा ।

श्री नारायण दत्त तिवारी--

शिक्षा के लिये, हरिजन अधिवासी के लिये, 1 वर्ष के लिये दुगुना प्राविधान कर दिया गया इसमें ढाई करोड़ रुपया बढ़ाया गया । क्या यह सही नहीं है कि इस बजट के माध्यम से जो आगरा के जूते बनाने वाले मजदूर थे उनकी बिक्रीकर को समाप्त करके उनके स्थान पर कार्य करने की व्यवस्था करके और तमाम जो इस प्रकार के जो दूसरे संसाधन हैं उनको जुटा कर एक नया प्रयास नहीं किया गया ? अब आप देखे श्रीमन्, यह कहूंगा कि इसमें मुझे बड़ी वेदना हुई । मेरे सम्मानित सदस्य बरेली ने इसको कहा कि इसमें पर्वतीय क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दिया गया है । मैं किस प्रकार से उनको आश्वस्त करूं कि यह बजट प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लिये बराबर, समान, आधार पर बनाया गया है । मेरे सामने जो आंकडे है पांचवीं योजना पर 2,921 करोड़ की योजना है । इसमें से जो बटवारा किया जा सकता है वह 1,344 करोड़ की योजना है जिसका बटवारा हो सकता है । अब ओबरा, सारे प्रदेश के लिये अकेला बिजली घर में 700 रु0 लगाने वाला है टेहरी बांध में डेढ़ सौ करोड़ टेहरी डूबने वाला है । टेहरी डूब इसलिये रहा है ताकि पश्चिमी जिले तरक्की करें । इसलिये डूब रहा है । अब इसमें अगर कोई कहें कि टेहरी डूब रहा है, हम इसमें कहेंगे कि भले ही डूब रहा है, हम नया टेहरी बनायेंगे लेकिन प्रदेश न डूबे । इसमें 317 करोड़ रु0 पूर्व जिले के लिये, 100 करोड़ रु0 बुन्देलखंड के लिये, 75 करोड़ 78 लाख रु0 टेहरी जिले के लिये, 1.4 करोड़ रु0 मध्य यू0 पी0 के लिये, 255 करोड़ रु0 पश्चिमी जिलों के लिये रखा गया है ।

अब इसके अलावा जहां तक बाकी दूसरी योजनाओं का सवाल है मेरा निवेदन है कि जितनी पहाड़ के लिये पूरी योजनायें हैं, उतनी अकेले सारदा सहायक योजना में खर्च होने जा रहा है जो सारे मध्य और पूर्वी प्रदेश के लिये हैं । तो मैं माननीय सदस्यों से यह आग्रह करूंगा कि व ऐसी सद्भावना रखें, जिसको आधार मानकर, जिसको चुनौती मानकर हम यहां पर चुन कर आये हैं, उस सद्भावना से इस बजट को देखें और स्वीकार करें ।

टैक्सों के सम्बन्ध में जो मैंने प्रस्ताव रखे हैं, वे इस प्रकार के हैं, जिससे सामान्य जनता पर कम से कम बोझा पड़े । मुझे पूरा भरोसा है कि अगर इस सदन के सम्मानित सदस्य सहयोग करेंगे इस प्रदेश के किसान, जिसको हम निर्धन कहते हैं, एक-एक रुपया और एक-एक पैसा देने के लिये तैयार हैं ।

श्री भाभी (जिला आजमगढ़)---

जैसे कहा है कि समुद्र में पानी बरसे और रेत बेचारा तरसता रहे, वैसे यह आपका बजट है ।

श्री मोतीलाल देहलवी (जिला कानपुर)---

माननीय मन्त्री जी ने कहा कि इस बजट से साधारण जनता पर असर नहीं पड़ेगा लेकिन मैं आपके माध्यम से श्रीमन्, सूचना दे रहा हूं कि बजट आने के 2 दिन पहले गरीब जनता द्वारा प्रयोग किया जाने वाला एक एक सामान महंगा हो गया और माननीय मन्त्री जी बता रहे हैं कि सामान्य जनता पर इसका कोई असर नहीं पड़ रहा है । मेरी प्रार्थना है कि कभी कभी माननीय मन्त्री जी भी बाजार से सामान खरीदने चले जाया करें, तो उन्हें चीजों के दाम मालूम हो जाया करेंगे ।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)---

पटेल कमीशन की सिफारिशों के बारे में क्या किया गया ?

श्री नारायण दत्त तिवारी---

जहां तक पटेल कमीशन का सम्बन्ध है, वर्तमान बजट तो उससे भी 5 या 10 कदम आगे ही है ।

श्री राम सेवक यादव---

अभी आपने कई इलाकों के लिये रुपये के खर्चे की बात बता दी । अगर उस खर्चे का विवरण अखबारों में जायगा तो बड़ी बदगुमानी होगी, तो आप इसे विस्तृत रूप से धन के हिसाब से बता दें ।

श्री अध्यक्ष---

मैं 15 मिनट के लिये सदन का समय बढ़ाता हूं ।

श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)---

मैं माननीय मन्त्री जी से जानना चाहूंगा कि पटेल कमीशन ने पूर्वी जिलों के विकास के लिये कौन-कौन सी योजनायें बनायी थीं ?

श्री नारायण दत्त तिवारी---

पटेल कमीशन ने तो पहले 4 जिले लिये थे, फिर और फिर 6 बाद में बढ़ाकर 8 कर दिये थे लेकिन यह बजट तो सारे प्रदेश के लिये बना हुआ है । हमने इस बजट में कोई मतभेद नहीं किया है ।

(एक सदस्य के खड़े होकर कुछ कहने पर)

श्री अध्यक्ष—

आपको अपने नेता की बात का पालन करना चाहिये। जैसा कि चौधरी साहब ने कहा था जब कोई वक्ता खड़ा होकर बोलता रहे और अपनी सीट पर न बैठे तो बीच में दूसरे वक्ता को बोलने का अधिकार नहीं है।

श्री नारायण दत्त तिवारी—

मैं यह निवेदन कर रहा था कि आज आवश्यकता क्या है? आवश्यकता यह है कि यह बजट किसी पार्टी का बजट नहीं है, यह प्रदेश का बजट है। सवाल यह है कि क्या आप राजनीति से ऊपर उठकर जो प्रदेश की बुनियादी आवश्यकतायें हैं उनकी पूर्ति के लिये एक होकर हम आप सोच सकेंगे? आज महाराष्ट्र जैसे प्रदेश क्यों आगे बढ़ रहे हैं? इसलिये वे वहां के जन प्रतिनिधियों ने कुछ बातों में एक मत होकर वह आगे बढ़ रहे हैं कि किस प्रकार हम विकास के लिये अपने प्रदेश को आगे बढ़ायें। उत्तर प्रदेश के पिछड़ेपन का यह भी कारण रहा है कि राजनीति ही हमेशा राजनीति ही इस प्रदेश ने सोची है, कभी भी अर्थ-नीति सोची ही नहीं। राजनीति में हमने हमेशा जोर दिया है। उत्तर प्रदेश के विकास की जिम्मेदारी केवल इस दल की नहीं है। जो इधर बैठे हैं उनकी नहीं है। हेमवती नन्दन बहुगुणा की नहीं, है, भले ही वह कितने ही तेजस्वी मुख्यमन्त्री हो। यह दल भले ही बिशाल बहुमत से आया हो, इसकी ही जिम्मेदारी नहीं है। बल्कि जिम्मेदारी होना चाहिये विरोधी दलों के नेताओं की ओर विरोधी दल के सदस्यों की भी है। इसलिए मैं आग्रह करूंगा कि इसे 21वीं सदी के इस मोड़ में आज हम मिल करके सोचें कि हम किन बातों में मिल करके आगे बढ़ सकते हैं। और अगर सोचेंगे तो यह बजट इस सदन के सभी माननीय सदस्यों को माननीय होगा। यह एक कदम मात्र हमारा इस प्रदेश के विकास की पद यात्रा में है। इस कदम को भी हमें आगे उठाना होगा तो हम अनेक कदम उठा सकेंगे। इसलिये इस कदम के उठाने में मैं आशा करता हूं कि आप इस बजट को स्वीकार करेंगे, इन अनुदानों को स्वीकार करें। वरना कहीं ऐसा न हो जैसा कि एक कवि ने कहा कि—

"मेरी हर बात उन्हें आज बुरी लगती है,
कल यही बातें थीं और मैं ही भला लगता था।"

श्री मोतीलाल देहलवी—

"ताज्जुब क्या जो मजलूमों को जोशे इन्तकाम आये।

(व्यवधान)

श्री नारायण दत्त तिवारी—

"यारब बता दूं क्या फर्क मुझ में व तुझ में,
तेरा दर्द, दर्दे तन्हा मेरा गम, गमे जमाना।"

नियम 51 के अन्तर्गत सूचनायें

श्री अध्यक्ष—

नियम 51 के अन्तर्गत माननीय रामसेवक यादव और माननीय बेनी प्रसाद वर्मा ने सूचना दी है—"ग्राम कासिमपुर फरहा थाना नवाबगंज, जिला इलाहाबाद में पड़ी डकैती में पकड़े गये सशस्त्र पुलिस.....इसें मैं वक्तव्य के लिये दे रहा हूं। वक्तव्य के लिये केवल स्वीकार किया है।

एक है माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी तथा माननीय ओम प्रकाश त्रिपाठी का जिसमें किसी की मैलानी थाने में मृत्यु हुई है । इसमें अल्पसूचित प्रश्न कर सकते हैं । वह कर लें ।

बाकी सभी ऐसे ही हैं । अल्पसूचित प्रश्न के विषय हैं ।

एक इसमें ऐसा है जो मेरी समझ में बात नहीं आती । माननीय रणधीर सिंह का है । इससे पता नहीं चलता कि विषय क्या है, क्या मतलब है—"विधान सभा के चुनाव के दौरान बांटे गये 'उत्तर प्रदेश के बढ़ते कदम नामक पत्र' इसका क्या तात्पर्य है । माननीय रणधीर सिंह । वह हैं नहीं ।

अब हम उठते हैं और कल 11 बजे फिर बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन 5 बजकर 5 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया ।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊः
42 जून, 1974 !

विधान सभा

नत्थी 'क'

(देखिये ता0 प्र0 सं0 6 का उत्तर पीछे पृष्ठ 1055 पर)

तालिका

(जिसका जिक्र तारांकित प्रश्न सं0 6 के उत्तर में किया गया है)

तहसील राबर्ट्सगंज, जिला मिर्जापुर के अन्तर्गत सस्ते गल्ले की दुकानें तथा उन्हें दिये गये चीनी/गल्ले की मात्रा

औद्योगिक क्षेत्र

क्रम संख्या	स्थान का नाम	दूकानों की संख्या	दिसम्बर, 1973 से 15 मार्च, 1974 तक दिये गये चीनी/गल्ले की मात्रा (कुन्टल में)			
			चीनी	गेहूं/आटा	चावल	मोटा अनाज
1	2	3	4	5	6	7 8
1	राबर्ट्सगंज ..	6	522	1028	579	232
2	चुर्क ..	4	297	832	648	245
3	घुरमा ..	3	204	507	462	351
4	चोपन ..	3	241	615	325	163
5	डाला फैक्टरी ..	4	292	832	594	232
6	घोरावल ..	1	48	98	78	20
7	ओबरा ..	10	848	2267	1899	1395
8	खैरटिया ..	1	79	231	199	125
	योग ..	32	2531	6410	4784	2863

(2) ग्रामीण क्षेत्र

1	सिरसिया ..	2	25	..	..	101
2	दकोली ..	2	32	..	..	..
3	डोंखरी ..	1	25	..	..	..
4	इनम ..	2	28	..	..	..
5	जमगांव ..	2	15	..	..	..
6	ओबराडीह ..	2	27	..	..	25
7	शाहगंज ..	2	27	..	..	..
8	बिसरेखी ..	2	27	..	..	160
9	मुसहा ..	2	20	..	..	15
10	आमडीह ..	2	25	..	..	..
11	सरंगा ..	2	47	..	..	..
12	पुरवास ..	2	35	..	..	65

1		2	3	4	5	6	7	8
13	तिलौली कलां	..	1	36	..	..	80	
14	लहास	..	3	42	..	..	220	
15	सलखन	..	3	57	..	..	370	
16	बहुआर	..	1	36	..	..	155	
17	चुकँ	..	2	39	..	..	100	
18	बढ़ोली	..	2	51	..	..	265	
19	गयारतवल	..	2	61	..	..	225	
20	सीही कलां	..	1	44	..	..	34	
21	पापी	..	2	33	..	..	60	
22	गुरु परासी	..	2	29	..	..	130	
23	रामपुर	..	3	33	..	..	..	
24	गडाव	..	1	3	..	..	40	
25	आमडीह	..	1	35	..	..	25	
26	बेनी	..	1	30	..	..	..	
27	रामगढ़	..	2	55	..	..	320	
28	बखनीगांवां	..	1	30	..	..	..	
29	शिवपुर	..	2	30	..	..	15	
30	नरोरबर	..	2	36	..	..	..	
31	सिलथम	..	2	66	..	..	125	
32	चतरवार	..	2	59	..	..	180	
33	सेमिया	..	2	32	..	..	40	
34	जुगँल	..	2	46	..	..	120	
35	सिगुँरिया	..	2	38	..	..	235	
36	परवँई	..	2	57	..	..	194	
37	कोमद	..	3	80	..	..	415	
38	रामगढ़	..	3	34	..	..	496	
39	कचनरवा	..	3	40	..	..	357	
40	कोच	..	2	20	..	..	192	
41	खलियारी	..	2	27	..	..	90	
42	नवडीहा	..	1	11	..	..	..	
	योग..		80	1531	..	..	4959	
	योग, औद्योगिक क्षेत्र		32	2531	6410	4784	2863	
	योग, ग्रामीण क्षेत्र ..		80	1531	..	..	4959	
	कुल योग ..		112	4062	6410	4784	7822	

पी० एस० यू० पी०—ए० पी० 82 वि० सभा—(1201)—1974—835।